राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण गुरुवार 06 अगस्त 2026 वर्ष-9,अंक-185 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

7 प्रदर्शनकारी भूख हड़ताल पर

रांची में जंतर-मंतर जैसा धरना

एक ने पानी तक छोड़ा था, वांगचुक की अपील पर पिया, 7 अगस्त को विधानसभा घेरेंगे

रांची (एजेंसी)। झारखंड में भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ियों के खिलाफ जंतर-मंतर जैसा आंदोलन चल रहा है। 7 से ज्यादा प्रदर्शनकारी भूख हड़ताल पर हैं। इनमें छात्र नेता देवेंद्र नाथ महतो ने 2 अगस्त से अन्न-जल छोड़ रखा था। बुधवार को सोनम वांगचुक ने देवेंद्र से वीडियो कॉल पर बात की। उनकी अपील पर देवेंद्र ने पानी पिया, लेकिन कहा कि उनका अनशन जारी रहेगा। छात्रों ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांगें नहीं मानी गईं, तो 7 अगस्त को झारखंड विधानसभा का घेराव करेंगे। ये प्रदर्शन रांची के जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम में 12 दिन से चल रहा है। छात्र जेपीएससी, जेएसएससी-सीजीएल समेत दूसरी भर्ती परीक्षाओं में कथित गड़बड़ियों की सीबीआई जांच, दोषियों पर कार्रवाई और भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता की मांग कर रहे हैं। 2 जुलाई को झारखंड लोक सेवा आयोग ने 14वीं संयुक्त सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा का रिजल्ट जारी किया था। इसमें 2,204 उम्मीदवार मुख्य परीक्षा के लिए चुने गए। इसके बाद 18 से 20 जुलाई के बीच मेंस परीक्षा होनी थी। रिजल्ट आने के बाद कई उम्मीदवारों ने गड़बड़ी के आरोप लगाए। उनका कहना था कि कट-ऑफ जारी नहीं की गई। इसी दौरान सोशल मीडिया पर एक उम्मीदवार की कथित आंसर शीट वायरल हुई। दावा किया गया कि उसने सिर्फ 48 सवाल हल किए, फिर भी वह मेंस के लिए चुन लिया गया। वहीं, रिजल्ट पर आयोग के अधिकारियों के हस्ताक्षर नहीं होने को लेकर भी सवाल उठे। विवाद बढ़ने के बाद सरकार ने मेंस परीक्षा रद्द कर दी।

झारखंड की कई परीक्षाएं विवादों में रही हैं- छात्रों का कहना है कि झारखंड की कई भर्ती परीक्षाएं विवादों में रही हैं। इसलिए वे सिर्फ 14वीं जेएससी परीक्षा नहीं, बल्कि पूरे भर्ती सिस्टम में बदलाव चाहते हैं। उनकी सरकार से तीन मुख्य मांगें हैं।

प्रेशर ग्रुप के तौर पर काम करेगी कॉकरोच जनता पार्टी

झारखंड भी जाएंगे, दीपके ने कह दी बड़ी बात

संभाजी नगर (एजेंसी)। अभिजीत दीपके के घर आज कॉकरेज जनता पार्टी की बड़ी बैठक होने जा रही है। इस बैठक में कॉकरोच जनता पार्टी आगे ने रणनीति तैयार करने जा रहा है। इस बैठक से पहले सीजेपी की फाउंडर अभिजीत दीपके ने मीडिया के सामने आए। उन्होंने इस दौरान मीडिया के सवालों के जवाब दिया। जब उनसे पूछा गया कि क्या वो आने समय में कोई राजनीतिक पार्टी शुरू करंगे तो उन्होंने जवाब दिया कि सीजेपी एक प्रेशर ग्रुप के तौर पर काम करेगा, क्योंकि भारत को अभी एक प्रेशर ग्रुप की ही जरूरत है। जब उनसे पूछा गया कि वो झारखंड में चल रहे छात्रों के प्रदर्शन का समर्थन करने वहां जाएंगे। इस पर अभिजीत दीपके ने कहा कि हम निश्चित रूप से झारखंड जाएंगे। हम वहां विरोध कर रहे छात्रों के साथ खड़े हैं।

राममंदिर में बिना पास के होंगे राम दरबार के दर्शन

आरती में शामिल होने के लिए तत्काल पास शुरू, ट्रस्ट में बदली व्यवस्था

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या राम मंदिर में राम दरबार के दर्शन के लिए अब पास नहीं लगेगा। श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने मंगलवार को पास की व्यवस्था खत्म कर दी। यानी अब राम मंदिर जाने वाला भक्त पूरे राम दरबार समेत पूरे मंदिर के दर्शन कर सकेगा। मंदिर की पहली मंजिल पर राम दरबार बना है। यह पिछले साल जून में बनकर तैयार हुआ था। शुरुआत में ट्रस्ट ने राम दरबार के दर्शन के लिए पास की अनिवार्यता इसलिए की थी कि श्रद्धालुओं की भीड़ को कैसे मैनेज किया जाए इसे समझा जा सके। करीब एक साल के ट्रॉयल के बाद ट्रस्ट ने इसे अब खत्म कर दिया। हालांकि, रामलला के दर्शन

के लिए सुगम पास की व्यवस्था जारी रहेगी। सुगम पास को जारी करने की अथॉरिटी ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्रा के पास थी। चढ़ावा चोरी का मामला सामने आने के बाद अनिल मिश्रा ने इस्तीफा दे दिया था। अब मैनेजमेंट ने 2 से 3 लोगों का ग्रुप बनाया है। यही सुगम पास जारी करेगा।

- **तीनों आरतियों के लिए तत्काल भी पास मिलेंगे-** राम मंदिर के पास व्यवस्था प्रभारी नरेंद्र कुमार ने बताया कि रामलला की दिन में 3 बार आरती होती है। इसके लिए तत्काल पास की सुविधा भी शुरू की है। इन तत्काल पास को मंदिर के पास बिड़ला धर्मशाला सामने बनाए गए यात्री सुविधा केंद्र से हासिल किया जा सकेगा। रामलला की आरती के लिए 45 और राम दरबार की आरती के लिए 15 तत्काल पास की लिमिट रखी गई है। रामलला की मंगला आरती सुबह 4 बजे और श्रृंगार आरती सुबह 6 बजे होती है। इन दोनों आरतियों के तत्काल पास एक दिन पहले जारी किए जाएंगे। रात 9 बजे होने वाली शयन आरती के पास उसी दिन बनाए जाएंगे। उन्होंने बताया कि आरती दर्शन के लिए पहले से ऑनलाइन 100 पास जारी किए जा रहे हैं।
- **नए दैनिक पास बनाना बंद, पुराने 2,743 की हो रही समीक्षा-** अयोध्या में ऐसे तमाम संत और स्थानीय लोग हैं, जो रोजाना रामलला के दर्शन करते हैं। ऐसे लोगों के लिए मंदिर ट्रस्ट ने दैनिक पास की व्यवस्था की है। हालांकि, चढ़ावा चोरी के पास से पास जारी नहीं किए जा रहे हैं।

परिसीमन बिल पर विशेष सत्र बुला सकती है सरकार

किरन रिजिजू ने राहुल और प्रियंका के साथ की बैठक

संसद परिसर में चढ़ावा चोरी पर विपक्ष ने किया प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार परिसीमन पर चर्चा के लिए 16 से 18 अगस्त तक संसद का विशेष सत्र बुला सकती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को संसद में राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के साथ करीब 50 मिनट इस मुद्दे पर बातचीत की। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, रिजिजू ने सदन में बिल पर चर्चा के लिए कांग्रेस से सहयोग मांगा। हालांकि राहुल गांधी ने इसके लिए सीधे मना कर दिया। राहुल पहले चढ़ावा चोरी और लाठीचार्ज के मुद्दे पर चर्चा

और जवाब चाहते हैं। इससे पहले विपक्षी सांसदों ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे समेत विपक्षी सांसदों ने नारेबाजी करते हुए गांधी प्रतिमा से मकर द्वार तक मार्च निकाला। विपक्षी सांसद 20 जुलाई को जंतर-मंतर प्रदर्शन में छात्रों पर लाठीचार्ज और राम मंदिर चढ़ावा चोरी को लेकर सरकार को घेर रहे हैं। उनकी मांग है कि गृह मंत्री अमित शाह संसद में आकर जवाब दें। इसको लेकर विपक्षी सांसद हंगामा कर रहे हैं।

अप्रैल में भी विशेष सत्र बुलाया

सरकार ने 16 से 18 अप्रैल तक भी संसद का तीन दिवसीय विशेष सत्र बुलाया था। इस दौरान परिसीमन संशोधन संविधान बिल, संविधान का 131वां संशोधन बिल और केंद्र शासित प्रदेश कानून (संशोधन) बिल पर चर्चा की गई थी। 18 अप्रैल को संविधान का 131वां संशोधन बिल पर वोटिंग हुई थी लेकिन सरकार बिल लोकसभा में पास नहीं करा पाई थी। इसके बाद सरकार ने बाकी दो बिल भी पेश नहीं किए थे।

अभी नहीं मिलेगा सस्ता लोन ईएमआई तक भी नहीं घटेगी

- **आरबीआई गवर्नर बोले-दुनिया में उथल-पुथल से महंगाई बढ़ी**

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगर आप घर, गाड़ी या पर्सनल जरूरत के लिए सस्ते लोन का इंतजार कर रहे हैं, तो फिलहाल ये उम्मीद पूरी नहीं हो सकेगी। ऐसा इसलिए, क्योंकि आरबीआई ने ब्याज दर को 5.25 फीसदी पर बरकरार रखा है। इसके मायने हैं कि नए लोन की तरह मौजूदा लोन और ईएमआई भी सस्ती नहीं होंगी। आरबीआई की मॉनिटरी पॉलिसी कमेटी की तीन दिन चली बैठक के बाद गवर्नर संजय मल्होत्रा ने आज 5 अगस्त को बताया कि दुनियाभर में जारी उठापटक की वजह से महंगाई बढ़ी है।

इसके चलते फिलहाल ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

- **प्लास्टिक के नोट अप्रैल-मई 2027 में आएंगे-** पॉलीमर यानी प्लास्टिक के नोट अगले साल अप्रैल-मई के बीच लॉन्च होंगे। यह जानकारी आरबीआई की मॉनिटरी पॉलिसी कमेटी की तीन दिन चली बैठक के बाद गवर्नर संजय मल्होत्रा ने बुधवार को दी। उन्होंने बताया कि शुरुआत में कम वैल्यू के पॉलीमर करेंसी नोट जारी किए जाएंगे। इनका मार्केट में सर्कुलेशन और इस्तेमाल सबसे ज्यादा होता है। उन्होंने कहा- दुनिया के कई देशों जैसे ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा में पॉलीमर करेंसी नोट 30 साल से भी अधिक समय तक सफलतापूर्वक उपयोग में रहे हैं।

यूपी में हाहाकार, हाईवे पर बह रही गंगा

- **हिमाचल-उत्तराखंड में लैंडस्लाइड, 300 सड़कें बंद**
- **झारखंड में बारिश-बिजली गिरने से 14 लोगों की मौत**

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के कई राज्यों में लगातार हो रही बारिश अब जानलेवा साबित हो रही है। झारखंड में मंगलवार को बिजली गिरने से 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि 8 लोग घायल हुए हैं। सबसे ज्यादा 9 मौतें गिरिडीह, 3 दुमका और 2 लातेहार जिले में हुईं। यूपी के बिजनौर में गंगा नदी का पानी हाईवे पर बह रहा है। हाईवे की अप्रोच रोड नदी के तेज बहाव में बह गई। सड़क पर 12 फीट गहरा गड्ढा हो गया। वहीं, फर्रुखाबाद में बैरिकेडिंग कर हाईवे को बंद करना पड़ा। मिर्जापुर में 3 लोगों की जान चली गई। दो बच्चों की मौत गड्ढे में डूबने से हुई। एक 25 साल के युवक पर बिजली गिर गई। दूसरी ओर केरलम में 1 अगस्त से लगातार बारिश ने अब तक 25 लोगों की जान ले ली है, जबकि 4 लोग लापता हैं। लगातार बारिश और बाढ़ के कारण हजारों लोगों को घर छोड़ने पड़े हैं। केरलम सरकार के मुताबिक, 18 हजार से ज्यादा लोगों को

राहत शिविरों में रखा गया है। वहीं हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में बारिश और लैंडस्लाइड के कारण 300 से ज्यादा सड़कें बंद हैं।

- **असम में 23 इलाके अब भी बाढ़ से प्रभावित-** असम के शिवसागर जिले के नजीरा सब-डिवीजन में बाढ़ की स्थिति अब ज्यादातर इलाकों में काबू में है। हालांकि, 23 इलाके अब भी प्रभावित हैं। जिला प्रशासन के मुताबिक, सीमावर्ती क्षेत्रों में सबसे ज्यादा तबाही हुई है। नापालिकुटी इलाके में बड़े पैमाने पर जमीन का कटाव हुआ है। जिला प्रशासन ने बताया कि लगातार बारिश और नगालैंड से आए पानी के कारण कई गांव जलमग्न हो गए थे।

हजारों लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। अब राहत और बहाली का काम जारी है। अधिकारियों के मुताबिक, बाढ़ से अब तक 26-27 लोगों की मौत हुई है, जबकि 4-5 लोग अब भी लापता हैं। दिल्ली में बुधवार सुबह न्यूनतम तापमान 26.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

युवाओं की बात सुनना सबसे ताकतवर हथियार

सुप्रीम कोर्ट का मत, भटके युवक पत्थरबाजी करते हैं

सर्वोच्च अदालत बोली-सरकार आक्रामक रवैये से बचे

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रदर्शन में हिंसा को लेकर एक याचिका पर सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि युवाओं की बात सुनना सबसे ताकतवर हथियार है। कोर्ट ने कहा कि प्रदर्शन के दौरान पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों को संयम रखना चाहिए। अगर कुछ भटके हुए युवक पत्थरबाजी भी करें, तब भी उन्हें समझाने और शांत करने की कोशिश करनी चाहिए। सरकार को भी आक्रामक रवैया अपनाने से बचना चाहिए। चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस वी. मोहन की बेंच ने यह टिप्पणी रिटायर्ड एयरफोर्स अफसर मनीष कुमार सोलंकी की याचिका पर सुनवाई के दौरान की।

- **युवाओं को काउंसलिंग मिलनी चाहिए-** चीफ जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि अगर कुछ भटके हुए युवक पत्थरबाजी करते हैं, तब भी उन्हें समझाने और सलाह देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि उन्हें काउंसलिंग मिलनी चाहिए। अगर सरकार आक्रामक रवैया अपनाएगी, तो हालात और बिगड़ सकते हैं और हिंसा बढ़ सकती है। इससे बचना चाहिए। सीजेआई ने कहा कि सबसे जरूरी बात शांतिपूर्ण प्रदर्शन को बढ़ावा देना है। अगर कोई घटना हो भी जाती है, तो पुलिस को बहुत संयम से काम लेना चाहिए, ताकि हालात नियंत्रण से बाहर न जाएं। जहां भी ऐसी घटनाएं हों, वहां बहुत सावधानी से स्थिति संभालनी चाहिए।

पीएम मोदी का वीडियो हटाने पर जुकरबर्ग को अल्टीमेटम, मांगी माफी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक वीडियो फेसबुक से हटाने के मामले में संसदीय समिति ने मेटा प्रमुख मार्क जुकरबर्ग से 3 दिन के भीतर बिना शर्त माफी मांगने को कहा है। अगर ऐसा नहीं हुआ, तो मेटा को भारत में मिलने वाली कानूनी सुरक्षा और कुछ छूट वापस लेने पर विचार किया जा सकता है। इसके बाद

जुकरबर्ग ने माफी मांग ली है। इसी मामले में आईटी मंत्रालय और मेटा के अधिकारियों के बीच दो दिन की बैठक चल रही है। सरकार ने मेटा की ग्लोबल टीम को दिल्ली बुलाया है। 5 अगस्त को बैठक का पहला दिन था। पीएम मोदी ने 23 जुलाई को यह वीडियो पोस्ट किया था। इसमें उन्होंने पेपर लीक को बड़ी समस्या बताया था। उन्होंने ऐसे मामलों की जल्द सुनवाई के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने की भी बात कही थी। यह वीडियो कुछ समय के लिए हटा दिया गया था।

उप चुनाव में हार के बाद ऐक्शन में पीएम मोदी

नीतिश-शिवराज से की मुलाकात, बीजेपी चीफ नितिन नवीन से भी की बड़ी चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के दतिया और बिहार की बांकीपुर विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में बीजेपी कैंडिडेट को करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा है। इसे लेकर पार्टी में माथापच्ची का दौर तेज है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे मामले पर मोर्चा संभाला है। उन्होंने एक ही दिन में बैक टू बैक कई बैठकें कीं। प्रधानमंत्री दोनों ही राज्यों के सीएम से मिले। उन्होंने बिहार के पूर्व सीएम नीतिश कुमार और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से मुलाकात की। यही नहीं उन्होंने बांकीपुर से लगातार पांच बार विधायक रहे और मौजूदा बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन से भी बात की है। प्रधानमंत्री ने ये बैठकें मंगलवार को एनडीए संसदीय दल की मीटिंग के बाद की है। इस दौरान सरकार के प्रतिनिधियों ने पिछली यूपीए सरकार के मुकाबले प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में रोजगार पैदा करने और आर्थिक विकास को मिली बड़ी रफ्तार पर जोर दिया। साथ ही, खेल के क्षेत्र में भारत की बदलाव लाने वाली यात्रा का भी जिक्र किया गया।

नितिन नवीन से की हल्की-फुल्की बात

संसद भवन परिसर स्थित बंद कमरे में हुई इस बैठक के दौरान पीएम मोदी और बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन के बीच हुई हल्की-फुल्की बातचीत ने एनडीए हलकों में चर्चा छेड़ दी। कई सांसदों ने इसे इस तरह देखा कि प्रधानमंत्री, बिहार से राज्यसभा सदस्य नितिन नवीन को सहज महसूस कराने की कोशिश कर रहे थे। यह बातचीत बांकीपुर में बीजेपी की चौंकाने वाली हार के एक दिन बाद हुई। नितिन नवीन ने संसद के लिए चुने जाने के बाद बांकीपुर की सीट खाली कर दी थी। बांकीपुर सीट पर जनसुराज पार्टी के प्रशांत किशोर ने जीत दर्ज की है। यहां बीजेपी की हार इसलिए बड़ा झटका है क्योंकि बांकीपुर लगातार कई टर्म से बीजेपी का अजेय दुर्ग बना हुआ था।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

विधानसभा उपचुनाव की तीन सीटों ने दिया राजनीतिक संदेश

(लेखक- सौरभ वार्ष्णेय)

भारतीय लोकतंत्र में उपचुनावों को अक्सर केवल रिक्त सीटों को भरने की प्रक्रिया मान लिया जाता है, लेकिन वास्तविकता इससे कहीं अधिक व्यापक होती है। कई बार एक उपचुनाव आने वाले बड़े राजनीतिक परिवर्तनों की आहट बन जाता है। बिहार की बांकीपुर, मध्य प्रदेश की दतिया और गुजरात की मांजलपुर विधानसभा सीटों पर आए हालिया नतीजों ने भी यही संकेत दिया है। इन तीन सीटों में बांकीपुर से जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर की जीत, दतिया में कांग्रेस की सफलता और मांजलपुर में भाजपा की जीत ने भारतीय राजनीति को नए विमर्श दिए हैं। परिणामों ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि मतदाता अब केवल परंपरागत राजनीतिक समीकरणों से संतुष्ट नहीं है, बल्कि स्थानीय नेतृत्व, विश्वसनीयता और वैकल्पिक राजनीति को भी गंभीरता से परख रहा है।

इन चुनावों में सबसे अधिक चर्चा बिहार की बांकीपुर सीट की रही, जहां चुनावी रणनीतिकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर ने अपनी पहली विधानसभा जीत दर्ज की। यह केवल एक उम्मीदवार की जीत नहीं बल्कि उस वैकल्पिक राजनीति की पहली बड़ी सफलता है, जिसकी बात वे पिछले कई वर्षों से कर रहे थे। बांकीपुर लंबे समय से भाजपा का मजबूत गढ़ माना जाता रहा है। ऐसे क्षेत्र में जन सुराज जैसे अपेक्षाकृत नए दल का जीतना यह दर्शाता है कि यदि संगठन मजबूत हो, उम्मीदवार की व्यक्तिगत साख हो और जनता परिवर्तन के लिए तैयार हो तो स्थापित राजनीतिक दलों को भी चुनौती दी जा सकती है। रिपोर्टों के अनुसार भाजपा को अपने इस गढ़ में अप्रत्याशित हार का सामना करना पड़ा।

प्रशांत किशोर की राजनीति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन्होंने वर्षों तक विभिन्न दलों के लिए चुनावी रणनीति बनाई, लेकिन जब स्वयं राजनीति में उतरे तो उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन, शिक्षा, रोजगार और प्रशासनिक सुधार को अपनी राजनीति का आधार बनाया। आलोचक भले ही इसे आदर्शवादी राजनीति कहें, लेकिन बांकीपुर की जनता ने यह संदेश दिया कि यदि कोई नेता लगातार जनता के बीच रहे और विश्वसनीयता बनाए रखे तो उसके लिए राजनीतिक जमीन तैयार हो सकती है।बिहार की राजनीति के संदर्भ में यह परिणाम इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि राज्य में लंबे समय से एनडीए और महागठबंधन के बीच ही सीधा मुकाबला देखने को मिलता रहा है। जन सुराज की सफलता ने इस द्विध्रुवीय राजनीति में तीसरे विकल्प की संभावनाओं को मजबूत किया है। इससे भविष्य में दोनों बड़े गठबंधनों को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है।

दूसरी ओर मध्य प्रदेश की दतिया सीट पर कांग्रेस की जीत ने यह साबित किया कि भाजपा के मजबूत संगठन के बावजूद विपक्ष पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में मध्य प्रदेश की राजनीति में भाजपा का प्रभाव लगातार मजबूत दिखाई देता रहा है, लेकिन दतिया के मतदाताओं ने सत्ता पक्ष को यह संदेश दिया कि स्थानीय मुद्दों की अनदेखी का राजनीतिक मूल्य चुकाना पड़ सकता है। कांग्रेस के लिए यह जीत केवल एक सीट की सफलता नहीं है बल्कि कार्यकर्ताओं के मनोबल को बढ़ाने वाली उपलब्धि भी है। पिछले कुछ वर्षों में लगातार चुनावी चुनौतियों का सामना कर रही कांग्रेस को ऐसे परिणाम संगठन को पुनर्जीवित करने का अवसर देते हैं। यदि पार्टी स्थानीय नेतृत्व को मजबूत करने और जनता के मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाने में सफल रहती है तो वह आगामी चुनावों में बेहतर प्रदर्शन कर सकती है।हालांकि कांग्रेस को आत्ममुग्ध होने की आवश्यकता नहीं है। एक उपचुनाव की सफलता को व्यापक जनादेश मान लेना राजनीतिक भूल होगी। पार्टी को यह समझना होगा कि मतदाता केवल विरोध के आधार पर समर्थन नहीं देता, बल्कि सकारात्मक विकल्प भी चाहता है।गुजरात की मांजलपुर सीट पर भाजपा की जीत ने यह दिखाया कि पार्टी अभी भी अपने पारंपरिक मजबूत क्षेत्रों में संगठनात्मक बढ़त बनाए हुए है। यद्यपि भाजपा दो सीटें हार गई, लेकिन मांजलपुर को बचाकर उसने यह संदेश देने का प्रयास किया कि उसका जनाधार पूरी तरह कमजोर नहीं हुआ है। भाजपा नेतृत्व ने भी परिणाम स्वीकार करते हुए बांकीपुर और दतिया में आत्ममंथन की बात कही है। इन तीनों परिणामों को यदि एक साथ देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि भारतीय मतदाता अब एक समान राजनीतिक व्यवहार नहीं कर रहा। बिहार में उसने नए विकल्प को मौका दिया, मध्य प्रदेश में विपक्ष को समर्थन दिया और गुजरात में सत्ता पक्ष पर भरोसा बनाए रखा। यह भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रमाण है।इन परिणामों से भाजपा के सामने कई चुनौतियाँ भी उभरती हैं। पिछले एक दशक में भाजपा ने मजबूत संगठन, प्रभावी चुनावी प्रबंधन और लोकप्रिय नेतृत्व के बल पर लगातार चुनावी सफलताएँ प्राप्त की हैं। लेकिन उपचुनावों ने संकेत दिया है कि केवल संगठन पर्याप्त नहीं है। स्थानीय असंतोष, उम्मीदवार चयन और क्षेत्रीय मुद्दों पर संवेदनशीलता भी उतनी ही आवश्यक है।विशेष रूप से बिहार में भाजपा के लिए यह परिणाम आगामी राजनीतिक समीकरणों को प्रभावित कर सकता है। यदि प्रशांत किशोर अपनी इस सफलता को व्यापक जन आंदोलन में बदलने में सफल होते हैं तो राज्य की राजनीति त्रिकोणीय हो सकती है। इससे पारंपरिक गठबंधनों की चुनावी गणित बदल सकती है।वहीं विपक्ष के लिए भी यह परिणाम कई सीख लेकर आए हैं। विपक्ष लंबे समय से भाजपा की चुनावी मशीनरी का मुकाबला करने की रणनीति खोज रहा है। इन उपचुनावों ने यह बताया कि यदि स्थानीय नेतृत्व मजबूत हो, संगठन सक्रिय रहे और जनता के वास्तविक मुद्दों को केंद्र में रखा जाए तो सत्ता पक्ष को चुनौती दी जा सकती है। एक अन्य महत्वपूर्ण संदेश यह है कि मतदाता अब राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दों में स्पष्ट अंतर करता है। लोकसभा चुनाव में जिस दल को समर्थन मिलता है, वही दल विधानसभा या उपचुनाव में भी विजयी होगा—यह धारणा अब कमजोर पड़ती दिखाई दे रही है। मतदाता प्रत्येक चुनाव में अलग-अलग आधारों पर निर्णय ले रहा है।प्रशांत किशोर की जीत ने चुनावी रणनीति और वास्तविक जननेतृत्व के बीच की बहस को भी नया आयाम दिया है। अब तक उन्हें एक सफल चुनावी सलाहकार के रूप में देखा जाता था, लेकिन विधायक बनने के बाद उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती अपने वादों को व्यवहार में बदलने की होगी। जनता अब उनसे केवल आलोचना नहीं बल्कि समाधान की अपेक्षा करेगी।यदि वे विधानसभा में प्रभावी भूमिका निभाते हैं, जनहित के मुद्दे उठाते हैं और संगठन का विस्तार करते हैं तो जन सुराज बिहार की राजनीति में स्थायी स्थान बना सकता है। लेकिन यदि यह सफलता केवल व्यक्तिगत लोकप्रियता तक सीमित रह गई तो इसका प्रभाव सीमित भी हो सकता है।कांग्रेस के लिए दतिया की जीत संगठनात्मक पुनर्निर्माण का अवसर है। पार्टी यदि इसे केवल राजनीतिक प्रचार तक सीमित रखती है तो इसका लाभ अल्पकालिक होगा। लेकिन यदि वह स्थानीय नेतृत्व को सशक्त बनाकर जनता के बीच निरंतर सक्रिय रहती है तो यह सफलता आगे भी दोहराई जा सकती है।भाजपा के लिए भी यह समय आत्ममंथन का है। पार्टी को यह समझना होगा कि लगातार चुनावी सफलताओं के बावजूद स्थानीय स्तर पर असंतोष पनप सकता है। उम्मीदवार चयन, कार्यकर्ताओं की भागीदारी और स्थानीय विकास के मुद्दों पर गंभीरता आवश्यक है।लोकतंत्र का सबसे बड़ा सौंदर्य यही है कि मतदाता समय-समय पर राजनीतिक दलों को संदेश देता रहता है। उपचुनावों के परिणाम भी उसी संदेश का हिस्सा हैं। जनता किसी दल को स्थायी समर्थन या स्थायी अस्वीकृति नहीं देती। उसका निर्णय प्रदर्शन, विश्वास और अपेक्षाओं पर आधारित होता है।

इन परिणामों का राष्ट्रीय राजनीति पर भी मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ेगा। भाजपा को संगठनात्मक मजबूती के साथ स्थानीय रणनीति सुधारनी होगी। कांग्रेस को यह विश्वास मिलेगा कि वह अभी भी मुकाबले में है। वहीं प्रशांत किशोर जैसे नए राजनीतिक प्रयोगों को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। इन तीन उपचुनावों का सबसे बड़ा निष्कर्ष यही है कि भारतीय लोकतंत्र में मतदाता अब पहले से कहीं अधिक जागरूक, स्वतंत्र और विवेकपूर्ण निर्णय लेने वाला बन चुका है। वह किसी भी दल को केवल उसके अतीत के आधार पर वोट नहीं देता, बल्कि वर्तमान प्रदर्शन और भविष्य की संभावनाओं को भी परखता है।बांकीपुर ने परिवर्तन की संभावना दिखाई, दतिया ने विपक्ष की प्रासंगिकता को रेखांकित किया और मांजलपुर ने सत्ता पक्ष की संगठनात्मक शक्ति को बनाए रखा। तीन सीटों के ये परिणाम भले ही सरकारें न बदलें, लेकिन उन्होंने राजनीतिक दलों को यह स्पष्ट संदेश अवश्य दिया है कि लोकतंत्र में कोई भी विजय स्थायी नहीं होती और कोई भी हार अंतिम नहीं होती। जो दल जनता की अपेक्षाओं को समझेगा, स्थानीय मुद्दों पर संवेदनशील रहेगा और विश्वसनीय नेतृत्व प्रस्तुत करेगा, भविष्य उसी का होगा।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।)

संपादकीय

जन्म-मृत्यु पंजीकरण

यह जरूरी है कि देश में जन्म व मृत्यु से जुड़े आंकड़े प्रामाणिक हों और समय रहते दर्ज कर लिए जाएं। इससे जनसंख्या गणना, मतदाता की विश्वसनीयता और अंतत- विकास योजनाओं के लिये विश्वसनीय आंकड़े जुटा पाना संभव होता है। वहीं दूसरी ओर अवैध घुसपैठियों और विदेशी नागरिकों की पहचान भी संभव हो पाती है। जो कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक महत्वपूर्ण प्रश्न भी है। इसी आलोक में संसद द्वारा हाल ही में 'जन्म और मृत्यु पंजीकरण(संशोधन) विधेयक' को पारित करना, देश की नागरिक पंजीकरण प्रणाली को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। दरअसल, यह संशोधन सुनिश्चित करता है कि जन्म व मृत्यु का पंजीकरण समय रहते कर लिया जाए। यह कानून देर से होने वाले पंजीकरण के लिए सख्त नियम लागू करता है। नये संशोधन के तहत, जन्म व मृत्यु के दो साल बाद रिपोर्ट किए गए मामलों में मौजूदा कार्यकारी मंजूरी की जगह अब प्रथम श्रेणी के न्यायिक मजिस्ट्रेट के आदेश की आवश्यकता होगी। निस्संदेह, फर्जी पंजीकरण को रोकने की दिशा में सरकार का उद्देश्य सराहनीय है, लेकिन यह संशोधन लोगों की पहुंच और समावेशिता के बाबत कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है। निस्संदेह, आज देश ने सिविल रजिस्ट्रेशन यानी जन्म-मृत्यु पंजीकरण के मामलों में बहुत अच्छी प्रगति की है। आज देश में 99 फीसदी से अधिक जन्म और मृत्यु का रिकॉर्ड रखा जाता है। दरअसल, देश में बड़ी चुनौती सिर्फ रजिस्ट्रेशन की ही नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने की है कि जन्म व मृत्यु होने पर 21 दिन के भीतर सूचना दर्ज कर ली जाए। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि प्रक्रियागत बाधाएं बढ़ाने की बजाय, समय पर रिपोर्टिंग करने को सहज व सरल बनाया जाए। लोगों को इस बाबत जागरूक करने की भी जरूरत है। साथ ही मौजूदा नियमों को सख्ती से लागू करने से अधिक नीतिगत मामलों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। सरकार का दावा है कि न्यायिक जांच से पंजीकरण में होने वाली गड़बड़ियों पर रोक लगायी जा सकेगी। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि वर्ष 2023 संशोधनों के तहत कई सरकारी सेवाओं के लिये जन्म प्रमाण पत्र पहचान का मुख्य दस्तावेज बन गया है। हालांकि, इस बाबत दो साल की समय-सीमा चुनने के पीछे की वजह को तार्किक आधार पर नहीं बताया गया है। वहीं कई ऐसे वाजिब कारण हैं जिसके चलते पंजीकरण देर से होता है। उदाहरण के लिये लें तो दूरदराज के इलाकों में जन्म, पलायन और जागरूकता की कमी के कारण भी जन्म-मृत्यु के पंजीकरण में विलंब होता है। लेकिन अब नये कानून से प्रभावित परिवारों के लिये खर्च और देरी, दोनों ही बढ़ सकते हैं। यह विडंबना ही है कि यह बिल संसद के दोनों सदनों में जारी लगातार हंगामे के बीच पास हुआ। जिसकी वजह से इस महत्वपूर्ण बिल पर कोई सार्थक बहस नहीं हो सकी। वास्तव में होना तो यह चाहिए था कि हर नागरिक की कानूनी पहचान को प्रभावित करने वाले कानून की गहनता से पड़ताल की जाती। जिसमें सत्ता पक्ष और विपक्ष को बराबर की जिम्मेदारी निभानी चाहिए थी। निस्संदेह, कुशल प्रशासन में कल्याणकारी योजनाओं तक पहुंचने और चुनावी ईमानदारी के लिये एक मजबूत व पारदर्शी नागरिक पंजीकरण प्रणाली अपरिहार्य ही है। वास्तव में इस संशोधन की प्रभावशीलता को सिर्फ धोखाधड़ी रोकने की क्षमता से नहीं देखा जाना चाहिए। सावधानी इस बात को लेकर भी की जानी चाहिए कि कोई भी वास्तविक नागरिक कानूनी पहचान से वंचित न रह जाए। दूसरे शब्दों में कहें तो सुरक्षा उपाय नागरिकों की पहुंच में बाधा नहीं बनने चाहिए।

दुनिया में परचम लहराने वाली बेटियां देश का गौरव हैं

(लेखक- मनोज कुमार अग्रवाल)

यह देश और नारी शक्ति के लिए गौरव की बात है कि ग्लासगो में आयोजित राष्ट्रमंडल खेलों में भारत ने कुल 13 स्वर्ण पदक जीते, जिनमें से 8 स्वर्ण पदक देश की बेटियों ने अपने नाम किए। मीराबाई चानू, अस्मिता डे, शर्मिला धनखड़ और महिला मुक्केबाजों के शानदार प्रदर्शन ने यह साबित कर दिया कि अंतरराष्ट्रीय खेल मंचों पर अब भारतीय नारी शक्ति का दबदबा है।स्वर्ण पदक जीतने वाली प्रमुख महिला खिलाड़ीमीराबाई चानू- वेटलिफ्टिंग की 48 किग्रा वर्ग में स्वर्ण जीतकर राष्ट्रमंडल खेलों में लगातार तीन बार गोल्ड हासिल करने वाली पहली भारतीय वेटलिफ्टर बनीं।अस्मिता डे- जूडो के 48 किग्रा वर्ग में ऐतिहासिक स्वर्ण पदक देश की झोली में डाला।शर्मिला धनखड़- पैरा एथलेटिक्स (शॉट पुट F57) में स्वर्ण पदक जीतकर नया इतिहास रचा।मुक्केबाज प्रीति पवार, जैस्मीन लांबोरिया, साक्षी चौधरी, प्रिया घंघास और अरुंधती चौधरी: रिंग में बेहतरीन दांव-पेच दिखाते हुए मुक्केबाजी के विभिन्न भार वर्गों में पांच स्वर्ण पदक अपने नाम किए।अन्य उल्लेखनीय प्रदर्शन लवलीना बोरगोहीन: 75 किग्रा मुक्केबाजी वर्ग में रजत पदक जीता।हरजिंदर कौर और ज्ञानेश्वरी यादव: वेटलिफ्टिंग में रजत पदक हासिल किए।यामिनी मौर्या: जूडो स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया।

राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन हर भारतीय को गर्वित करने वाला तो है ही, यह भविष्य के लिए बहुत सारी उम्मीदें भी देता है।

आपको बता दें कि पदक तालिका में चौथे स्थान पर भारत उस स्थिति में खड़ा है, जब भारतीय खिलाड़ियों के दबदबे वाले कई खेल इस बार के आयोजन में शामिल ही नहीं किए गए थे। बावजूद इसके भारतीय खिलाड़ियों ने ग्लासगो में तिरंगे को बार-बार शिखर पर पहुंचाया और 140 करोड़ से अधिक देशवासियों को गौरवान्वित किया। भारत ने इन खेलों में कुल 39 पदक (13 स्वर्ण, 17 रजत और 9 कांस्य पदक) जीते।

हमारे खिलाड़ियों ने मुक्केबाजी, भारोत्तोलन और जूडो में शानदार प्रदर्शन किया है, बल्कि पहली बार बॉक्सिंग में सात स्वर्ण पदक जीते हैं। सबसे अहम बात यह है कि बेटियों ने स्वर्ण पदकों की झड़ी लगा दी। मीरा बाई चानू से जो शुरुआत हुई, तो फिर इस कतार में शर्मिला, अस्मिता, प्रीति पवार, साक्षी चौधरी, प्रिया धंधास, अरुंधति चौधरी, जैस्मिन जैसे नाम जुड़ते चले गए। अब ये सिर्फ नाम नहीं हैं, देश की हजारों-लाखों बेटियों की प्रेरणा-स्रोत हैं। इनमें से एकाधिक लड़कियां तो बेहद साधारण पृष्ठभूमि से आई हैं। उनका सबसे ऊंचे पोडियम पर खड़ा होना खास गौरवशाली है। वे न सिर्फ अपने जैसी अनगिनत प्रतिभाओं को प्रेरित करेंगी, बल्कि हमारे खेल से जुड़े कर्ता-धर्ताओं को और उत्साहित करेंगी कि वे ग्रामीण क्षेत्रों पर भी ध्यान दें। अब जरा गौर कीजिए एक ओर जंतर-मंतर के प्रदर्शन में शामिल भद्दी अश्लील गाली देने वाली रीलबाज लड़कियाँ देश और दुनिया में जगहंसाइ व निंदा का पात्र बन गयीं हैं और दूसरी ओर ये बेटियां हैं जिन्होंने वर्षों की कठोर प्रशिक्षण और अभ्यास के बूते पर दुनिया में देश का नाम रोशन किया है ये स्वयं व इनके परिवार दशकों तक देश भर में सम्मान और गौरव का अनुभव करेंगे। सिर्फ एक सही राह और परवरिश कितना बड़ा अन्तर पैदा कर सकती है इसे शिद्दत से समूचा देश और खासकर अभिभावकों को महसूस करना चाहिए। इसमें कोई दोराय नहीं कि बीते कुछ वर्षों में देश में खेल-संस्कृति का तेजी से विकास हुआ है। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दिलचस्पी और खेलो इंडिया जैसे कार्यक्रमों का इसमें अहम योगदान है। इस क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश भी बढ़ा है और बड़े पैमाने पर युवा अब इसे करियर के तौर पर अपनाने लगे हैं। हालांकि, इस संस्कृति के निर्माण में क्रिकेट का सबसे बड़ा योगदान है। आईपीएल की शुरुआत ने देश के छोटे-छोटे शहरों को कई सितारे दिए, और उन पर पैसों की बरसात ने समाज की पूरी मनोदशा बदल दी। परिवार अवरोधक के बजाय सहायक की भूमिका में आने लगे। सबसे बड़ा बदलाव तो लड़कियों के मामले में आया हैं। पहले बेटियों के लिए खेल-क्षेत्र में बहुत बाधाएं थीं, मगर अब वे भी सपने देख रही हैं और उनको साकार कर रही हैं। कॉमनवेल्थ गेम्स की पदक तालिका उनकी प्रतिभा और जिजीविषा की कहानी खुद कह रही है। इस बड़े बदलाव का एक पहलू यह भी है कि अब भी हिंदी हृदयस्थल के सूबों से एथलेटिक्स में उतने खिलाड़ी उभरकर सामने नहीं आ रहे, जितने हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, केरल, महाराष्ट्र, असम और मणिपुर जैसे प्रदेशों से निकल रहे हैं और यह बात इन राज्य-सरकारों को चुनौती के रूप में लेनी चाहिए। ऐसा नहीं कि इन राज्यों के पास प्रतिभाएं नहीं हैं। झारखंड ने क्रिकेट से इतर हॉकी, तीरंदाजी आदि खेल विधाओं में कई राष्ट्रीय सितारे दिए हैं। राज्य अगर खेल-संस्कृति को प्रोत्साहन दे, तो वहां से कई नए नाम देश को मिल सकते हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश को खेलों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसी कॉमनवेल्थ गेम्स में पैरा शॉटपुट में, बिहार के सोमन राणा का स्वर्ण पदक इस बात का सुबूत है कि अगर सही तलाश की जाए, तो इन दोनों सूबों के पास ऐसे युवाओं की कोई कमी नहीं, जो वैश्विक खेल प्रतिस्पर्द्धाओं में देश-प्रदेश का नाम ऊंचा कर सकें। अगले राष्ट्रमंडल खेलअहमदाबाद में होने वाले हैं। आठ स्वर्ण पदकों ने न केवल भारत के अभियान को नई ऊंचाई दी, बल्कि यह भी साबित कर दिया कि भारतीय महिला खिलाड़ी अब केवल उभरती प्रतिभाएं नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंच पर लगातार स्वर्ण जीतने वाली चैंपियन बन चुकी हैं। भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी ऊषा ने महिला खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर गर्व जताते हुए एक अधिकारिक बयान में कहा, 'भारत के 13 स्वर्ण पदकों में से आठ महिलाओं के नाम होना बेहद गर्व की बात है। इन उपलब्धियों के पीछे खिलाड़ियों, उनके परिवारों, कोचों और सहयोगी स्टाफ का वर्षों का समर्पण है। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) के अनुसार, ग्लासगो में मिली सफलता भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण की व्यापक तस्वीर भी पेश करती है।

शिक्षा, उद्यमिता, शासन और खेल सहित हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों का सकारात्मक असर अब खेल मैदानों पर भी साफ दिखाई दे रहा है। लड़कियों को खेलों से जोड़ने वाली योजनाएं, बेहतर प्रशिक्षण सुविधाएं, खिलाड़ियों के लिए मजबूत सहायता तंत्र और महिला खिलाड़ियों को बढ़ता सम्मान इस बदलाव की मजबूत नींव बने हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रति देश की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। वहीं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी लगातार महिला खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते रहे हैं और उन्हें विश्व स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

मन की शक्ति

मन को जीवन का केंद्रबिंदु कहना असंभव नहीं है। मनुष्य की क्रियाओं, आचरणों का प्रारंभ मन से ही होता है। मन तरह-तरह के संकल्प, कल्पनाएं करता है। जिस ओर उसका रुझान हो जाता है उसी ओर मनुष्य की सारी गतिविधियां चल पड़ती है। जैसी कल्पना हो उसी के अनुरूप प्रयास-पुरुषार्थ एवं उसी के अनुसार फल सामने आने लगते हैं। मन जिधर रस लेने लगे उसमें लौकिक लाभ या हानि का बहुत महत्व नहीं रह जाता। प्रिय लगने वाले के लिए सब कुछ खो देने और बड़े से बड़े कष्ट सहने को भी मनुष्य सहज ही तैयार हो जाता है। मन यदि अच्छी दिशा में मुड़ जाए; आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास में रुचि लेने लगे तो जीवन में एक चमत्कार हो सकता है। सामान्य श्रेणी का मनुष्य भी महापुरुषों की श्रेणी में आसानी से पहुंच सकता है। सारी कठिनाई मन को अनुपयुक्त दिशा से उपयुक्त दिशा में मोड़ने की ही है। इस समस्या के हल होने पर मनुष्य सच्चे अर्थ में मनुष्य बनता हुआ देवत्व के लक्ष्य तक सुविधापूर्वक पहुंच सकता है। शरीर के प्रति कर्तव्य पालन करने की तरह मन के प्रति भी हमें अपने उत्तरदायित्वों को पूर्ण करना चाहिए। कुविचारों और दुर्भावनाओं से मन गंदा, मलिन और पतित होता है, अपनी सभी विशेषता और श्रेष्ठताओं को खो देता है। इस स्थिति से सतर्क रहने और बचने की आवश्यकता का अनुभव करना हमारा पवित्र कर्तव्य है। मन को सही दिशा देते रहने के लिए स्वाध्याय की वैसी ही आवश्यकता है जैसे शरीर को भोजन देने की। आत्मनिर्माण करने वाली जीवन की समस्याओं को सही ढंग से सुलझाने वाली उत्कृष्ट विचारधारा की पुस्तकें पूरे ध्यान, मनन और चिंतन के साथ पढ़ते रहना ही स्वाध्याय है। यदि सुलझे हुए विचारों के जीवन विद्या के ज्ञाता कोई संभ्रांत सज्जन उपलब्ध हो सकते हों तो उनका सत्संग भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। मन का स्वभाव बालक जैसा होता है, उमंग से भरकर वह कुछ न कुछ करना-बोलना चाहता है। यदि दिशा न दी जाए तो उसकी क्रियाशीलता तोड़-फोड़ एवं गाली-गलौज के रूप में भी सामने आ सकती है।

मन में जब सद्विचार भरे रहेंगे तो कुविचार भी कोई दूसरा रास्ता टटोलेंगे। रोटी और पानी जिस प्रकार शरीर की सुरक्षा और परिपुष्टि के लिए आवश्यक हैं उसी प्रकार आत्मिक स्थिरता और प्रगति के लिए सद्विचारों, सद्भावों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध होनी ही चाहिए। युग निर्माण के लिए, आत्म निर्माण के लिए वह प्रधान साधन है। संकल्प की, मन की शुद्धि के लिए इसे ही दवा माना गया है।

विचार मंथन

चढ़ावा चोरी पर हंगामा, केंद्र एवं उत्तर प्रदेश सरकार निशाने पर

(लेखक- सनत जैन)

अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा और दान चोरी के मामले में संसद और उत्तर प्रदेश विधानसभा के परिसर में विपक्षी दल और समाजवादी पार्टी के सांसदों और विधायकों द्वारा लगातार हंगामा किया जा रहा है। यह हंगामा सदन के अंदर और सदन के बाहर भी हो रहा है। विपक्षी दल इस पर चर्चा करने की मांग पर अड़े हुए हैं। वहीं सरकार इस मामले में चर्चा करने के लिए तैयार नहीं है, जिसके कारण हंगामा और गतिरोध प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। इस कारण अब संसद के दोनों सदन लोकसभा और राज्यसभा के साथ ही उत्तर प्रदेश विधानसभा की कार्यवाही भी प्रभावित हो रही है। सदन में कामकाज नहीं हो पा रहा है। मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। इस मामले में अब आसंदी भी निष्पक्ष नहीं रही, वह भी निशाने पर आ गई है। संसदीय परंपराओं में यह एक ऐसी घटना है जिससे संसदीय कार्यवाही में आसंदी को लेकर जो पक्ष और विपक्ष के बीच में विश्वास होता था सदन का अध्यक्ष पक्ष और विपक्ष को जोड़ने का काम करता था, दोनों पक्षों पर विवाद होने की स्थिति में दोनों पक्षों को समझा- बुझाकर संसद और विधानसभा में गतिरोध खत्म करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। अब यह भूमिका भी समाप्त होती हुई नजर आ रही है।

सदन के अध्यक्ष का निर्वाचन बहुमत के आधार पर होता है। निश्चित रूप से बहुमत सत्ताधारी पार्टी के पास होता है। यदि अध्यक्ष सत्ताधारी दल के लाभ-हानि को ध्यान में रखते हुए निर्णय करने लगेगा तो संसदीय परंपराओं को चला पाना संभव नहीं होगा। हाल ही में उत्तर प्रदेश में मानसून सत्र शुरू हुआ। कुछ महीने बाद उत्तर प्रदेश में विधानसभा के चुनाव होने हैं। निश्चित रूप से अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा और दान चोरी के मामले में भाजपा बचाव की मुद्रा में है। वहीं प्रमुख विपक्षी दल समाजवादी पार्टी आक्रामक मुद्रा में है। जितना यह मामला तूल पकड़ेगा उतना ही फायदा विपक्ष और नुकसान सत्तारूढ़ पार्टी को होगा। उत्तर प्रदेश विधानसभा में जिस तरह का प्रदर्शन हुआ है। विधानसभा के अध्यक्ष ने जिस तरह से विधायकों से चंदा देने के प्रमाण पेश करने को कहा। मुख्यमंत्री के खिलाफ सपा विधायक पोस्टर लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। विधायक सदन के अंदर नारेबाजी कर रहे थे तब विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने विधायक सचिन यादव को सदन से बाहर करते हुए संपूर्ण सत्र के लिए सदन से निष्कासित कर दिया। राम मंदिर चढ़ावा चोरी का मामला यहीं तक सीमित नहीं है। भारतीय जनता पार्टी 80 और 20 के चुनावी समीकरण को लेकर पिछले तीन दशक से राजनीति कर रही है।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी का मामला भाजपा और संघ के लिए भारी पड़ रहा है। राम की आस्थाओं के साथ खिलवाड़ के रूप में देखा जा रहा है।

राम की आड़ में लूट की जा रही है। इस तरह का नेरेटिव विपक्ष बना रहा है। हाल ही में जंतर मंतर में कॉकरोच जनता पार्टी के बाद जिस तरह से जेन-जी और जेन-अल्फा मुखर हुए हैं, आंदोलन में हिंदू और मुस्लिम ध्रुवीकरण को लेकर जो राजनीति की जा रही थी वह अब चंदा और चढ़ावा चोरी के कारण धार्मिक ध्रुवीकरण, रामराज और सनातन को लेकर जो राजनीति अभी तक हो रही थी, उसको सबसे बड़ा झटका लगा है। भाजपा की चिंता है इस मामले को जल्द से जल्द ठंडा किया जाए, लेकिन यह मामला ठंडा होने के स्थान पर दिन-प्रतिदिन और गरमाता चला जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी और संघ इस मामले को जितना दबाने का प्रयास कर रही हैं, उतनी ही तेजी के साथ यह आगे बढ़ रहा है। कुल मिलाकर यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच में अब यह अस्तित्व की लड़ाई है। जो भी पक्ष इसमें ढीला पड़ेगा, उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। भाजपा और संघ की आपदा विपक्ष के लिए एक अवसर बनकर सामने है और इसका लाभ विपक्षी दल उठाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रहे हैं। आगे क्या होगा यह भगवान राम ही जाने।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सोने और चांदी की कीमतों में जोरदार उछाल

नई दिल्ली ।

घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में बुधवार को सोने और चांदी की कीमतों में एक बार फिर जोरदार तेजी दर्ज की गई है। निवेशकों के बढ़ते भरोसे और कुछ महत्वपूर्ण वैश्विक आर्थिक संकेतों ने इन कीमती धातुओं को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। विशेष रूप से, चांदी लगातार तीसरे कारोबारी दिन बढ़त बनाए रखने में सफल रही है, जो बाजार में उसकी मजबूत मांग को दर्शाता है।राजधानी नई दिल्ली के सराफा बाजार में बुधवार को सोने की कीमतें 1,42,900 प्रति 10 ग्राम के महत्वपूर्ण स्तर पर बनी हुई हैं, जो बाजार में मजबूत धारणा को दर्शाती हैं। हालांकि, मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोना इस स्तर पर स्थिर कारोबार कर रहा है, लेकिन यह पिछले सत्रों की तेजी और कुल मिलाकर सकारात्मक रुझान को दर्शाता है। वहीं, चांदी ने अपनी चमक और बढ़ाई है, और अब यह 2,23,654 प्रति किलोग्राम के आंकड़े को पार कर गई है। चांदी की यह लगातार तीसरी दैनिक बढ़त बाजार में उसकी मजबूत मांग और निवेशकों की दिलचस्पी को उजागर करती है।अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी कीमती धातुओं ने शानदार प्रदर्शन किया है। सोने की कीमत 0.82 प्रतिशत उछलकर डॉलर 4,186 प्रति औंस पर पहुंच गई है, जबकि चांदी ने और भी तेज रफ्तार पकड़ी है। चांदी 1.30 प्रतिशत से अधिक की बढ़त के साथ 61.03 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रही है। वैश्विक स्तर पर इन धातुओं की बढ़ती कीमतें घरेलू बाजारों पर भी सीधा असर डाल रही हैं, जिससे भारतीय निवेशकों को भी लाभ मिल रहा है।इस तेजी के पीछे कई आर्थिक कारक जिम्मेदार माने जा रहे हैं। प्रमुख रूप से, कच्चे तेल की कीमतों में हालिया गिरावट ने निवेशकों के बीच महंगाई बढ़ने की चिंताओं को कुछ हद तक कम किया है। महंगाई कम होने की उम्मीद से सोने जैसी सुरक्षित मानी जाने वाली संपत्ति की मांग बढ़ती है, क्योंकि यह पारंपरिक रूप से मुद्रास्फीति के खिलाफ बचाव के रूप में देखा जाता है। इसके अतिरिक्त, निवेशकों को अब यह उम्मीद है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में ब्याज दरों में बढ़ोतरी की संभावना कम हो सकती है। ब्याज दरों में कम बढ़ोतरी का मतलब है कि गैर-लाभकारी संपत्ति होने के बावजूद सोने में निवेश अधिक आकर्षक हो जाता है, क्योंकि इसकी अवसर लागत कम हो जाती है।

बाजार की निगाहें अब अमेरिकी फेडरल रिजर्व के आगामी फैसलों पर टिकी हैं। फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति से जुड़ी घोषणाएं और ब्याज दरों पर उसका रुख आने वाले समय में सोने की कीमतों की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जब तक ब्याज दरों को लेकर स्पष्टता नहीं आती, तब तक बाजार में कुछ अस्थिरता बनी रह सकती है, लेकिन मौजूदा संकेत सोने और चांदी के लिए सकारात्मक बने हुए हैं, जिससे आने वाले समय में भी इनकी कीमतों में और मजबूती देखने को मिल सकती है। निवेशक इस समय सतर्कता के साथ निवेश के अवसरों पर नजर बनाए हुए हैं।

कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली ।

अमेरिका और ईरान के बीच बातचीत की संभावना के बाद कच्चे तेल की कीमतें गिरी हैं। बुधवार को ब्रेंट क्रूड और अमेरिकी डब्ल्यूटीआई क्रूड दोनों ही सबसे निचले स्तर पर आ गए। ब्रेंट क्रूड करीब 5 फीसदी फिसलकर 80 डॉलर प्रति बैरल से नीचे आ गया। जबकि अमेरिकी क्रूड भी 5 फीसदी से ज्यादा गिरकर 75 डॉलर प्रति बैरल के आसपास आ गया। दोनों बेंचमार्क 13 जुलाई के बाद अपने सबसे निचले स्तर पर कामकाज करते दिखे। अभी ब्रेंट करीब 78.31 डॉलर और डब्ल्यूटीआई 74.42 डॉलर प्रति बैरल के आसपास कारोबार कर रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि ईरान और ओमान के साथ बातचीत में अच्छी प्रगति हुई है। उम्मीद है कि जल्द ही होर्मुज जलडमरूमध्य से जहाजों की आवाजाही फिर शुरू हो सकती है। अमेरिकी ट्रेजरी सेक्रेटरी स्कॉट बेसेंट ने भी कहा कि एक-दो दिनों में इस संबंध में समझौता हो सकता है।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 152 अंक , निफ्टी 9 अंक उछला

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार बुधवार को दिन भर उतार-चढ़ाव के बाद तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के तीसरे कारोबार दिन दुनिया भर से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच ही खरीददारी से बाजार ऊपर आया। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) के फैसले से पहले निवेशकों की खरीदारी के साथ ही अमेरिका और ईरान के बीच शीर्ष समझौते की उम्मीद से भी बाजार ऊपर आया है

दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 152 अंक की बढ़त के साथ ही 78,581.00 अंकों के स्तर पर बंद हुआ जबकि 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी 9 अंक उछलकर 24,624.65 अंकों के स्तर पर बंद हुआ।आज मिडकैप शेयरों में भी पूरे दिन उतार-चढ़ाव रहा। निफ्टी मिडकैप बाजार बंद होने तक 2 अंकों की बढ़त के साथ ही 18,218.45 अंक पर बंद हुआ।आज श्रीराम फाइनेंस, ग्रेसिम, हिंडाल्का, जुबिलेंट फूड और बॉश के के अलावा पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस के शेयरों में तेजी रही जबकि अपोलो अस्पताल, एचसीएल टेक और टीसीएस कल्याण ज्वेलर्स,

मैरिको आदि के शेयर गिरे। इससे पहले आज सुबह बाजार तेजी के साथ खुला। सुबह कारोबार के दौरान सेंसेक्स 490.67 अंक की बढ़त के साथ ही 78,919.62 पर कारोबार करता दिखा जबकि निफ्टी तकरीबन 29.60 अंक बढ़कर 24,643.90 के स्तर पर पहुंच गया। निफ्टी50 इंडेक्स में इंटरग्लोब एविएशन, लार्सन एंड टुब्रो और श्रीराम फाइनेंस के शेयरों में सबसे ज्यादा तेजी रही।

एनएसई बंद भाव का असर म्युचुअल फंड योजनाओं के शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य पर पड़ा

नई दिल्ली,। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर सोमवार को बंद भाव में विसंगति का असर म्युचुअल फंड योजनाओं के शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य पर भी पड़ा। इससे दिन में लेनदेन करने वाले निवेशकों को अलग-अलग नतीजे मिले, जिन निवेशकों ने दोपहर 3 बजे की कट-ऑफ से पहले लार्जकैप शेयरों पर केंद्रित योजनाओं में निवेश किया उन्हें ज्यादा भुगतान करना पड़ा लेकिन कट-ऑफ से पहले रिडेम्पशन ऑर्डर देने वालों को बढ़े हुए एनएवी का फायदा मिला। म्युचुअल फंड के एनएवी की गणना सबसे ज्यादा खरीद-फरोख्त वाले स्टॉक एक्सचेंज पर संबंधित शेयरों के बंद भाव का इस्तेमाल करते हुए की जाती है। अधिकतर मामलों में स्टॉक एक्सचेंज एनएसई होता है। इसलिए उन चुनिंदा शेयरों में आखिरी समय में आई तेजी की वजह से एनएवी बढ़ गए जो नए क्लोजिंग प्राइस सेशन ढांचे में चले गए हैं। अगर 3.15 बजे के स्तर पर तुलना की जाए तो निफ्टी 50 में कारोबार बंद होने तक 0.82 फीसदी की और बढ़त हुई। लार्जकैप और फ्लेक्सी कैप फंडों के लिए व्यापक तौर पर ट्रैक किए गए बेंचमार्क निफ्टी 100 में 0.76 फीसदी और निफ्टी 500 में 0.59 फीसदी की बढ़त हुई। निफ्टी मिडकैप 150 में 0.36 फीसदी की बढ़त दर्ज की गई लेकिन निफ्टी स्मॉलकैप 250 मोटे तौर पर अपरिवर्तित रहा क्योंकि इसके अधिकांश घटक क्लोजिंग ऑक्शन फ्रेमवर्क का हिस्सा नहीं हैं जो फिलहाल केवल वायदा एवं विकल्प अनुबंध वाले शेयरों को कवर करता है।

रीट और इनविट में निवेश करने वालों के लाभांश पर कोई कर नहीं लगेगा

एसपीवी पर अधिभार बढ़ाकर होने वाले नुकसान की भरपाई का प्रस्ताव पेश

नई दिल्ली,।

रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (रीट) और इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) में निवेश करने वालों के लाभांश पर पहले की तरह कोई कर नहीं लगेगा, भले ही उनसे जुड़ी विशेष उद्देश्यीय इकाई (एसपीवी) नई कर व्यवस्था को अपना लें। सरकार ऐसे एसपीवी पर अधिभार बढ़ाकर इससे होने वाले राजस्व के नुकसान की भरपाई करने का प्रस्ताव पेश किया है। कर विशेषज्ञों के मुताबिक वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने लोकसभा में पेश किए गए कराधान और अन्य कानून (संशोधन) विधेयक, 2026 के तहत इन एसपीवी के लिए प्रभावी कॉरपोरेट कर की दर करीब 25.2 फीसदी से बढ़कर 28.6 फीसदी हो जाएगी। विधेयक के प्रस्ताव के तहत रियायती कॉरपोरेट कर व्यवस्था चुनने वाली एसपीवी पर अधिभार 10 फीसदी से बढ़कर 25 फीसदी हो जाएगा, साथ ही उन यूनिट धारकों को लाभांश कर से छूट मिलेगा जिनकी एसपीवी नई व्यवस्था में चली गई है। हालांकि नई कर व्यवस्था में जाने के बाद भी एसपीवी को एकत्र न्यूनतम वैकल्पिक कर क्रेडिट को आगे ले जाने और इस्तेमाल करने की अनुमति होगी, जैसा कि दूसरी कंपनियों के मामले में होता है।

2,000 रुपए से ऊपर का लेन-देन किया तो लग सकता है मर्चेन्ट शुल्क?

केंद्र सरकार मुफ्त यूपीआई भुगतान प्रणाली में कर सकती है नीतिगत बदलाव

नई दिल्ली,।

भारत की मुफ्त यूपीआई भुगतान प्रणाली में अब बड़ा नीतिगत बदलाव हो सकता है। केंद्र सरकार ने संसद में पेमेंट एंड सेटलमेंट सिस्टम एक्ट में संशोधन के लिए प्रस्ताव पेश किया है, जिससे भविष्य में चुनिंदा यूपीआई लेनदेन पर मर्चेंट शुल्क लगाने का रास्ता साफ हो सकता है।वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने पेश किए इस संशोधन के तहत फिलहाल कोई तत्काल शुल्क लागू नहीं किया गया है, बल्कि एक कानूनी ढांचा तैयार किया जा रहा है। 2000 रुपए से ज्यादा के यूपीआई लेनदेन पर 0.3 फीसदी से 0.5 फीसदी तक का मर्चेंट डिस्काउंट रेट लगाया जा सकता है। राहत की बात यह है कि इस शुल्क का बोझ आम उपभोक्ताओं पर पड़ने की संभावना नहीं है। यह शुल्क केवल उन व्यापारियों पर लागू होगा जिनका सालाना टर्नओवर 1.5 करोड़ रुपए से ज्यादा है। इसका मतलब है कि आपके पास की छोटी दुकानों और छोटे कारोबारियों के लिए यूपीआई लेनदेन पहले की तरह ही मुफ्त रहेगा।विशेषज्ञों का मानना है कि बिना किसी शुल्क के यूपीआई सेवाएं देना लंबे समय के लिए टिकाऊ नहीं है। मर्चेंट शुल्क न होने के कारण कंपनियों के लिए नई तकनीक में निवेश करना और बुनियादी ढांचे को मजबूत करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। आंकड़ों के मुताबिक जुलाई के महीने में यूपीआई के जरिए 29.9 ट्रिलियन रुपए मूल्य के 23.6 बिलियन लेनदेन हुआ। हालांकि 2000 रुपए से ज्यादा के लेनदेन कुल संख्या का केवल 4 फीसदी हैं, लेकिन कुल मूल्य में इनकी हिस्सेदारी 67 फीसदी है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस सेगमेंट पर शुल्क लगाने से डिजिटल भुगतान उद्योग को सालाना 5,000 करोड़ से 10,000 करोड़ रुपये तक का राजस्व मिलने की उम्मीद है।सरकार ने साफ किया है कि यह अभी केवल एक कानूनी प्रावधान है। जब तक इस पर अंतिम फैसला नहीं हो जाता, तब तक यूपीआई भुगतान मौजूदा व्यवस्था के तहत पूरी तरह मुफ्त बना रहेगा। सरकार अभी इस बात पर विचार कर रही है कि शुल्क की दर क्या हो और इसे किन लेनदेन पर लागू किया जाए।

त्योहारों पर नहीं होगी तेल की कमी, रिफाइनरियों के पास है पाम व सोयाबीन का स्टॉक

जुलाई में भारत का कुल खाद्य तेल आयात 34फीसदी बढ़कर 14.9 लाख टन पहुंचा

नई दिल्ली,।

आगामी त्योहारी सीजन में भारत में खाने के तेल की कोई किल्लत नहीं होगी। देश की तेल रिफाइनरियों ने त्योहारी मांग को पूरा करने के लिए पहले से कमर कस रखी है और पाम व सोयाबीन तेल का बंपर स्टॉक रखा है। जुलाई में भारत का कुल खाद्य तेल आयात 34फीसदी बढ़कर 14.9 लाख टन पहुंच गया है। यह खाने के तेल के आयात का पिछले 10 महीनों का सबसे उच्चतम स्तर है।डीलरों के मुताबिक भारतीय रिफाइनरियों ने पिछले कुछ महीनों से विदेशों से खाद्य तेलों की खरीद में भारी बढ़ोतरी की है। जुलाई में पाम ऑयल का आयात जून के मुकाबले 50फीसदी बढ़कर 7.33 लाख मीट्रिक टन पर पहुंच गया, जो पिछले पांच महीनों का सबसे ऊंचे स्तर पर है।इसी तरह सोयाबीन तेल का आयात भी 32फीसदी की जोरदार बढ़त के साथ 5.01 लाख टन हो गया। यह पिछले साल महीनों में सबसे ज्यादा आयात है। सूरजमुखी तेल की आवक भी बढ़ी है और इसका इंपोर्ट जुलाई में 4फीसदी बढ़कर 2.53 लाख टन हो गया है।

मुंबई स्थित वनस्पति तेल ब्रोकरेज फर्म सनविन ग्रुप के सीईओ का कहना है कि पिछले कुछ महीनों में आयात कम होने की वजह से घरेलू बाजार में खाद्य तेल का स्टॉक घट गया था।घरेलू स्तर पर सरसों और सोयाबीन की क्रशिंग भी कम हो रही थी। अगस्त से नवंबर में भारत में त्योहारों के चलते खाद्य तेलों की खपत अपने चरम पर होती है।

इसी वजह से रिफाइनर्स ने विदेशों से एडिबल बॉयल की सप्लाई बढ़ा दी है।गुजरात के जीजीएन रिसर्च के मैनेजिंग पार्टनर का कहना है कि अगस्त और सितंबर महीनों में भी सोयाबीन तेल का आयात हर महीने पांच लाख मीट्रिक टन से ज्यादा रहने का अनुमान है।

रुपया बढ़त पर बंद

मुंबई ।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया बुधवार को 95.10 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस रुपया 95.19 पर बंद हुआ। आज सुबह शुरुआती कारोबार में रुपया 70 पैसे की मजबूती के साथ 94.89 के स्तर पर खुला। आरबीआई (आरबीआई) की मौद्रिक नीति समिति की बैठक और सकारात्मक वैश्विक संकेतों से पहले रुपये में सुधार दर्ज किया गयावहीं विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि कच्चे तेल की अपेक्षाकृत कम कीमतों और अमेरिकी डॉलर के कमजोर होने से आयातकों की डॉलर की मांग पर असर पड़ा।

सड़क हादसे रोकने नए दोपहिया और चारपहिया वाहनों में वी2वी सिस्टम होगा अनिवार्य

नई दिल्ली।

अक्टूबर 2028 से बनने वाले नए वाहनों में वाहन-से-वाहन (वी2वी) संचार प्रणाली अनिवार्य तौर पर लगानी पड़ सकती है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना में बताया कि इस साल की शुरुआत में घोषित सड़क सुरक्षा प्रौद्योगिकी को चरणबद्ध तरीके से लागू करने कदम उठाया जा रहा है। 1 अक्टूबर 2028 या उसके बाद बनने वाले दोपहिया, तिपहिया, चारपहिया यात्री और ढुलाई वाहनों को एआईएस-230 के अनुरूप वी2वी संचार प्रणाली से लैस करना जरुरी होगा। मसौदा दिशा-निर्देश में यह भी कहा गया है कि अक्टूबर 2027 से अगर वाहनों में वी2वी संचार प्रणाली फिट की जाती है तो उसे समय-समय पर संशोधित एआईएस-230 का अनुपालन करना होगा। इससे संकेत मिलता है कि 2028 तक बनने वाले नए वाहनों के लिए वी2वी प्रणालियों का अनुपालन वैकल्पिक रहेगा।वी2वी एवं अन्य इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम (आईटीएस) ऐ प्लिकेशन के लिए 5.875 गीगाहर्ट्ज से 5.925 गीगाहर्ट्ज आवृत्ति बैंड पर विचार किया गया है। दूरसंचार विभाग ने जून में इस आवृत्ति बैंड के उपयोग को लाइसेंसिंग आवश्यकताओं से छूट दी थी। मंत्रालय के मुताबिक वी2वी संचार प्रणाली आसपास के वाहनों को उनकी गति, स्थिति, दिशा, एक्सेलेरेशन आदि तमाम जानकारियों को वास्तविक समय पर आदान-प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यह जानकारी ड्राइवरों या वाहन प्रणालियों को सुरक्षा के लिहाज से अहम स्थितियों में पूर्व

चेतावनी प्रदान कर सकती है। इसमें अचानक ब्रेक लगाना, आगे टक्कर का जोखिम, असुरक्षित लेन बदलना और आपातकालीन वाहनों का आगमन शामिल है।मंत्रालय ने कहा कि पारंपरिक वाहन सुरक्षा प्रणालियां मुख्य तौर पर ऑनबोर्ड सेंसर और ड्राइवर की प्रतिक्रिया पर निर्भर करती हैं। मगर वी2वी संचार प्रणाली सीधे तौर पर न दिखने वाली जानकारियां भी प्रदान कर सकती है। ऐसे में इससे उन्नत ड्राइवर सहायता प्रणाली को पूरक बनाने और संभावित दुर्घटना से निपटने, कनेक्टेड मोबिलिटी और भविष्य के इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्ट ऐ प्लिकेशन को मदद मिलने की उम्मीद है।

सरकार ने हितधारकों को प्रस्तावित नियमों पर राय देने के लिए अगस्त के अंतिम सप्ताह तक का समय दिया है।

जियो ब्लैकरॉक पहला ईटीएफ लॉन्च, इस फंड में कोई लॉक इन पीरियड नहीं

-निवेशकों को देश की 50 प्रमुख लिस्टेड कंपनियों में निवेश का मिलेगा मौका

नई दिल्ली,।

जियो ब्लैकरॉक एसेट मैनेजमेंट कंपनी ने अपना पहला एक्सचेंज ट्रेडड फंड (ईटीएफ) लॉन्च किया है। इस नए फंड का नाम जियोब्लैकरॉक निफ्टी 50 ईटीएफ है। यह एक ओपन-एंडेड इक्विटी फंड है। यह ईटीएफ निफ्टी 50 इंडेक्स को ट्रैक करेगा, जिससे निवेशकों को एक ही निवेश के जरिए देश की 50 प्रमुख लिस्टेड कंपनियों में निवेश का मौका मिलेगा। इस स्कीम का न्यू फंड ऑफर 4 अगस्त से खुल गया है, निवेशक इसमें 11 अगस्त तक निवेश कर सकेगा। यूनिट आवंटन के बाद यह स्कीम पांच कारोबारी दिनों के भीतर दोबारा निवेश के लिए खुलेगी। इस फंड में निवेशक न्यूनतम 500 रुपए से और उसके बाद 1 रुपए के मल्टीपल में निवेश शुरू कर सकते हैं। इस फंड में कोई लॉक इन पीरियड नहीं है और न ही किसी तरह की एग्जिट लोड फीस है यानी निवेशक जब चाहें तब इस फंड की यूनिट्स बेच सकते हैं। तन्वी कचेरिया, आनंद शाह और हरेश मेहता इस स्कीम के फंड मैनेजर्स हैं। इस फंड का बेंचमार्क निफ्टी 50 टीआरआई है। फंड हाउस के मुताबिक 30 मार्च 2026 तक भारत के मार्केट कैपिटलाइजेशन का करीब 53.73 फीसदी हिस्सा रखने वाला निफ्टी 50 इंडेक्स लंबे समय से भारत के इक्विटी मार्केट के लिए एक प्रमुख बेंचमार्क रहा है और यह निवेशकों को देश की लॉन्ग-टर्म आर्थिक और कॉर्पोरेट ग्रोथ में व्यापक भागीदारी का मौका देता है।

जियोब्लैकरॉक एसेट मैनेजमेंट के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने कहा कि इस ईटीएफ का मकसद निवेशकों को देश की टॉप 50 कंपनियों में आसानी से निवेश का मौका देना है, ताकि वे इन कंपनियों की लंबी अवधि की ग्रोथ का लाभ उठा सकें। यह स्कीम निफ्टी 50 इंडेक्स को ट्रैक करेगी, जिससे निवेशकों को एक ही फंड में डायवर्सिफिकेशन, पारदर्शिता और आसान निवेश का फायदा मिलेगा। कंपनी के मुताबिक जियो की मजबूत डिजिटल पहुंच और भारतीय ग्राहकों की समझ को ब्लैकरॉक की वैश्विक निवेश विशेषज्ञता और ईटीएफ प्रबंधन क्षमता के साथ जोड़कर निवेशकों के लिए टेक्नोलॉजी बेस्ड इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजी उपलब्ध कराए जाएंगे।फंड हाउस के मुताबिक निवेश का लक्ष्य हासिल करने के लिए यह स्कीम पैसिव इन्वेस्टमेंट स्ट्रैटेजी पर चलेगी यानी कि फंड मैनेजर बेंचमार्क इंडेक्स की ही नकल करेंगे। फंड मैनेजर निफ्टी-50 इंडेक्स में शामिल कंपनियों में ही आपका पैसा लगाएगा। इंडेक्स में शामिल कंपनियों के वेटेज यानी भार के हिसाब से ही उस शेयर में निवेश किया जाएगा। फंड का मसकद अपने बेचमार्क इंडेक्स के प्रदर्शन को दोहराना है। हालांकि इसमें ट्रैकिंक एरर की भी आशंका है। जियो ब्लैकरॉक एसेट मैनेजमेंट कंपनी के मुताबिक जो निवेशक एक्सचेंज ट्रेडड फंड के जरिए निफ्टी 50 इंडेक्स में निवेश करना चाहते हैं उनके लिए यह स्कीम एक विकल्प हो सकती है।

नायका कंपनी का मुनाफा 3.3 गुना बढ़कर 79.76 करोड़ रुपए पहुंचा, रेवेन्यू 29फीसदी बढ़ा

कंपनी ने 12 तिमाहियों में अच्छा प्रदर्शन किया, अपने प्लेटफॉर्म पर कई नए ब्रांड जोड़े

नई दिल्ली।

ब्यूटी और फैशन ई-कॉमर्स कंपनी नायका की पैरेंट कंपनी एफएसएन ई-कॉमर्स वेंचर्स लिमिटेड ने वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही में बेहतर प्रदर्शन किया है। कंपनी का मुनाफा सालाना आधार पर 3.3 गुना बढ़कर 79.76 करोड़ रुपए पहुंच गया है। पिछले साल की इसी तिमाही में कंपनी का मुनाफा 24.47 करोड़ रुपए था। वहीं, वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही के मुकाबले कंपनी के मुनाफे में 1.2 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। कंपनी की आय में भी अच्छी बढ़त देखने को मिली है। अप्रैल-जून 2026 तिमाही में नायका का ऑपरेशंस से रेवेन्यू 29 फीसदी बढ़कर 2,782 करोड़ हो गया, जबकि पिछले साल की इसी तिमाही में यह आंकड़ा 2,154.9 करोड़ रुपए था। वित्त वर्ष 2026 की चौथी तिमाही में कंपनी का रेवेन्यू 2,648.1 करोड़ रहा था।नायका के खर्चों में सालाना आधार पर बढ़ोतरी हुई है। कंपनी का कुल खर्च वित्त वर्ष 2027 की पहली तिमाही में 25.5 फीसदी बढ़कर 2,662.15 करोड़ रुपए हो गया। हालांकि, इसके बावजूद कंपनी की कमाई क्षमता में सुधार देखने को मिला है। कंपनी का ईबीआईटीडीए यानी ब्याज, टैक्स, डेप्रिसिएशन और अमोर्टाइजेशन से पहले की कमाई 68 फीसदी बढ़कर 236 करोड़ रुपए हो गई। इसके साथ ही ईबीआईटीडीए मार्जिन बढ़कर 8.5 फीसदी पर पहुंच गया। नायका की फाउंडर, एग्जीक्यूटिव चेयरपर्सन और सीईओ फाल्गुनी नायर ने कहा कि इस तिमाही में कंपनी की ग्रोथ और ईबीआईटीडीए मार्जिन ने पिछले 12 तिमाहियों में सबसे अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने बताया कि कंपनी ने अपने प्लेटफॉर्म पर कई नए ब्रांड जोड़े हैं।

कंपनी के ब्यूटी कारोबार का ग्रॉस मर्चेंडाइज वैल्यू सालाना आधार पर 28 फीसदी बढ़कर 4,105 करोड़ रुपए हो गया। कंपनी के मुताबिक, यह बढ़ोतरी ई-कॉमर्स, रिटेल स्टोर्स, ईबी2बी डिस्ट्रीब्यूशन और हाउस ऑफ नायका ब्यूटी पोर्टफोलियो में बेहतर प्रदर्शन की वजह से हुई है। नायका का क्विक कॉमर्स प्लेटफॉर्म नायका नॉऊ तेजी से अपना दायरा बढ़ा रहा है। फिलहाल यह सेवा 13 शहरों में उपलब्ध है और कंपनी की योजना वित्त वर्ष 2027 के अंत तक इसे 25 से ज्यादा शहरों तक पहुंचाने की है।

दूसरी ओर, नायका के फैशन कारोबार में भी अच्छी बढ़त दर्ज की गई है। इस सेगमेंट का जीएमवी 53 फीसदी बढ़कर 1,471 करोड़ रुपए हो गया।

इलेक्ट्रिक बसों-ट्रकों के स्थानीयकरण नियम लागू करने की समय-सीमा बढ़ाई जाए

सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स ने भारी उद्योग मंत्रालय से किया अनुरोध

नई दिल्ली,।

सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सायम) ने भारी उद्योग मंत्रालय से अनुरोध किया है कि पीएम ई-ड्राइव योजना के तहत इलेक्ट्रिक बसों और ट्रकों के लिए स्थानीयकरण के नियम लागू करने की समय-सीमा बढ़ाई जाए। उसने यह मियाद 1 अप्रैल 2027 करने का आग्रह किया है। अभी यह समय-सीमा 1 सितंबर 2026 तय की गई थी। सायम का कहना है कि चीन ने रेयर अर्थ मैग्नेट के निर्यात पर प्रतिबंध लगा है जिससे इन मैग्नेट की आपूर्ति में बाधा आ रही है। ये मैग्नेट इलेक्ट्रिक बसों और ट्रकों की ट्रैक्शन मोटर बनाने के लिए बहुत जरूरी है।रिपोर्ट के मुताबिक सायम ने 22 जुलाई को मंत्रालय को भेजे अपने पत्र में यह मांग की थी। पीएम ई-ड्राइव योजना के चरणबद्ध विनिर्माण कार्यक्रम के तहत इलेक्ट्रिक बस और ट्रक निर्माता कंपनियों को ट्रैक्शन मोटर के अहम घटकों का निर्माण भारत में करना जरुरी है। सरकार पहले इन नियमों को 1 सितंबर 2025 से लागू करना चाहती थी लेकिन उद्योग की मांग पर इसे दो बार पहले ही टाला जा चुका है। अब सायम का कहना है कि चीन ने डिस्प्रोसियम और टर्बियम जैसे भारी रेयर अर्थ तत्वों और परमानेंट मैग्नेट के निर्यात पर नियंत्रण लगा दिया है। इससे पूरी दुनिया में इन मैग्नेट की आपूर्ति अस्त-व्यस्त हुई है। यह मैग्नेट इलेक्ट्रिक बसों और ट्रकों में इस्तेमाल होने वाली ट्रैक्शन मोटर के लिए अहम है।उद्योग संगठन ने कहा कि हालांकि कुछ कंपनियों को निर्यात की अनुमति मिली है, लेकिन हर खेप के लिए सरकार की मंजूरी लेनी पड़ती है। इससे सामान मिलने में काफी समय लग रहा है और आपूर्ति अनिश्चित बनी हुई है। सायम ने यह भी कहा कि पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव के कारण माल ढुलाई में ज्यादा समय लग रहा है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारतीय टीम के अभ्यास मैच पर बारिश का साया

-खिलाड़ियों की फिटनेस को लेकर भी चिन्ताएं बढ़ीं

कोलंबो (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए श्रीलंका पहुंच गयी है। इस सीरीज के लिए दोनो ही टीमों की तैयारी पूरी है। भारतीय टीम को यहां सीरीज शुरु होने से पहले एक अभ्यास मैच भी खेलना है जिसपर बारिश का साया मंडरा रहा है। इसके अलावा प्रमुख खिलाड़ियों की फिटनेस को लेकर भी भारतीय टीम परेशान है। भारतीय टीम को 7 अगस्त से कोलंबो में तीन दिवसीय अभ्यास मैच भी खेलना है पर मौसम विभाग ने इस दौरान भारी बारिश की संभावना जताई है। मौसम विभाग के अनुसार, 7 से 9 अगस्त तक कोलंबो में भारी बारिश होने आ अनुमान है, जिसमें पहले दिन ही 91 फीसदी बारिश हो सकती है। इसके बाद भी बाकि दिन बादल छाए रहेंगे। यहां भारतीय टीम के पहुंचते ही उसे बारिश का सामना करना पड़ा जिससे ऐसे में आगे भी अभ्यास सत्र पूरी तरह से बाधित होने की आशंका है।

भारतीय टीम दो मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला 15 से 19 अगस्त तक गाले इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेलेगी। इसके बाद दोनो ही टीमें दूसरे टेस्ट के लिए कोलंबो रवाना होंगी, जो 23 से 27 अगस्त तक सिंहलीज स्पोर्ट्स क्लब में आयोजित होगा।

सीरीज शुरू होने से पहले ही भारतीय टीम खिलाड़ियों की की फिटनेस से परेशान है। इससे भी टीम प्रबंधन की चिंताएं बढ़ गयी हैं। मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पहले ही सीरीज से बाहर हो गये हैं।उनकी जगह आकिब नबी को टीम में शामिल किया है। बुमराह के अलावा हर्षित राणा हैमस्ट्रिंग की चोट, नितीश कुमार रेड्डी क्वाड्रिसेप्स की चोट के कारण बाहर हैं। ऑलराउंडर वॉशिंगटन सुंदर भी हैमस्ट्रिंग की समस्या के कारण पहले टेस्ट से बाहर हो गए हैं, जबकि तेज गेंदबाज आकाश दीप भी पीठ में खिंचाव के कारण इस सीरीज से बाहर हैं। इन चोटों ने टीम की बेंच स्ट्रेंथ और संयोजन पर सीधा प्रभाव पड़ा है।

डब्ल्यू डब्ल्यू ई पहलवान लेसनर ने पेशेवर कुश्ती को अलविदा कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। वॉशिंगटन (ईएमएस)। 10 बार के डब्ल्यू डब्ल्यू ई चैंपियन अमेरिकी रेसलर ब्रॉक लेसनर ने पेशेवर कुश्ती से संन्यास की घोषणा कर दी है। द बीस्ट इनकार्नेट के नाम से लोकप्रिय 49 साल के लेसनर ने द पैट मैकफी शो में कहा कि अब उनका सफर समाप्त पूरा हुआ। इसी के साथ ही खेल जगत में इस रेसलर का दो दशक लंबा करियर समाप्त हो गया है। लेसनर ने सोशल मीडिया में कहा, मैं आज दुनिया को यह बताने आया हूं कि मैंने संन्यास ले लिया है। उन्होंने बताया कि पिछले सप्ताहांत उनके लिए एक भावनात्मक दिन था, जब वह मिनियापोलिस में एक अंतिम हेल इन ए सेल मुकाबले में उतरे। इस मैच के साथ ही उन्होंने अपने पेशेवर कुश्ती करियर पर विराम लगाने का अंतिम फैसला कर लिया।लेसनर का करियर काफी अच्छा रहा है। उन्होंने केवल डब्ल्यू डब्ल्यू ई ही नहीं बल्कि यूएफफसी में भी हैवीवेट चैंपियन बनकर मिश्रित मार्शल आर्ट्स की दुनिया में अपनी धाक जमाई थी। अपनी ताकत, आक्रामकता और प्रतिभा से वह खेल के सबसे बड़े आकर्षणों में से एक बने। लेसनर ने अपने करियर के दौरान कई डब्ल्यू डब्ल्यू ई कुश्ती मुकाबलों में छाये रहे। उन्होंने जॉन सीना, द अंडरटेकर, रोमन रेंस, कर्ट एंगल और ट्रिपल एच जैसे दिग्गजों को भी हराया।

लेसनर ने कहा कि इस साल की शुरुआत में रेसलमेनिया में जब उन्हें ओमोसने पटका था, तब उन्हें लगा था कि उनका करियर समाप्त हो गया है। उन्होंने उस क्षण को याद करते हुए कहा, जब ओमोस ने मुझे रेसलमेनिया में पटका, तो मैंने कहा, 'मैं अब और नहीं कर सकता। मुझे लगता है कि मेरा करियर खत्म हो गया है।'लेकिन, जैसा कि उन्होंने बताया, खेल जगत ने उन्हें फिर से बुलाया और उनमें अभी भी कुछ ऊर्जा बाकी थी, जिसने उन्हें पिछले सप्ताहांत मिनियापोलिस में एक और हेल इन ए सेल मुकाबला लड़ने के लिए प्रेरित किया। यह उनका अंतिम प्रदर्शन साबित हुआ। उन्होंने स्पष्ट किया कि शनिवार को हुई उनकी अंतिम उपस्थिति के साथ, उनके लिए रिंग में और बाकी सब कुछ खत्म हो जाएगा। लेसनर की इस घोषणा के साथ, पेशेवर खेल इतिहास के सबसे अनोखे और सफल करियर में से एक का अंत हो गया है।

इंग्लैंड का कोच बनना चाहते हैं स्टोक्स, खेल में वापसी से इंकार किया

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान बेन स्टोक्स का कहना है कि वह भविष्य में टीम का मुख्य कोच बनना चाहते हैं। स्टोक्स ने हाल ही में खेल से संन्यास लिया था। जिसके बाद से ही ये उनका पहला बयान आया है। इसमें स्टोक्स ने साफ कर दिया है कि वह वापसी नहीं करेंगे। इससे पहले ये अटकलें लगायीं जा रहीं थीं कि एशेज सीरीज में वह संन्यास से वापसी कर सकते हैं पर अब ऐसी संभी संभावनाओं पर विराम लग गया है। उन्होंने कहा कि मेरा संन्यास का फैसला स्थायी है। अपने लंबे समय के लक्ष्यों और संन्यास के बाद की योजनाओं को लेकर स्टोक्स ने कहा कि वह इंग्लैंड का कोच बनकर टीम को सफल बनाना चाहते हैं।

स्टोक्स ने अपनी कोचिंग की इच्छा जताते हुए कहा, मुझे पता है कि खेल से जुड़े रहने के लिए मैं क्या करना चाहता हूं। इसमें मुख्य है कोच बनना। मैं अभी घरेलू क्रिकेट खेलते हुए ही अपना लेवल-3 कोचिंग कोर्स कर रहा हूं, क्योंकि मैं चाहता हूं कि जब मैं खेलना छोड़ूं, तो मेरी सारी कोचिंग से जुड़ी चीजें पूरी हो गयी। मुझे खेल से हटकर किसी तरह से नेतृत्व की भूमिका में रहने का विचार बहुत पसंद है। स्टोक्स ने कहा कि हैरी ब्रूक को टेस्ट में कप्तान बनाया जाना चाहिये था पर इंग्लैंड बोर्ड ने उनकी जगह पर जो रुट को कप्तानी दे दी। स्टोक्स ने ब्रूक का समर्थन करते हुए कहा कि अगर किसी को अच्छा कप्तान या लीडर माना जाता है, तो उसे तुरंत यह जिम्मेदारी दी जानी चाहिए। ब्रुक पहले से ही उपकप्तानी कर रहे थे, इसलिए उन्हें जिम्मेदारी देना सही रहता। उन्होंने रूट को अपनी शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि वह कोच स्टीफन फ्लेमिंग के साथ मिलकर कप्तान के तौर पर शानदार काम करेंगे। गौरतलब है कि साल 2022 से चार साल तक टेस्ट कप्तानी संभालने वाले स्टोक्स ने तब मुख्य कोच रहे ब्रेंडन मैकुलम के साथ मिलकर इंग्लैंड के टेस्ट क्रिकेट खेलने के तरीके को आक्रामक बना दिया था। जिसे बैजबॉल के नाम से भी जाना गया। हालांकि, स्टोक्स के संन्यास की घोषणा के ठीक दो सप्ताह बाद मैकुलम ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। रोल से हटने का ऐलान कर दिया। इसके बाद, न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान स्टीफन फ्लेमिंग को नया टेस्ट कोच नियुक्त किया गया। मैकुलम के कार्यकाल की शुरुआत में जबरदस्त आक्रामक बल्लेबाजी पर आधारित क्रिकेट सफल रहा पर हाल के दिनों में टीम के प्रदर्शन में गिरावट आई है और वह पिछले नौ टेस्ट मैचों में से सात हार गयी।

बीसीसीआई चयन समिति में हो सकता है बदलाव, अगरकर को हटाये जाने की संभावना

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम में बड़े बदलाव हो सकते हैं। इससे चयन समिति और प्रबंधन भी बचे नहीं हैं। यहां तक कि मुख्य चयनकर्ता के पद से अजीत अगरकर को हटाये जाने की संभावनाएं भी बढ़ गई है। एक रिपोर्ट के अनुसार मुख्य चयनकर्ता अगरकर का कार्यकाल अगले महीने सितंबर, समाप्त हो रहा है और उसे अगले साल तक बढ़ाये जाने की संभावनाएं नहीं हैं। इससे ये सवाल उठता है कि अगरकर के बाद इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को कौन संभालेगा। अब तक जो नाम इसके लिए उभरकर सामने आया है। वह है पूर्व क्रिकेटर और वर्तमान में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण का। अगरकर ने जुलाई 2023 में मुख्य चयनकर्ता का पद संभाला था। उनके कार्यकाल में टीम इंडिया ने कई अहम उपलब्धियां हासिल की हैं जिसमें एशिया कप से लेकर चैम्पियंस ट्रॉफी और टी20 विश्वकप

की जीत शामिल है। इन सफलताओं के बावजूद, उनके कार्यकाल विस्तार की संभावना कम लग रही है। गौरतलब है कि बीसीसीआई ने उनके अनुबंध को पहले ही तीन महीने के लिए बढ़ाया था और 2027 विश्व कप तक विस्तार पर विचार कर रहा था। वहीं अब यह योजना मुश्किल में पड़ती दिख रही है। यह दिखाता है कि बोर्ड बड़े फैसलों की तैयारी में है, जो भविष्य की रणनीतियों से जुड़े हो सकते हैं।

गौरतलब है कि लक्ष्मण का नाम मुख्य चयनकर्ता के तौर पर उभरना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वह लंबे समय से भारतीय क्रिकेट के विकास में अहम भूमिका निभा रहे हैं। एनसीए प्रमुख के रूप में, लक्ष्मण ने युवा प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्हें भारतीय घरेलू क्रिकेट सर्किट और खिलाड़ियों के विस्तृत पूल की गहरी समझ है, जो एक मुख्य चयनकर्ता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण गुण हैं। हाल ही में, उन्होंने जिम्बाब्वे दौरे पर भारतीय टीम के मुख्य कोच की भूमिका सफलतापूर्वक संभाली थी, और इससे पहले भी जब मुख्य कोचिंग स्टाफ को आराम दिया गया था, तब लक्ष्मण ने ही टीम की कमान संभाली थी। यह अनुभव उन्हें एक मजबूत प्रशासनिक और नेतृत्व क्षमता वाला उम्मीदवार बनाता है।

भारतीय टीम का विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल में पहुंचना कठिन , श्रीलंका के पास अच्छा अवसर : चोपड़ा

मुम्बई । पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम जिस प्रकार से खेल रही है। उसको देखते हुए उसके विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2025-27 के फाइनल में पहुंचने की संभावना बेहद कम है। वहीं श्रीलंका के पास अच्छा अवसर है। चोपड़ा के अनुसार ये सही है कि भारतीय टीम दो बार की उपविजेता रही है पर इस बार उसकी राह लगभग असंभव नजर आ रही है। वहीं श्रीलंका के पास भारत के खिलाफ होने वाली आगामी घरेलू सीरीज जीतकर शीर्ष चार में जगह बनाने का अवसर है। भारतीय टीम 15 अगस्त से शुरू होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए श्रीलंका का दौरा करेगी। वर्तमान हालातों पर नजर डालें तो डब्ल्यूटीसी रैंकिंग में भारतीय टीम 48.150 फीसदी अंकों (पीसीटी) के साथ पांचवें स्थान पर है, जिसने नौ मैचों में चार जीत और चार हार दर्ज की हैं। वहीं, श्रीलंका 41.67 पीसीटी के साथ छठे स्थान पर है। चोपड़ा ने बताया कि श्रीलंका के लिए यह सीरीज निर्णायक साबित हो सकती है। उन्होंने कहा, अगर हम (भारत) 2-0 से हारते हैं, तो हम सिर्फ 39 फीसदी अंक र रहेंगे और श्रीलंका 61 फीसदी अंक पर पहुंच जाएगा और चौथे नंबर पर आ जाएगा। अगर श्रीलंका भारत को 2-0 से हराता है तो वह दौड़ में शामिल हो जाएगा। तब उनके आगे बढ़ने का वास्तविक मौका होगा, वरना उनके लिए यह पास आकर भी दूर रहने वाली कहानी होगी। इससे स्पष्ट है कि श्रीलंका के पास इस सीरीज में क्लीन स्वीप कर डब्लूटीसी फाइनल की दौड़ में मजबूत दावेदारी पेश करने का सुनहरा अवसर है। वहीं, भारतीय टीम के हिसाब से देखें तो चोपड़ा ने बताया कि अगर भारत सीरीज में क्लीन स्वीप करता है, तो उन्हें फायदा मिल सकता है। उन्होंने कहा, अगर हम यह सीरीज 2-0 से जीतते हैं, तो हम 57.58 फीसदी अंक तक पहुंच जाएंगे। हालांकि, उन्होंने यह भी जोड़ा कि अगर सीरीज 1-1 से ड्रॉ होती है, तो दोनों टीमों को कोई खास फायदा नहीं होगा। ऐसी स्थिति में भारत 48.48 पीसीटी और श्रीलंका 44.44 पीसीटी पर रहेगा, जिससे उनकी मौजूदा स्थिति में कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा।

राष्ट्रमण्डल खेलों से गायब हुआ पाकिस्तानी मुक्केबाज

ग्लास्गो । ग्लास्गो राष्ट्रमण्डल खेलों से पाकिस्तान का एक मुक्केबाज कुदरातुल्लाह गायब हो गया है। इस मुक्केबाज के गायब होने से पाक मुक्केबाजी महासंघ की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। ये

पहला मामला नहीं है जब कोई पाक खिलाड़ी गायब हुआ हो। इससे पहले भी कई बार ऐसे वाकये होते रहे हैं। इसी को लेकर पाकिस्तान ओलंपिक संघ का कहना है कि राष्ट्रमंडल खेलों में अपने मुकाबले में उतरने के बाद कुदरातुल्लाह टीम होटल से गायब हो गया था जिसके बाद से ही उसका कुछ पता नहीं चला है। हैरानी की बात ये है कि उसका पासपोर्ट टीम मैनेजर के पास ही है। इसके बाद भी वह गायब हो गया। वहीं इससे पहले भी एक बार राष्ट्रमंडल खेलों से पाकिस्तान के दो मुक्केबाज सुलेमान बलोच और नजीरूल्लाह खान बर्मिंघम में गायब हो गए थे जबकि पासपोर्ट दल प्रमुख के पास थे। पाक ओलंपिक संघ के एक अधिकारी के अनुसार वापसी की तैयार के लिए अहम कुदरातुल्लाह के कमरे में गये थे पर मुक्केबाज वहां नहीं था जबकि उसका सामान और निजी चीजें कमरे में ही थीं। इसके बाद हमने एयरपोर्ट के लिए निकलने से पहले उन्हें खोजने की बहुत कोशिश की पर वह नहीं मिले।

अपनी सरकारी नौकरी की जिम्मेदारी निभाने पहुंचे ईशान

पटना। क्रिकेटर ईशान किशन खेल से ब्रेक मिलते ही अपनी नौकरी में पहुंच गये। ईशान रिजर्व बैंक में सहायक प्रबंधक के पद पर हैं।

ईशान पटना स्थित रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में पहुंचे। सोशल मीडिया पर वायरल हुई इन तस्वीरों में ईशान आई कार्ड में दिखे। वह बैंक कर्मचारियों के साथ सेल्फी लेते नजर नजर आ रहे थे। ईशान को साल 2017 में केवल 18 साल की उम्र में स्पोर्ट्स कोटे के तहत यह पद मिला था। ईशान ने आरबीआई की ओर से डीवाई पाटिल क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया है। अपने व्यस्त क्रिकेटिंग कार्यक्रम के बाद भी जब भी उन्हें क्रिकेट से समय मिलता है, वह अपनी ड्यूटी निभाने के लिए बैंक पहुंच जाते हैं। ईशान के बैंक पहुंचते ही वहां का माहौल किसी उत्सव जैसा हो जाता है। बैंक कर्मचारियों में उनके साथ एक तस्वीर लेने की होड़ लग गई। कर्मचारियों के लिए यह एक विशेष अवसर था, क्योंकि व्यस्तताओं के कारण ईशान कभी-कभी ही कार्यालय जा पाते हैं। इसलिए हर कोई अवसर का लाभ उठाते हुए उनके साथ सेल्फी लेना चाहता था। ईशान ने भी सहजता से स्टाफ के साथ तस्वीरें खिंचवाईं, जिससे दिन भर बैंक में उत्साह का माहौल बना रहा। उनकी मौजूदगी ने कार्यस्थल पर एक अलग ही ऊर्जा भर दी। इससे साफ है कि ईशान खेल के साथ ही अपनी नौकरी के प्रति भी गंभीर हैं।

संयोग से गोलकीपर बने मोहित हॉकी विश्व कप में करेंगे भारत का प्रतिनिधित्व

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयोग से गोलकीपर बने कर्नाटक के 24 वर्षीय मोहित एचएस का भारत के लिए हॉकी विश्व कप खेलने का सपना आखिरकार पूरा होने जा रहा है। वह 15 से 30 अगस्त तक नीदरलैंड और बेल्जियम की संयुक्त मेजबानी में होने वाले एफआईएच हॉकी विश्व कप में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। अनुभवी गोलकीपर सूरज करकेरा के साथ मोहित भारतीय टीम के दो गोलकीपरों में शामिल हैं।

यह उपलब्धि उनके अब तक के प्रेरणादायक सफर का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव है। भले ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मोहित का अनुभव करकेरा जितना नहीं है, लेकिन हाल के महीनों में उन्होंने अपने शानदार प्रदर्शन से सभी का ध्यान आकर्षित किया है। खासकर एफआईएच प्रो लीग के अंतिम चरण में उनके दमदार खेल ने चयनकर्ताओं का भरोसा और मजबूत किया। दिलचस्प बात यह है कि मोहित का गोलकीपर बनने का सफर पूरी तरह संयोग से शुरू हुआ था।

स्कूल की हॉकी टीम में गोलकीपर नहीं होने के कारण उनके कोच ने उनकी लंबाई को देखते हुए उन्हें इस जिम्मेदारी के लिए चुना। यह अप्रत्याशित मौका धीरे-धीरे उनके सफल करियर की नींव बन गया। इसके बाद उन्होंने जूनियर विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया और फिर सीनियर राष्ट्रीय टीम में जगह बनाते हुए लगातार आगे बढ़ते गए। हॉकी इंडिया की ओर से जारी बयान में मोहित ने कहा, 'मेरी हमेशा से यही सोच रही है कि भारत के लिए बड़े टूर्नामेंट खेलूं। जूनियर विश्व कप में हम पदक नहीं जीत सके थे और चौथे स्थान पर रहे थे। तभी से मेरा सपना था कि भारत के लिए कुछ बड़ा करूं।'

मोहित ने भारतीय हॉकी के महान गोलकीपर पी.आर. श्रीजेश से मिली सीख का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'हमने श्रीजेश से बहुत कुछ सीखा है। लेकिन उनके जैसा प्रदर्शन करने का दबाव हम पर नहीं है। उन्होंने भारत के लिए शानदार योगदान दिया है। हम मैदान पर अपना शत-प्रतिशत देंगे और फिर परिणाम जो होगा, उसे स्वीकार करेंगे।'

भारतीय टीम हाल ही में समाप्त हुए एफआईएच प्रो लीग अभियान में नीदरलैंड और जर्मनी जैसी मजबूत टीमों को हराने के बाद नए आत्मविश्वास के साथ विश्व कप में उतर रही है। टीम की तैयारियों पर मोहित ने कहा, 'नीदरलैंड और जर्मनी को हराने के बाद हमारा आत्मविश्वास काफी बढ़ा है। मुझे लगता है कि विश्व कप से पहले हमारी तैयारियां सही दिशा में हैं।'

मोहित के लिए विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व करना सम्मान के साथ-साथ बड़ी जिम्मेदारी भी है। उनका लक्ष्य मैदान पर हर मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ देना और भारत को फिर से विश्व चैंपियन बनाने में योगदान देना है। उन्होंने कहा, 'मेरे लिए सबसे बड़ा पैमाना यही है कि जब भी मैं मैदान पर उतरूं, देश के लिए अपना सौ प्रतिशत दूं। मेरे सीनियर करियर में इससे बड़ा अवसर अब तक नहीं मिला है। मैं भारत को एक बार फिर विश्व चैंपियन बनाने की पूरी कोशिश करूंगा।' गौरतलब है कि भारत ने एफआईएच हॉकी विश्व कप का अपना एकमात्र स्वर्ण पदक वर्ष 1975 में कुआलालंपुर में पाकिस्तान को हराकर जीता था।

कार्लोस अल्काराज चोट के कारण सिनसिनाटी ओपन से हटे

सिनसिनाटी । दुनिया के दूसरे नंबर के टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्काराज दाईं कलाई की चोट के कारण मंगलवार को सिनसिनाटी ओपन से हट गए। यह चोट उन्हें अप्रैल से परेशान कर रही है। स्पेन के अल्काराज इस हार्ड कोर्ट टूर्नामेंट में अपने खिताब का बचाव करने की तैयारी कर रहे थे। यह प्रतियोगिता यूएस ओपन से पहले महत्वपूर्ण अभ्यास टूर्नामेंट मानी जाती है। टूर्नामेंट निदेशक बॉब मोरान ने कहा, 'हम जानते हैं कि कार्लोस जल्द से जल्द कोर्ट पर लौटने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। हम उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना करते हैं और भविष्य में सिनसिनाटी में उनका स्वागत करने की उम्मीद करते हैं।' अल्काराज का पिछला टूर्नामेंट बार्सिलोना ओपन था। इसके बाद वह इस सत्र से बाहर चल रहे हैं। हाल की तस्वीरों और वीडियो में उन्हें अभ्यास करते हुए देखा गया था, जिससे उम्मीद थी कि वह 11 अगस्त से शुरू होने वाले सिनसिनाटी ओपन में वापसी कर लेंगे। यूएस ओपन में उनकी वापसी की उम्मीदें हालांकि बरकरार है। वह यूएस ओपन के मौजूदा चैंपियन भी है।

अल्जीरिया ने विश्वकप में खराब प्रदर्शन के कारण कोच पेटकोविच को हटाया

अल्जीयर्स । अल्जीरियाई फुटबॉल फेडरेशन (एफएएफ) ने हाल में हुए फीफा विश्वकप में टीम के खराब प्रदर्शन को देखते हुए टीम के मुख्य कोच व्लादिमीर पेटकोविक और उनके सहयोगी स्टाफ को हटा दिया है। एफएएफ ने कोच पेटकोविक के 29 महीने के कार्यकाल के बाद ही बाहर कर दिया है। इसका कारण उनका अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पाना रहा है। एफएएफ ने एक आधिकारिक बयान में पेटकोविक और उनके स्टाफ के प्रति उनके पेशेवरपन, प्रतिबद्धता और समर्पण के लिए आभार व्यक्त किया। गौरतलब है कि स्विट्जरलैंड और लाजियो के पूर्व कोच रहे पेटकोविक को मार्च 2024 में जामेल बेलमाडी की जगह टीम का कोच बनाया गया था। उनके मार्गदर्शन में, अल्जीरिया ने 2026 फीफा विश्व कप के लिए सफलतापूर्वक क्वालीफाई किया, 2022 में बाहर रहने के बाद टूर्नामेंट में अपनी वापसी सुनिश्चित की। यह उपलब्धि प्रशंसनीय थी, जिसने टीम में नई उम्मीदें जगाई थीं। हालांकि, 62 वर्षीय पेटकोविक के नेतृत्व में टीम का प्रदर्शन विश्व कप में निराशाजनक रहा, जिसके कारण फेडरेशन को अलग होने का निर्णय लेना पड़ा। अल्जीरिया ग्रुप जे में तीसरे स्थान पर रहा और नॉकआउट चरण में पहुंचा, लेकिन राउंड ऑफ 32 में स्विट्जरलैंड से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गया। यह गौरतलब है कि विश्व कप से कुछ समय पहले ही पेटकोविक का अनुबंध 2028 तक बढ़ा दिया गया था। इसके बावजूद, टीम के अपेक्षित परिणामों को हासिल करने में विफलता ने फेडरेशन को भविष्य को देखते हुए यह कड़ा कदम उठाने पर मजबूर किया।

बुमराह की खराब फिटनेस से उनके वर्कलोड मैनेजमेंट पर उठे सवाल , पिछले 970 दिन में सिर्फ तीन एकदिवसीय ही खेल पाये

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अपनी फिटनेस को लेकर लगातार संघर्ष करते रहे हैं। इसी कारण वह बार-बार टीम से अंदर-बाहर होते रहे हैं। ऐसे में अगले साल होने वाले एकदिवसीय विश्वकप में उनके खेलने को लेकर टीम प्रबंधन की चिन्ताएं बढ़ गयी हैं। इसका कारण ये है कि पिछले बुमराह पिछले 970 दिन में सिर्फ तीन एकदिवसीय ही खेल पाये हैं। ऐसे में उनके वर्कलोड मैनेजमेंट पर भी सवाल उठ रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार बुमराह अपने अनूठी एक्शन और सटीक यॉर्कर के कारण क्रिकेट जगत में एक अलग पहचान बनाने में सफल रहे हैं पर यही उनकी फिटनेस के लिए भी एक चुनौती बन गई है। बीसीसीआई द्वारा उनके वर्कलोड मैनेजमेंट पर विशेष ध्यान दिए जाने के बावजूद, बुमराह की मैदान पर उपलब्धता एक बड़ी चिंता का विषय बनी हुई है। क्रिकेट के मैदान पर उतरने के बाद कोई भी खिलाड़ी अपने को चोटों से ज्यादा समय तक नहीं बचा पाता, और बुमराह इसका जीता-जागता उदाहरण हैं। ताजा आंकड़ों के अनुसार, पिछले 970 दिनों की अवधि में बुमराह ने भारतीय टीम के लिए केवल 3 एकदिवसीय मैच खेले हैं। यह आंकड़ा तब और भी हैरान करने वाला हो जाता है जब हम देखते हैं कि इसी दौरान भारतीय टीम ने कुल 29 एकदिवसीय मुकाबले खेले हैं, जिसका अर्थ है कि बुमराह ने इनमें से 26 महत्वपूर्ण मैचों को नहीं खेला है। 2023 एकदिवसीय विश्व कप फाइनल के बाद से ही हां बुमराह कुछ ही एकदिवसीय मैचों में ही मैदान पर दिखे हैं। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या बुमराह अपनी इस सीमित उपलब्धता के साथ भारतीय टीम को 2027 का एकदिवसीय विश्व कप जिताने में सक्षम होंगे? साथ ही, वर्कलोड मैनेजमेंट पर इतना जोर दिए जाने के बावजूद उनकी पूरी फिटनेस हासिल न कर पाना भी कई गंभीर सवाल खड़े करता है।

पिछले 10 महीने ने मेरी ऐसी परीक्षा ली, जिसकी मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी:नीरज चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। फिटनेस से जुड़ी परेशानियों से करीब एक साल तक जूझने के बाद भारतीय भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा ने कहा कि पिछले 10 महीने उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण रहे और उन्होंने ऐसे दौर का सामना किया, जिसकी उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी।

दो बार के ओलंपिक पदक विजेता 28 साल के इस खिलाड़ी ने पिछले सप्ताह राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीतकर अपने पदकों के संग्रह में एक और उपलब्धि जोड़ी। वह मुख्य रूप से जांघ की मांसपेशियों की चोट और कुछ अन्य शारीरिक परेशानियों से प्रभावित रहे थे। चोट के कारण नीरज का सत्र देर से शुरू हुआ, लेकिन उन्होंने ग्लास्गो में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में 85.83 मीटर के सत्र के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ अपनी लय हासिल कर ली।

नीरज ने इंस्टाग्राम पर राष्ट्रमंडल खेलों के प्रदर्शन का वीडियो साझा करते हुए लिखा, 'कुछ भाले लंबी दूरी तय करते हैं और कुछ पल पूरी यात्रा का भार अपने साथ लेकर आते हैं। पिछले 10 महीने ने मेरी ऐसी परीक्षा ली, जिसकी मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी।' उन्होंने कहा, 'कई चोटों से उबरना, अपने शरीर को दोबारा मजबूत बनाना, फिर से लय हासिल करना और उस समय धैर्य रखना जब मैं केवल प्रतियोगिता में उतरना चाहता था। मैं हर दिन अभ्यास कर रहा था, लेकिन यह भी नहीं पता था कि इस साल मुझे खेलने का मौका मिलेगा या नहीं।'

नीरज ने 2018 में ऑस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में 86.47 मीटर के थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता था, लेकिन चोट के कारण 2022 के सत्र में हिस्सा नहीं ले सके थे। पिछले साल सितंबर में विश्व चैंपियनशिप से ठीक पहले उन्हें कमर के निचले हिस्से में चोट लगी थी और राष्ट्रमंडल खेलों से पहले उन्होंने केवल एक प्रतियोगिता में भाग लिया था। ग्लास्गो राष्ट्रमंडल खेलों में खराब मौसम के कारण मुश्किल परिस्थितियों के बीच नीरज को श्रीलंका के रुमेश थरंगा पथिराजे 89.75 मीटर के थ्रो के साथ पीछे छोड़ा। पथिराजे मौजूदा सत्र में सबसे अधिक दूरी तक भाला फेंकने वाले खिलाड़ी है।

पूर्व विश्व चैंपियन नीरज ने अपनी वापसी में मदद करने वाले सहयोगी दल के प्रति आभार जताते हुए कहा, 'इस स्तर पर दोबारा प्रतिस्पर्धा करना अच्छा लग रहा है। यह सब कुछ अकेले संभव नहीं था। मैं उन लोगों का दिल से आभारी हूं, जिन्होंने हमेशा मेरा विश्वास बनाए रखा। उन्होंने अपने फिजियो ईशान मारवाहा और कोच जय चौधरी का विशेष रूप से धन्यवाद किया। नीरज ने कहा, 'ईशान जी चोट से उबरने के दौरान हर कदम पर मेरे साथ रहे और मुझे फिर से वह करने में मदद की, जिसे मैं सबसे ज्यादा पसंद करता हूं। मेरे कोच जय चौधरी उस समय से मेरे साथ हैं, जब मैंने पहली बार भाला उठाया था।' उन्होंने कहा, 'मेरा परिवार हर परिस्थिति में मेरे साथ मजबूती से खड़ा रहा। सत्र अभी जारी है और मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा हूं।'

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बाली के इन मंदिरों को देखे बिना नहीं होगी इंडोनेशिया की ट्रिप पूरी

यदि बाली में सर्वश्रेष्ठ हिंदू मंदिर की बात की जाए, तो उसमें तनाह लोट मंदिर का नाम अवश्य लिया जाता है। तनाह लोट मंदिर एक पर्यटन स्थल के रूप में बहुत लोकप्रिय है। तनाह लोट मंदिर समुद्री क्षेत्र में एक बड़ी मूंगा चट्टान पर बना है।

जब भी बाली घूमने की बात होती है, तो यकीनन सबसे पहले वहां के शानदार बीचेस को एक्सप्लोर करने का ही ख्याल मन में आता है। लेकिन यहां का प्राकृतिक सौंदर्य जितना बेहतरीन है, उतने ही आकर्षक है यहां पर स्थित मंदिर। प्राचीन बाली में कई मंदिर ऊंचे इलाकों और तटों पर स्थित हैं, जो शानदार सदियों पुरानी वास्तुकला को समेटे हुए हैं। भले ही आप स्वभाव से धार्मिक हों या ना हो, लेकिन फिर भी आपको इन मंदिरों में एक बार जरूर जाना चाहिए। यह मंदिर आपको बाली के सांस्कृतिक पक्ष से रूबरू होने का मौका देते हैं, साथ ही साथ मंदिर के पीछे की दिलचस्प इतिहास को जानकर यकीनन बेहद रोमांचित होंगे। तो चलिए आज हम आपको बाली में स्थित कुछ बेहतरीन मंदिरों के बारे में बता रहे हैं-

तनाह लोट मंदिर

यदि बाली में सर्वश्रेष्ठ हिंदू मंदिर की बात की जाए, तो उसमें तनाह लोट मंदिर का नाम अवश्य लिया जाता है। तनाह लोट मंदिर एक पर्यटन स्थल के रूप में बहुत लोकप्रिय है। तनाह लोट मंदिर समुद्री क्षेत्र में एक बड़ी मूंगा चट्टान पर बना है। तनाह लोट मंदिर क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए केवल तभी पहुँचा जा सकता है जब समुद्र का पानी कम हो। समुद्र के ज्वार के समय तनाह लोट मंदिर समुद्र के बीच में स्थित प्रतीत होता है। तनाह लोट मंदिर जाने का सबसे अच्छा समय सूर्यास्त से पहले दोपहर का है। दर्शन के बाद आप यहां पर सूर्यास्त भी अवश्य देखें। तनाह लोट में सूर्यास्त का दृश्य अद्वितीय और बाली में सबसे सुंदर दृश्यों में से एक है।

उलुवातु मंदिर

उलुवातु मंदिर को बाली के लोगों द्वारा पुरा लुहुर उलुवातु भी कहा जाता है और यह बाली में छह मुख्य हिंदू मंदिरों में से एक है। उलुवातु मंदिर अपनी वास्तुकला की विशिष्टता के अलावा, उलुवातु मंदिर स्थान एक बहुत ही खड़ी चट्टान के किनारे पर स्थित है और चट्टानों की समुद्र तल से लगभग 70 मीटर की ऊँचाई है। यहां पर सूर्यास्त के दृश्य के अलावा, उलुवातु मंदिर स्थान से पर्यटक हिंद महासागर के दृश्यों को भी देख सकते हैं। यहां पर आप बाली के डांस भी अवश्य देखें, क्योंकि बाली में एकमात्र स्थान जो सूर्यास्त के दौरान बाली केकक नृत्य पेशकश करता है वह उलुवातु मंदिर में है।

उलुन दानू बेरातन मंदिर

एक झील में एक स्वर्ग, वही वास्तव में उलुन दानू है। बेदुगुल में बेराटन झील के पश्चिमी किनारे पर स्थित, यह एक प्रसिद्ध फ्लोटिंग टेम्पल है, और बाली आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए एक मनोरंजक स्थान है। इसकी संरचना के अलावा, यहाँ का शांत वातावरण और पॉजिटिविटभ् आपके मन, शरीर और आत्मा को फिर से जीवंत करने के लिए एकदम सही हैं। इंडोनेशिया के बाली के सभी मंदिरों में से यह सबसे शांत मंदिरों में से एक है।

बेसकिह मंदिर

बाली के सभी हिंदू मंदिरों में से, बेसकिह यहां पर सबसे बड़ा और सबसे पवित्र मंदिर परिसर है। इसके प्रवेश द्वार से जो एक सीढ़ी की तरह लगता है जो आपको सीधे स्वर्ग में ले जाता है। यकीन मानिए, यहां का वातावरण आपको निश्चित रूप से विस्मय कर देगा! बाली, इंडोनेशिया के सभी मंदिरों में, यह निश्चित रूप से बाली के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है।

मध्य प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन है 'पचमढ़ी', घूमने के लिहाज से है बेहतरीन

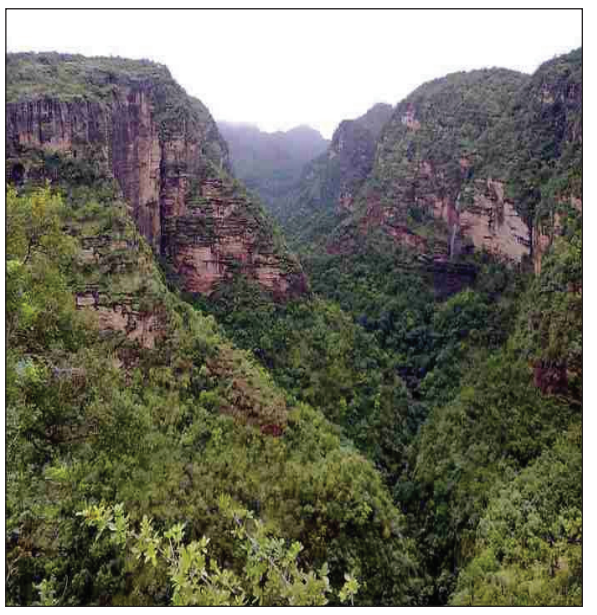

मध्य प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन, पचमढ़ी मध्य प्रदेश का इकलौता हिल स्टेशन है। इसे लोकप्रिय रूप से सतपुड़ा की रानी या क्वीन ऑफ़ सतपुड़ा कहा जाता है। यह हिल स्टेशन 1110 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और यूनेस्को बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा है। यह हिल स्टेशन भारतीय इतिहास में भी एक पौराणिक महत्व रखता है। माना जाता है कि यह पांडवों के निर्वासन के दौरान उनका निवास स्थान था। पचमढ़ी पर्यटन स्थलों में कई गुफाएं, झरने, पहाड़ियां, मंदिर और वन्यजीव अभ्यारण्य शामिल हैं जो मध्य प्रदेश के इस खूबसूरत हिल स्टेशन को पर्यटकों के बीच लोकप्रिय बनाते हैं। आज के इस लेख में हम आपको पंचमढ़ी के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों की जानकारी देंगे -

पांडव गुफाएं

पचमढ़ी में घूमने के लिए पांडव गुफाएं सबसे अच्छी जगहों में से एक हैं। शानदार सतपुड़ा पर्वतमाला की पृष्ठभूमि के साथ, पांडव गुफा 5 रॉक-कट बौद्ध मंदिरों का एक समूह है। पौराणिक स्रोतों से पता चलता है कि पांडव अपने निर्वासन के दौरान इन मंदिरों में रुके थे, इसलिए इसका यह नाम पड़ा। 9वीं शताब्दी में बने इन मंदिरों को सुंदर मूर्तियों और नक्काशी से सजाया गया है।

बी फॉल्स

बी फॉल्स, पचमढ़ी में स्थित एक खूबसूरत झरना है। इसे जमुना प्रपात के नाम से भी जाना जाता है। यह जलप्रपात पचमढ़ी घाटी के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराता है। यह झरना एक सुंदर भनभनाहट के साथ बहता है इसलिए इसे बी फॉल्स के नाम से जाना जाता है। स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों के बीच, बी फॉल्स एक लोकप्रिय पिकनिक स्पॉट के तौर पर प्रसिद्ध है। बी फॉल्स में लोग अक्सर तैराकी के लिए जाते हैं। रोमांच पसंद करने वाले लोग धारा को पार करके, बी फॉल्स के माध्यम से दूसरे स्नान कुंड रजत प्रपात तक पहुंच सकता है।

जटा शंकर गुफाएं

जटा शंकर गुफाएं, पचमढ़ी के सबसे पवित्र स्थलों में से एक हैं। प्रचलित लोककथाओं के अनुसार, यह वह स्थान माना जाता है जहां भगवान शिव ने भस्मासुर के प्रकोप से खुद को छुपाया था। जटा शंकर गुफाएं एक विशाल चट्टान की छाया के नीचे एक प्राकृतिक शिवलिंगम का दावा करती हैं। इसके साथ ही, गुफा में पत्थर का निर्माण शेषनाग से मिलता जुलता है। वहीं, गुफाओं में चट्टान का निर्माण भगवान शिव के उलझे हुए बालों से मिलता जुलता है, इसलिए इसका यह नाम पड़ा।

धूपगढ़

धूपगढ़, सतपुड़ा श्रेणी का सबसे ऊँचा शिखर है, जिसकी ऊंचाई 1350 मीटर है। यह न केवल पचमढ़ी का उच्चतम बिंदु है बल्कि मध्य प्रदेश और मध्य भारत का उच्चतम बिंदु भी है। पचमढ़ी में सूर्यास्त देखना एक अद्भुत अनुभव है। इसके अलावा, यह स्थान एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल भी है। पर्यटकों के बीच, धूपगढ़ घूमने का सबसे अच्छा मौसम मानसून के दौरान होता है। बारिश के मौसम में यह स्थान बादलों से आच्छादित होता है।

बड़ा महादेव गुफा

बड़ा महादेव गुफा, पचमढ़ी से लगभग 10 किमी दूर स्थित है। यह भगवान महादेव का एक पवित्र तीर्थ है। यह 60 फीट लंबी गुफा है, जिसके अंदर भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान गणेश के भी मंदिर हैं। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, बड़ा महादेव गुफा वह स्थान है जहां भगवान विष्णु ने एक दिव्य सौंदर्य मोहिनी का रूप लेकर राक्षस भस्मासुर का वध किया था। इसमें गुफा से लगातार पानी गिरता रहता है जो एक कुंड में जमा हो जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस कुंड में स्नान करने से कई बीमारियों का इलाज होता है।

रजत प्रपात

रजत प्रपात, पचमढ़ी का सबसे बड़ा जलप्रपात है। इस जलप्रपात का नाम रजत प्रपात इसलिए पड़ा क्योंकि जब इस पर सूरज की रोशनी पड़ती है तो यह चांदी के रंग में चमकता है। रजत प्रपात को 'सिल्वर फॉल' के नाम से भी जाना जाता है। यह झरना 107 मीटर की ऊँचाई से गिरता है। यह भारत का 30वां सबसे ऊंचा जलप्रपात है। रजत प्रपात को सतपुड़ा की रानी कहा जाता है।

शहर की भागदौड़ से ब्रेक चाहते हैं तो घूम आइए हिमाचल की इन जगहों पर

हिमाचल प्रदेश देश की सबसे सुंदर जगहों में से एक है। यह राज्य अपनी प्राकृतिक सुंदरता, शुद्ध और शांत वातावरण और प्रसिद्ध पर्यटक स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश में बहुत से हिल स्टेशन हैं जहाँ देश-विदेश से लोग घूमने आते हैं। यहाँ के ऊंचे पहाड़, खुले हरे मैदान, प्राचीन मंदिर-मठ और नीले पानी की झील नदियाँ पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। शहरों की भीड़-भाड़ और शोर-गुल भरी ज़िंदगी से दूर यहाँ का शांत वातावरण पर्यटकों को शांति प्रदान करता है। आज के इस लेख में हम आपको हिमाचल प्रदेश के प्रसिद्ध हिल स्टेशनों की जानकारी देंगे। अगर आप भी घूमने का प्लान बना रहे हैं तो इन जगहों को अपनी लिस्ट में ज़रूर शामिल करें-

शिमला

शिमला हिमाचल प्रदेश की राजधानी होने के साथ-साथ हिमाचल का सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशन भी है। 2200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह देश की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। शिमला का मॉल रोड, रिज, टॉय ट्रेन यहाँ आने वाले पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। शिमला में कई ऐतिहासिक मंदिर और इमारतें भी हैं जिसे देखने दूर-दूर से लोग यहाँ आते हैं। इस शहर की सुंदरता और शुद्ध वातावरण यहाँ आने पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

मनाली

मनाली हिमाचल प्रदेश के सबसे प्रसिद्ध हिल स्टेशनों में से एक है। मनाली हिमाचल के कुल्लू जिले का एक हिस्सा है और यह पीर पंजाल और धौलाधार पर्वतमाला के बर्फ से ढकी ढलानों के बीच स्थित है। समुद्र तल से 1950 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह हिल स्टेशन अपने प्राकृतिक सौंदर्य के लिए मशहूर है। यहाँ के हरे-भरे जंगल, फूलों से सजे मैदान और नदी में बहता ताज़ा पानी पर्यटकों को इस जगह से प्यार करने पर मजबूर कर देता है। यहाँ आकर पर्यटकों को सुकून मिलता है। इस हिल स्टेशन में कई मंदिर, संग्रहालय और प्रसिद्ध गाँव हैं। पर्यटक यहाँ पर ऊंचे-ऊंचे पहाड़ों पर ट्रेक्किंग करते हैं और यहाँ की सुंदरता का आनंद लेते हैं।

धर्मशाला

काँगड़ा घाटी से 17 किलोमीटर दूर स्थित धर्मशाला हिमचाल प्रदेश के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। यहाँ के बर्फ से ढके धौलाधार पर्वत श्रृंखला इस जगह की खासियत हैं और इसे देश के सबसे खूबसूरत पर्यटक स्थलों में से एक है बनाते हैं। धर्मशाला को दलाई लामा के पवित्र निवास स्थान के रूप में भी जाना जाता है। इस शहर को अलग-अलग ऊंचाई के साथ दो हिस्सों में बाँटा गया है। इसके निचले हिस्से में धर्मशाला शहर और ऊपरी हिस्से को मैकलोडगंज के नाम से जाना जाता है। धर्मशाला में तिब्बती संस्कृति देखने को मिलती है और यहाँ बौद्ध धर्म के कई पवित्र स्थल हैं।

स्पीति घाटी

समुद्री तल से 12,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित स्पीति घाटी हिमाचल प्रदेश की सबसे प्रसिद्ध जगहों में से एक है। यह घाटी चारों ओर से हिमालय से घिरी हुई है जो इस जगह को बेहद खास बनाते हैं। स्पीति घाटी में ठंडे रेगिस्तान, बर्फ से ढके पहाड़, घुमावदार सड़कें और सुरम्य घाटियाँ हैं जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। यह जगह यहाँ आने वाले पर्यटकों को उत्साह और रोमांच से भर देती है। स्पीति घाटी देश की सबसे ठंडी जगहों में से एक है और यह जगह साल के लगभग 6 महीने मोटी बर्फ से ढकी होती है।

कसौली

कसौली हिमाचल प्रदेश के सबसे मशहूर हिल स्टेशनों में से एक हैं। यह चंडीगढ़ से शिमला के रास्ते में स्थित एक छोटा सा पहाड़ी शहर है जो हिमालय पर्वत के निचले किनारों पर बसा हुआ है। हिमाचल के दक्षिण-पश्चिम भाग में स्थित कसौली शहरों की भीड़ और चकाचौंध से दूर बसा हुआ एक शांतिपूर्ण शहर है। देवदार के सुंदर जंगलो के बीच बसा कसौली शहर अंग्रेज़ों द्वारा बनाई गई भव्य विक्टोरियन इमारतों के लिए मशहूर है। कसौली की प्राकृतिक सुंदरता और शांत वातावरण इसे हिमाचल के सबसे खास पर्यटन स्थलों में से एक बनाता है।

किन्नौर

शिमला से लगभग 235 किलोमीटर की दूरी पर स्थित किन्नौर हिमाचल प्रदेश के सबसे लोकप्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। यह जगह को लैंड ऑफ़ गॉड के नाम से प्रसिद्ध है। किन्नौर सतलुज, बसपा और स्पीति नदी के बीच स्थित है और यह जगह अपने हरे-भरे मैदानों और चट्टानी पहाड़ों की सुंदरता के लिए काफी मशहूर है। किन्नौर का किन्नर कैलाश पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है और यहाँ आए पर्यटक किन्नर कैलाश देखने जरुर जाते हैं। माना जाता है कि किन्नर कैलाश भगवान शिव और शिवलिंग का है और इसके साथ ही इस पर्वत का संबंध पांडवों की कहानियों से बताया जाता है। किन्नौर में कई पुराने बौद्ध मठ और मंदिर भी हैं जो बहुत पवित्र माने जाते हैं और इन्हें देखने दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

प्रियंका गांधी ने सरकार से मांगा जवाब, विपक्ष का विरोध जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद परिसर में जारी विपक्ष के प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि लोकतंत्र में सत्ता जनता के प्रति जवाबदेह होती है। उन्होंने कहा कि यदि प्रदर्शनकारियों पर पैलेट गन का इस्तेमाल हुआ, आंसू गैस छोड़ी गई या लाठीचार्ज किया गया, तो इसके लिए जिम्मेदार लोगों की जवाबदेही तय होनी चाहिए। संसद परिसर में विपक्ष का प्रदर्शन जोरशोर से जारी रहा इसी बीच कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और गृह मंत्री से संसद में जवाब देने की मांग उठाई। कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद ने भी कहा कि विपक्ष का आंदोलन पूरी तरह शांतिपूर्ण रहेगा। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदर्शन कर रहे छात्रों के साथ कथित हिंसा हुई और इसकी निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। विपक्ष ने इन मुद्दों पर सरकार से स्पष्ट जवाब और जवाबदेही तय करने की मांग दोहराई। कांग्रेस नेत्री प्रियंका गांधी से पुलिस कार्यवाही पर जबादेही तय करने की बात कही है और जिम्मेदारों को सजा की बात कही है। विपक्ष अपनी मांगों को लेकर लगातार प्रदर्शन कर रहा है।

बोकारो में तिहरा हत्याकांड : सनकी पड़ोसी ने कुल्हाड़ी से तीन को काट डाला

बोकारो (एजेंसी)। झारखंड के बोकारो जिले में सनसनीखेज घटना सामने आई है, जहां एक सनकी पड़ोसी ने पुलिस की कथित मौजूदगी में एक ही परिवार के तीन सदस्यों की कुल्हाड़ी से बेरहमी से हत्या की। यह दिल दहला देने वाली वारदात कुकुरलीलवा गांव में सुबह करीब 8 बजे हुई। मृतकों में जानकी महतो, उनकी पत्नी और उनकी बहू शामिल हैं। पुलिस ने आरोपी राजू सिंह को गिरफ्तार किया है, जो कि मृत परिवार का पड़ोसी है और सनकी स्वभाव का बताया जाता है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, राजू ने सबके सामने कुल्हाड़ी से हमला शुरू किया। आरोपी राजू ने सबसे पहले वृद्ध महिला को निशाना बनाया। जब उसके पति बचाने आए, तब उन्हें भी मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बाद, जब बहू धान का बिचड़ा लेकर खेत जा रही थी, तब घर के बाहर सड़क पर ही उस पर भी कुल्हाड़ी से कई वार किए गए। चौंकाने वाली बात यह है कि यह अंतिम हमला कथित तौर पर पुलिसकर्मियों के सामने हुआ। आरोपी राजू सिंह के हिंसक स्वभाव का इतिहास रहा है, हाल ही में अपनी पत्नी को भी पीटकर घायल कर दिया था, जो इस समय अस्पताल में भर्ती है। घटना के बाद शव सड़क पर पड़े रहे और मौके पर बड़ी संख्या में भीड़ जमा हो गई।

बांग्लादेशी होने के शक में 13 लोग हिरासत में

ग्वालियर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के ग्वालियर में पुलिस ने बांग्लादेशी नागरिक होने के शक में 13 लोगों को हिरासत में ले लिया। पुलिस के मुताबिक, इसमें सात युवक, तीन महिलाएं और तीन बच्चे शामिल हैं, जो शहर में अलग-अलग स्थानों पर किराए के मकानों में रह रहे थे। ग्वालियर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह ने बताया कि गुप्त सूचना मिलने के बाद पुलिस ने एक विशेष अभियान चलाया और इन सभी को हिरासत में लिया। उन्होंने कहा, हिरासत में लिए गए इन लोगों के दस्तावेजों का सत्यापन किया जा रहा है। नागरिकता की पुष्टि होने पर नियमानुसार वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

हॉर्न विवाद में कांग्रेसी नेता के बेटे पर जानलेवा हमला, दोनों हाथ काटे

लुधियाना (एजेंसी)। लुधियाना शहर के रणजीत सिंह पार्क इलाके में हॉर्न बजाने के मामूली विवाद ने खूनी रूप ले लिया। होजरी कारोबारी व कांग्रेसी नेता धर्मिंदर के सुपुत्र करण शर्मा पर 3 युवकों ने तलवार से जानलेवा हमला किया। जिससे उसके दोनों हाथ बुरी तरह कट गए। करण को गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया। जहाँ जटिल ऑपरेशन के बाद हाथों पर 100 से अधिक टांके लगे। पुलिस को दी शिकायत में शर्मा ने बताया कि उनका बेटा करण अपनी कार से घर लौट रहा था। गली में आरोपी सुखविंदर सिंह अपनी कार बैक कर रहा था, जिस पर करण ने साइड मांगने के लिए हॉर्न बजाया। इसी बात से चिढ़कर सुखविंदर और उसके दो साथियों ने करण के साथ गाली-गलौज कर मारपीट शुरू कर दी। शोर सुनकर धर्मिंदर और मोहल्ले के कुछ लोग मौके पर पहुँचे। इसी बीच, आरोपी सुखविंदर घर के अंदर से धारदार तलवार लेकर आया और सीधे करण पर जानलेवा वार कर दिया। खुद को बचाने के प्रयास में करण ने जैसे ही अपने हाथ आगे किए, तलवार लगने से उसके दोनों हाथ बुरी तरह जख्मी हो गए। बीच-बचाव करने आए दो अन्य युवकों को भी चोटें आईं। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपी फरार हो गए। थाना डिवीजन नंबर 3 की पुलिस ने धर्मिंदर शर्मा के बयानों पर मुख्य आरोपी सुखविंदर और उसके दो अज्ञात साथियों के खिलाफ हत्या के प्रयास के तहत मामला दर्ज किया है। पुलिस आरोपियों की तलाश में लगातार दबिश दे रही है और उन्हें जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

अमरनाथ यात्रा स्थगित, अनुच्छेद 370 की वर्षगांठ पर सुरक्षा बढ़ाई गई

जम्मू (एजेंसी)। अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के 7 वर्ष पूरे होने के मौके पर जम्मू कश्मीर में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। इस बीच, वार्षिक अमरनाथ यात्रा को बुधवार को जम्मू स्थित आधार शिविर से स्थगित की गई। हालांकि, प्रशासन ने अमरनाथ यात्रा को एक दिन के लिए स्थगित करने का कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया है, लेकिन आधिकारिक सूत्रों ने मौजूदा सुरक्षा स्थिति को देखकर एहतियातन उठाया गया कदम बताया है। सूत्रों के अनुसार, बुधवार सुबह भगवती नगर आधार शिविर से श्रद्धालुओं के किसी भी नए जत्थे को अनंतनाग और गांदरबल जिलों में स्थित पहलगाम और बालटाल के आधार शिविरों के लिए रवाना नहीं होने दिया गया। अधिकारियों ने जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर सुरक्षा बलों के काफिलों की आवाजाही भी रोक दी। यह कदम आमतौर पर तब उठाया जाता है जब सुरक्षा एजेंसियां रणनीतिक कारणों से राजमार्ग पर आवाजाही कम करना चाहती हैं। यह राजमार्ग कश्मीर को देश के अन्य हिस्सों से जोड़ने वाला एकमात्र ऐसा मार्ग है जो हर मौसम में खुला रहता है। यात्रा स्थगित करने का यह निर्णय तब हुआ है, जब सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस, कांग्रेस और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) सहित कई राजनीतिक दल पांच अगस्त को काला दिवस के रूप में मना रहे हैं। यह दिवस केंद्र सरकार द्वारा तत्कालीन जम्मू कश्मीर राज्य को अनुच्छेद 370 के तहत प्राप्त विशेष दर्जा पांच अगस्त 2019 को समाप्त करने और राज्य का पुनर्गठन कर उसे दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित करने के फैसले के सात वर्ष पूरे होने पर मनाया जा रहा है।

जेपीएससी परीक्षा विवाद पर रांची में छात्र आंदोलन तेज

परीक्षा रद्द करने और निष्पक्ष भर्ती की मांग

रांची(एजेंसी)। झारखंड लोक सेवा आयोग (जेपीएससी) की 14वीं संयुक्त सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा में कथित अनियमितताओं के विरोध में रांची का जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम छात्र आंदोलन का केंद्र बन गया है। 25 जुलाई से शुरू हुआ यह प्रदर्शन अब लगातार तेज होता जा रहा है। बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं और उनके समर्थक स्टेडियम में जुटे हैं, जहां धरना, अनशन और शांतिपूर्ण प्रदर्शन जारी है। आंदोलनकारी परीक्षा रद्द करने, पारदर्शी तरीके से दोबारा परीक्षा कराने तथा राज्य में नियमित भर्ती के लिए वार्षिक परीक्षा कैलेंडर जारी करने की मांग कर रहे हैं।

प्रदर्शन कर रहे छात्रों का आरोप है कि परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसी के माध्यम से हुई 14वीं जेपीएससी प्रारंभिक परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली हुई है। उनका कहना है कि जब तक परीक्षा रद्द कर निष्पक्ष प्रक्रिया के तहत दोबारा आयोजन नहीं कराया जाता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। छात्रों का कहना है कि उन्हें सरकारी योजनाओं से अधिक रोजगार और पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया की जरूरत है। आंदोलन फिलहाल दो अलग-अलग समूहों में बंटा हुआ दिखाई दे रहा है, लेकिन दोनों की प्रमुख मांगें समान हैं। एक समूह का नेतृत्व छात्र नेता देवेंद्र महतो कर रहे हैं, जो भूख हड़ताल पर हैं। वहीं दूसरे समूह में ब्रह्मानंद समेत कई छात्र खुले आसमान के नीचे आमरण अनशन कर रहे हैं। उनका कहना है कि प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार सामने आ रही गड़बड़ियों से युवाओं का भविष्य प्रभावित हो रहा है और अब निर्णायक कार्रवाई जरूरी है।

जयपाल सिंह मुंडा स्टेडियम का माहौल बड़े जनआंदोलन जैसा नजर आ रहा है। विभिन्न क्षेत्रों से लोग छात्रों को नैतिक समर्थन देने पहुंच रहे हैं। प्रदर्शन शांतिपूर्ण ढंग से जारी है और छात्र अनुशासन बनाए रखते हुए अपनी मांगों को सरकार तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे हैं। इधर, परीक्षा में कथित गड़बड़ी की जांच अपराध अनुसंधान विभाग कर रहा है। जांच के दौरान जेपीएससी से जुड़े कुछ कर्मचारियों और परीक्षा आयोजित करने वाली एजेंसी से जुड़े लोगों के पास अभ्यर्थियों की ओएमआर शीट और प्रवेश पत्र मिलने का दावा किया गया है। जांच एजेंसी ने कुछ सफल अभ्यर्थियों से भी ओएमआर शीट मांगी है। इस मामले में कई लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जबकि आयोग के पूर्व अध्यक्ष से पूछताछ जारी है और उनका पासपोर्ट भी जब्त किया गया है। आंदोलनकारी छात्र परीक्षा रद्द करने, केंद्रीय एजेंसी से जांच कराने और भविष्य में समयबद्ध व निष्पक्ष भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित करने की मांग पर अब भी अडिग हैं।

ओणम पर साड़ियों से बनी दुनिया की सबसे बड़ी रंगोली, बना विश्व रिकॉर्ड

कोच्चि (एजेंसी)। ओणम उत्सव के अवसर पर केरल के कोच्चि स्थित फोरम मॉल में परंपरा और कला का अनूठा संगम देखने को मिला। एक नामी ब्रांड कलेक्शंस द्वारा 2,000 वर्ग फुट क्षेत्र में 2,100 से अधिक सिल्क और कांचीपुरम सिल्क साड़ियों का उपयोग कर दुनिया की सबसे बड़ी साड़ी पूक्कलम (साड़ियों से बनी रंगोली) तैयार करवाई गई। इस अनोखी कलाकृति को यूनिवर्सल रिकॉर्ड्स फोरम (यूआरएफ) ने विश्व रिकॉर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की है। थोट्टुपुझा स्थित इस खास ब्रांड के कलेक्शंस के इस आयोजन को प्रसिद्ध कलाकार दा विंची सुरेश और अपनी रचनात्मक टीम के सहयोग से विशेष रचनात्मक रंगोली का निर्माण किया। पारंपरिक फूलों की जगह लगभग 5,000 रंगों और डिजाइनों वाली साड़ियों का इस्तेमाल कर ओणम की सांस्कृतिक विरासत को नए अंदाज में प्रस्तुत किया गया। आयोजन को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग फोरम मॉल पहुंचे। आयोजकों ने इसे भारतीय परंपरा, वस्त्र कला और रचनात्मकता का अनूठा उदाहरण बताया।

शेख हसीना के लाइव कार्यक्रम से घबराया बांग्लादेश

-भारत ने कहा- घबराएं नहीं, ये उनका निजी मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को लेकर एक नए घटनाक्रम ने ढाका की चिंता बढ़ा दी है। हालांकि भारत ने दो टूक कहा है कि घबराने की जरुरत नहीं है ये उनका अपना निजी मामला है। भारत में शरण ले रहीं शेख हसीना करीब दो साल बाद पहली बार मीडिया से लाइव संवाद करने जा रही हैं। वह बुधवार को वर्चुअल माध्यम से विदेशी पत्रकार क्लब की प्रेसवार्ता में शामिल होंगी और सीधे सवालों के जवाब देंगी। भारत आने के बाद यह पहला मौका होगा जब वह सार्वजनिक रूप से लोगों के सामने अपनी बात रखेंगी। इससे पहले वह केवल लिखित बयान जारी करती रही हैं।

अगस्त 2024 में बांग्लादेश में हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बाद शेख हसीना देश छोड़कर भारत आ गई थीं। तब से वह भारत में किसी अज्ञात स्थान पर रह रही हैं। उनके आगामी मीडिया कार्यक्रम की घोषणा के बाद बांग्लादेश सरकार ने भारत के सामने अपनी आपत्ति दर्ज कराई है। ढाका ने इस कार्यक्रम को रोकने की अपील भी की, लेकिन भारत ने इसे निजी मामला बताते हुए दूरी बना ली है। बांग्लादेश के विदेश राज्य मंत्री शमा ओबैद इस्लाम ने सवाल उठाया कि एक भगोड़े नेता को भारत में राजनीतिक गतिविधियों की अनुमति कैसे दी जा रही है। उन्होंने कहा कि दोनों देश भविष्य को ध्यान में रखते हुए संबंध आगे बढ़ाना चाहते हैं और ऐसी गतिविधियों से प्रक्रिया प्रभावित नहीं होनी चाहिए। उन्होंने भारत से अपना रुख स्पष्ट करने की मांग की।

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि शेख हसीना का मीडिया के सामने आना बांग्लादेश की मौजूदा सरकार के लिए चुनौती बन सकता है। हसीना अपनी बात रखकर समर्थकों और आम जनता के बीच अपनी छवि मजबूत करने की कोशिश कर सकती हैं। इसी संभावना को लेकर ढाका में चिंता बढ़ी हुई है। बांग्लादेश की आपत्तियों पर भारत ने स्पष्ट किया है कि शेख हसीना का मीडिया कार्यक्रम सरकार से जुड़ा हुआ नहीं है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि यह एक निजी कार्यक्रम है और इसमें सरकार की कोई भूमिका नहीं है। मीडिया सीधे उनसे संपर्क कर रहा है और साक्षात्कार देना या नहीं देना उनका व्यक्तिगत फैसला है। भारत के अनुसार आने वाले समय में शेख हसीना अन्य माध्यमों से भी अपना पक्ष रख सकती हैं। यही बात बांग्लादेश सरकार के लिए चिंता का कारण बनी हुई है। बांग्लादेश सरकार कई बार शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग कर चुकी है। इसके लिए औपचारिक अनुरोध भी किया गया है, लेकिन भारत में अभी तक इस संबंध में कोई कानूनी प्रक्रिया शुरू नहीं हुई है। जानकारों के अनुसार भारत का मानना है कि यदि शेख हसीना खुद बांग्लादेश लौटने का फैसला करती हैं तो प्रत्यर्पण की प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होगी।

तीन सांसदों ने किया ऐलान कहा- हम नहीं हैं एनडीए के साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में मंगलवार को संसद भवन परिसर में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के सांसदों की साप्ताहिक बैठक आयोजित हुई। बैठक में केंद्रीय मंत्रियों और गठबंधन के अधिकांश सहयोगी दलों के सांसद शामिल हुए, लेकिन तृणमूल कांग्रेस से अलग होकर बने एनसीपीआई समूह के तीन सांसदों की लगातार दूसरी बार अनुपस्थिति चर्चा का विषय बन गई। इन सांसदों के बैठक में शामिल नहीं होने से उनके राजनीतिक रुख और राजग के साथ संबंधों को लेकर अटकलें तेज हो गई हैं। जंगीपुर से खलीलुर रहमान, मुर्शिदाबाद से अबू ताहेर खान और बहरामपुर से यूसुफ पठान इससे पहले 21 जुलाई को आयोजित पहली 'मंगल मिलन' बैठक में भी शामिल नहीं हुए थे। अबू ताहेर खान ने स्पष्ट किया कि वे न तो राजग का हिस्सा हैं और न ही भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे अपने संसदीय क्षेत्र के विकास से जुड़ी बैठकों में जरूर हिस्सा लेंगे, लेकिन ऐसे किसी कदम का समर्थन नहीं करेंगे जिसे वे मुस्लिम समुदाय के हितों के खिलाफ मानते हों। अन्य

सांसदों की भी यही राय बताई जा रही है।

सूत्रों के अनुसार, मुस्लिम बहुल क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले इन सांसदों ने अपने निर्वाचन क्षेत्रों में उठ रहे सवालों और भाजपा के साथ कथित नजदीकी को लेकर बन रही धारणा के कारण राजग की बैठकों से दूरी बनाए रखने का फैसला किया है। हालांकि, एनसीपीआई नेतृत्व ने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि पार्टी पूरी तरह एकजुट है। इन तीन सांसदों की अनुपस्थिति इसलिए भी महत्वपूर्ण मानी जा रही है क्योंकि लोकसभा में 20 सदस्यीय एनसीपीआई समूह को आधिकारिक मान्यता मिलने का मामला अभी लोकसभा अध्यक्ष के समक्ष लंबित है। दल-बदल विरोधी कानून के तहत इस समूह को संरक्षण तभी मिलेगा, जब उसे तृणमूल कांग्रेस के मूल लोकसभा सांसदों में से आवश्यक दो-तिहाई सदस्यों का समर्थन प्राप्त होगा।

बैठक में पहली बार एनसीपीआई के सदन के नेता सुदीप बंद्योपाध्याय भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि पार्टी के सभी सांसद एकजुट हैं और किसी प्रकार के मतभेद की बात सही नहीं है। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन भी मौजूद रहे। बैठक के दौरान सरकार की विभिन्न योजनाओं और उपलब्धियों पर प्रस्तुतिकरण दिया गया। केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने खेल क्षेत्र में सरकार की नीतियों और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भारत के बेहतर प्रदर्शन का उल्लेख किया। वहीं रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और युवाओं के लिए अवसरों पर भी विस्तृत जानकारी साझा की गई। भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने दावा किया कि वर्ष 2014 के बाद रोजगार के अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और सरकार ने युवाओं के लिए कई नई पहल की हैं। बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, विदेश मंत्री एस. जयशंकर सहित कई केंद्रीय मंत्री और राजग के सहयोगी दलों के नेता भी उपस्थित रहे।

विधानसभा में विपक्ष उठाने वाला था किसानों का मुद्दा इसलिए मुझे गिरफ्तार किया?

-डीएमके विधायक उदयनिधि स्टालिन ने रिहाई के बाद अब दी अपनी प्रतिक्रिया

चेन्नई (एजेंसी)। डीएमके विधायक और विपक्ष के नेता उदयनिधि स्टालिन को आखिरकार 90 मिनट की पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया। रिहाई के बाद अब स्टालिन ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने राज्य सरकार पर मुख्य मुद्दे से ध्यान भटकाने का आरोप भी लगाया। राज्य के विपक्ष के नेता और डीएमके नेता उदयनिधि ने कहा कि विरोध प्रदर्शन और मेरे भाषण पर किसान समुदाय से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। इससे किसानों के बीच समर्थन की लहर पैदा हुई है। जब सरकार को एहसास हुआ कि यह मुद्दा जोर पकड़ रहा है तो अगले दिन विधानसभा सत्र होने वाला था। इसमें विपक्ष इन मुद्दों को उठाने वाला था। सरकार ने ध्यान भटकाने और बहस को दबाने की कोशिश की है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक उदयनिधि ने कहा कि बुधवार सुबह उन्होंने मेरे भाषण का एक कट-एंड-पेस्ट वर्जन फैलाया और झूठा दावा किया कि मैंने ऐसी बातें कहीं जो मैंने कभी नहीं कही थीं। उन्होंने कहा कि इस एडिटेड वर्जन को नेशनल मीडिया आउटलेट्स के साथ भी शेयर किया गया। उन्हीं झूठे आरोपों के आधार पर पुलिस मुझे गिरफ्तार करने आई। मैंने पुलिस का पूरा सहयोग किया। बिना किसी विरोध के उनके साथ चला गया। गिरफ्तारी के समय भी मैंने पत्रकारों से कहा कि मैं इस पूरी घटना को बेतुका मानता हूं।

उन्होंने कहा कि वे मुझे उन बातों के लिए गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे थे, जो मैंने कभी की ही नहीं। वे मुझे चुप कराने और डराने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन मैं डरूंगा नहीं। उन्होंने कहा कि मैं कलैगनार एम करुणानिधि का पोता, एम के स्टालिन का बेटा और डीएमके का सदस्य हूं। हम ऐसी कार्रवाइयों से डरते नहीं हैं। मैं इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हूं। मैंने आज यही बात कही। बता दें पूरा मामला कावेरी जल विवाद को लेकर है। यहां तंजावुर में आयोजित एक सभा को संबोधित करते हुए उदयनिधि स्टालिन ने सीएम विजय पर निशाना साधा।

उन्होंने आरोप लगाया कि तमिलनाडु को कावेरी का एक बूंद पानी भी नहीं मिलता। वहीं सीएम इस पूरे मुद्दे पर बेपरवाह बने हुए हैं। इस दौरान सभा में मौजूद लोगों ने तृषा-तृषा के नारे लगाने शुरू कर दिए। इस पर उदयनिधि कुछ ऐसी टिप्पणी कर दी, जिसके बाद दोहरे मतलब निकाले जाने लगे। स्टालिन की इस टिप्पणी को दोहरे अर्थ वाली आपत्तिजनक करार दिया गया1 इसके बाद पूरा मामला राजनीतिक विवाद में बदल गया।

मंगलवार सुबह पुलिस ने उनको गिरफ्तार कर लिया था।

उत्तराखंड में मूसलाधार बारिश ने मचाई तबाही, सीएम ने किया अलर्ट

देहरादून में स्कूल और आंगनबाड़ी केंद्र बंद

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में बुधवार तड़के से जारी मूसलाधार बारिश ने पूरे प्रदेश में जनजीवन प्रभावित कर दिया है। लगातार बारिश के कारण कई जिलों में नदियां और बरसाती गधेरे उफान पर हैं, जबकि पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन का खतरा बढ़ गया है। प्रशासन ने संवेदनशील इलाकों में निगरानी बढ़ा दी है और लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। देहरादून में भारी बारिश की संभावना को देखते हुए कक्षा 1 से 12 तक के सभी सरकारी, निजी और गैर सरकारी स्कूलों के साथ आंगनबाड़ी केंद्रों में एक दिन का अवकाश घोषित किया गया है। जिला प्रशासन ने सुरक्षा कारणों से यह फैसला लिया है। अधिकारियों ने बताया कि लगातार बारिश के कारण किसी भी अप्रिय घटना की आशंका को देखते हुए बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी गई है।

मौसम विभाग ने देहरादून समेत कई इलाकों में भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना जताई है। इसके साथ ही आकाशीय बिजली चमकने और तेज बारिश के दौर को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। प्रशासन ने लोगों को नदी-नालों और बरसाती गधेरों के किनारे जाने से बचने तथा अनावश्यक यात्रा नहीं करने की सलाह दी है।

बारिश के चलते प्रदेश के कई मार्गों पर यातायात प्रभावित हुआ है। पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन की आशंका को देखते हुए प्रशासन और आपदा प्रबंधन टीमें लगातार स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। संवेदनशील स्थानों पर राहत और बचाव दलों को तैयार रखा गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भारी बारिश की स्थिति को देखते हुए सचिव आपदा प्रबंधन को हाई अलर्ट पर रहने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने एसडीआरएफ, एनडीआरएफ और सभी जिला प्रशासन को पूरी सतर्कता बरतने तथा किसी भी आपात स्थिति में तत्काल राहत और बचाव कार्य शुरू करने को कहा है। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों और पर्यटकों से मौसम की स्थिति को देखते हुए सावधानी बरतने की अपील की है। उन्होंने कहा कि लोग अनावश्यक यात्रा से बचें और बेहद जरूरी होने पर ही सफर करें। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि मौसम विभाग के अलर्ट और स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर आगे भी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। लोगों से अपील की गई है कि वे आधिकारिक सूचनाओं पर ध्यान दें और किसी भी आपात स्थिति में प्रशासन से संपर्क करें।

सीजेपी नेता सौरव दास को आपराधिक अवमानना मामले में कोर्ट ने भेजा नोटिस

-चार हफ्तों में मांगा जवाब, इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य मिटाने का भी है आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेता सौरव दास दिल्ली हाईकोर्ट की जज जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा से जुड़े आपराधिक अवमानना केस में घिरते नजर आ रहे हैं। उन्हें आपराधिक अवमानना के मामले में जवाब देने के लिए नोटिस जारी किया गया है, उनपर इस मामले से जुड़े इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य मिटाने का भी आरोप है। दिल्ली हाईकोर्ट में जस्टिस नवीन चावला और जस्टिस रविंदर दुडेजा की बेंच ने महिला जज जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा से जुड़े एक आपराधिक अवमानना के मामले में सौरव दास से चार हफ्तों में जवाब मांगा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मामले में आम आदमी पार्टी नेता गोपाल राय को भी नोटिस जारी किया है। सौरव दास और गोपाल राय पर आरोप है कि वो जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा को बदनाम करने की नीयत से सोशल मीडिया पर चली सोची-समझी मुहिम का हिस्सा थे। दिल्ली हाईकोर्ट ने इस मामले में दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल, आम आदमी पार्टी नेता मनीष सिसोदिया और सांसद संजय सिंह से भी उनके खिलाफ चल रहे आपराधिक अवमानना मामले में चार हफ्तों में जवाब दाखिल करने को कहा है। इन सब पर आरोप है कि इन्होंने जस्टिस शर्मा को बदनाम करने के लिए सोशल मीडिया पर कैंपेन चलाया।

इस मामले में केजरीवाल की ओर से वरिष्ठ वकील ने कोर्ट से गुहार लगाई कि उन्हें अभी तक वह सामग्री नहीं मिली है, जिसके आधार पर अवमाना मामले पर कार्रवाई शुरू हुई है। इसी तरह की दलीलें अन्य पार्टियों के वकीलों की ओर से भी दी गई। इसपर कोर्ट ने रजिस्ट्री से सभी को सामग्री उपलब्ध करवाने को कहते हुए, उनसे चार हफ्तों में जवाब देने को कहा है।

मदरसों में वंदे मातरम् विवाद पर कलकत्ता हाईकोर्ट ने लगाई फटकार, केंद्र सरकार से मांगा जवाब

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाईकोर्ट ने वंदे मातरम् गाने की अनिवार्यता से जुड़े महत्वपूर्ण मामले में केंद्र सरकार से विस्तृत हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया है। अदालत एक जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही है, जिसमें सवाल उठाया गया है कि क्या जाति, धर्म या पंथ से परे सभी लोगों के लिए वंदे मातरम् गाना अनिवार्य किया जा सकता है। मामले की अगली सुनवाई 16 सितंबर को निर्धारित की गई है। तब तक केंद्र सरकार को अपना पक्ष अदालत के समक्ष रखना होगा। फिलहाल हाई कोर्ट ने किसी भी प्रकार का अंतरिम आदेश जारी करने से इनकार किया है।

यह विवाद राज्य मदरसा विभाग की उस अधिसूचना के बाद सामने आया, जिसमें राज्य के मदरसों में भी सुबह की प्रार्थना के दौरान 'वंदे मातरम्' गाना अनिवार्य करने की बात कही गई थी। इस आदेश को चुनौती देते हुए एक सामाजिक कार्यकर्ता ने जनहित याचिका दायर की। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि वंदे मातरम् का गायन पूरी तरह स्वैच्छिक होना चाहिए और किसी भी नागरिक को इसे गाने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। याचिका में तर्क दिया गया कि ऐसी अनिवार्यता देश के धर्मनिरपेक्ष चरित्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांतों के विपरीत हो सकती है।

सुनवाई के दौरान अदालत ने याचिकाकर्ता से पूछा कि वह व्यक्तिगत रूप से इस आदेश से किस प्रकार प्रभावित हुए हैं और बिना केंद्र सरकार का पक्ष जाने अंतरिम राहत कैसे दी जा सकती है। याचिकाकर्ता की ओर से आग्रह किया गया कि अंतिम फैसला आने तक इस आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगाई जाए, लेकिन अदालत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया। हालांकि न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि यदि आदेश के पालन को लेकर किसी प्रकार की दंडात्मक कार्रवाई होती है तो संबंधित पक्ष अदालत का रुख कर सकता है। सुनवाई के दौरान न्यायालय ने यह भी टिप्पणी की कि देश के अनेक ईसाई शिक्षण संस्थानों में भी प्रार्थना के दौरान 'वंदे मातरम्' गाया जाता है। इस पर याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि यह मुद्दा सांप्रदायिक सद्भाव और संवैधानिक मूल्यों से जुड़ा है तथा किसी भी व्यक्ति पर राष्ट्रगीत गाने का दबाव नहीं बनाया जाना चाहिए।

केंद्र सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने दलील दी कि यह जनहित याचिका नहीं, बल्कि प्रचार पाने के उद्देश्य से दायर की गई याचिका है। उनका कहना था कि सरकार का उद्देश्य केवल 'वंदे मातरम्' को लोकप्रिय बनाना है, न कि किसी व्यक्ति को इसे गाने के लिए बाध्य करना। उन्होंने अदालत से विस्तृत हलफनामा दाखिल करने के लिए समय देने का अनुरोध किया। वहीं, सुनवाई के दौरान कुछ अन्य अधिवक्ताओं ने भी इस मुद्दे को धर्मनिरपेक्षता, संवैधानिक अधिकारों और संसद में पहले हो चुकी बहस से जुड़ा बताते हुए अपने-अपने तर्क अदालत के समक्ष रखे। अब सभी की नजर 16 सितंबर को होने वाली अगली सुनवाई पर है, जब केंद्र सरकार अपना आधिकारिक रुख स्पष्ट करेगी।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

ऑस्ट्रेलिया में पुरुषों का यौन उत्पीड़न, पूर्व रग्बी कोच आरोपी

केनबरा, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व राष्ट्रीय रग्बी कोच और रेडियो प्रस्तोता एलन जोन्स (85) के खिलाफ छह पुरुषों और लड़कों के यौन उत्पीड़न के आरोपों में सोमवार को मुकदमा शुरू हुआ। उन्होंने 2003 से 2020 के बीच लगे अनुचित व्यवहार और यौन स्पर्श के 22 आरोपों में खुद को निर्दोष बताया है। डाउनिंग सेंटर लोकल कोर्ट में जस्टिस ग्लेन वॉल्श के समक्ष यह सुनवाई चल रही है। शिकायतकर्ता ने बताया कि 14 साल की उम्र में जोन्स ने उसकी मदद की, लेकिन बाद में अनुचित व्यवहार शुरू कर दिया। वहीं, जोन्स की वकील गैब्रिएल बशीर ने आरोपों को प्रतिद्वंद्विता और मौकापरस्ती से प्रेरित मनगढ़ंत कहानी करार दिया।

ब्रॉड पीक हिमस्खलन में जान गंवाने वाले तीन और पर्वतारोहियों के शव बरामद, दो अब भी लापता

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के गिलगित-बाल्टिस्तान स्थित ब्रॉड पीक पर आए घातक हिमस्खलन में मारे गए तीन और पर्वतारोहियों के शव बरामद कर लिए गए हैं। 7,000 मीटर की ऊंचाई पर आए इस हिमस्खलन की चपेट में 10 सदस्यीय टीम आ गई थी। अल्पाइन क्लब ऑफ पाकिस्तान (एसीपी) के अनुसार, बरामद शवों में दिग्गज ब्रिटिश-नेपाली पर्वतारोही निर्मल पुरजा, नेपाल के पुर बहादुर गुरुंग, किली पेम्बा शेरपा, नीमा शेरपा, ग्यालु शेरपा, नधीरा अहमद अब्दुल्ला, ओमान के अल हार्थी, अमेरिका की मेलोरी गीस और चीन के वांग झोंग शामिल हैं। पाकिस्तान के सोहेल सखी और नवांग थिंडू शेरपा अब भी लापता हैं, जिनकी तलाश जारी है।

पीओके में नवाज शरीफ की पार्टी बना सकती है सरकार

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में चुनाव के दूसरे चरण में नवाज शरीफ की पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) ने जबरदस्त जीत हासिल की। पार्टी ने चुनाव वाली 18 में से 14 सीटें जीती हैं। 27 जुलाई को पहले चरण में नवाज की पार्टी ने 13 में से नौ सीटें जीतीं थी। पीओके के चुनाव आयुक्त गुलाम मुस्तफा मुगल ने सोमवार को बताया कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग (नवाज) ने अब तक 31 में से 23 सीटें जीती हैं जबकि पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) ने आठ सीटें हासिल की हैं। पीपीपी को दोनों चरणों में चार-चार सीटें मिली हैं।

अफगानिस्तान में कबीलों के बीच जमीन विवाद ने लिया हिंसक रूप, चौथे दिन जारी झड़प में कई घायल

काबुल, एजेंसी। दक्षिण-पूर्वी अफगानिस्तान में खोस्त और पक्तिया प्रांतों की सीमा पर स्थित एक पहाड़ी इलाके के मालिकाना हक को लेकर दो कबीलों के बीच हुई सशस्त्र झड़पें सोमवार को चौथे दिन भी जारी रहीं। अफगानिस्तान की प्रमुख समाचार एजेंसी खामा प्रेस के मुताबिक, यह झड़प खोस्त प्रांत के स्पाइरा जिले के बोरी खेल कबीले और पक्तिका प्रांत के गियान जिले के गियान खेल कबीले के लोगों के बीच शुरू हुई। स्थानीय रिपोर्टों का हवाला देते हुए एजेंसी ने बताया कि दोनों पक्षों ने संघर्ष के दौरान हल्के और भारी हथियारों का इस्तेमाल किया। इससे लंबे समय से चल रहे जमीन विवाद के और बढ़ने की चिंता पैदा हो गई है। स्थानीय लोगों के अनुसार, विवादित पहाड़ स्पाइरा और गियान जिलों के बीच स्थित है। यह इलाका जंगलों से घिरा हुआ है, जिनमें कीमती पाइन नट के पेड़ भी हैं। लोगों का कहना है कि इन्हीं संसाधनों की वजह से जमीन के मालिकाना हक, उपयोग और नियंत्रण को लेकर मतभेद और बढ़ गए हैं। कई दशकों से यह विवाद समय-समय पर सशस्त्र झड़पों का कारण बनता रहा है। स्पाइरा जिले के निवासी शाह मीर खान ने कहा कि पहले भी इस पहाड़ को लेकर हुई झड़पों में भारी जान-माल का नुकसान हुआ है। उनका दावा है कि इस विवाद से जुड़े पुराने संघर्षों में करीब 80 लोग मारे गए या घायल हुए थे। हालांकि, इस आंकड़े की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं हो सकी है। रेडियो हुर्रियत के अनुसार, हालात को और बिगड़ने से रोकने और दोनों पक्षों को अलग करने के लिए तालिबान बलों को इलाके में तैनात किया गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि इस पहाड़ को लेकर विवाद की जड़ दोनों समुदायों के ऐतिहासिक मालिकाना दावों में है। स्थानीय लोगों के मुताबिक, इस क्षेत्र को लेकर तनाव कई पीढ़ियों से चला आ रहा है। यह विवाद अक्सर प्राकृतिक संसाधनों, चराई की जमीन और जंगलों तक पहुंच से जुड़ा रहता है। रेडियो हुर्रियत का कहना है कि यह व्यापक विवाद लगभग 80 वर्षों से जारी है और इस दौरान दोनों पक्षों के 250 से अधिक लोग अपनी जान गंवा चुके हैं।

हर जमानत के बाद केस: क्यों नहीं हो रही चिन्मय कृष्ण दास की रिहाई? वकील बोले- 'सरकार चाहे तो मिल सकती है आजादी'

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश के प्रमुख हिंदू संत और सनातनी समुदाय के प्रमुख प्रवक्ता चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी की ओर से पैरवी कर रही कानूनी टीम ने उनकी रिहाई की प्रक्रिया में हो रही देरी पर गंभीर चिंता जताई है। वकीलों का कहना है कि जिस तरह से मामले को लगातार लंबा खींचा जा रहा है, उससे यह संकेत मिलता है कि सरकार की ओर से उनकी शीघ्र रिहाई को लेकर पर्याप्त राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं दिखाई जा रही है।

आखिर चिन्मय कृष्ण दास की गिरफ्तारी कब और क्यों हुई : चिन्मय कृष्ण दास ब्रह्मचारी को 25 नवंबर 2024 को ढाका के हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से गिरफ्तार किया गया था। उन पर देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया था। आरोप था कि उन्होंने एक रैली के दौरान राष्ट्रीय ध्वज का कथित रूप से अपमान किया। उनकी गिरफ्तारी के बाद पूरे बांग्लादेश में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए और 27 नवंबर 2024 को चटगांव कोर्ट परिसर के बाहर उनके समर्थकों और सुरक्षा बलों के बीच हिंसक झड़पें भी हुईं।

जमानत मिलने के बावजूद जेल से बाहर क्यों नहीं आ सके : हालांकि चिन्मय कृष्ण दास को मूल देशद्रोह मामले और उसके बाद दर्ज कुछ अन्य मामलों में जमानत मिल चुकी है, लेकिन नए मुकदमों की वजह से उनकी रिहाई अब भी नहीं हो सकी है। उनके खिलाफ लगातार नए मामले दर्ज होने से वे अब भी जेल में बंद हैं।

वकील ने सरकार पर क्या आरोप लगाए? सोमवार को एएनआई से बातचीत में चिन्मय कृष्ण दास के बचाव पक्ष के वकील अपूर्व कुमार भट्टाचार्य ने कहा कि राज्य तंत्र लगातार नए मुकदमे जोड़कर उनके मुवक्किल को जेल में रखने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि अगर सरकार वास्तव में चाहती, तो बहुत कुछ संभव हो सकता था, लेकिन इस मामले को जानबूझकर बेहद धीमी गति से आगे बढ़ाया जा रहा है।'

अब तक चिन्मय कृष्ण दास के खिलाफ कितने मामले दर्ज हुए हैं : अपूर्व कुमार भट्टाचार्य ने बताया कि चिन्मय कृष्ण दास के खिलाफ कुल छह मामले दर्ज किए गए हैं। पहला मामला 24 अक्टूबर 2024 को देशद्रोह का दर्ज हुआ था। इसके बाद 25 नवंबर 2024 को उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तारी के समय चिन्मय कृष्ण दास रंगपुर में एक जनसभा को संबोधित करने के बाद घरेलू उड़ान से चटगांव जा रहे थे। ढाका में ट्रांजिट के दौरान हजरत शाहजलाल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उन्हें हिरासत में लिया गया।

हर बार जमानत के बाद नए मुकदमे क्यों दर्ज किए गए : बचाव पक्ष के अनुसार, देशद्रोह मामले में 4 मई 2025 को हाईकोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी थी। लेकिन जमानत मिलने के महज दो दिन बाद उनके खिलाफ पांच नए मामले दर्ज कर दिए गए और इन्हीं मामलों में उन्हें फिर से गिरफ्तार दिखा दिया गया। वकील ने कहा कि यह घटनाक्रम इस बात की ओर इशारा करता है कि हर बार जमानत मिलने के बाद नए कानूनी मामले जोड़कर उनकी रिहाई टालने की कोशिश की गई।

इन नए मामलों में कौन-कौन से आरोप शामिल हैं : अपूर्व कुमार भट्टाचार्य के मुताबिक, पांच नए मामलों में अलीफ हत्याकांड, तोड़फोड़, विस्फोटक पदार्थ से जुड़ा मामला और सरकारी काम में बाधा डालने जैसे आरोप शामिल हैं। उन्होंने बताया कि इन सभी मामलों में जमानत के लिए हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया था। पहले हाईकोर्ट ने नियम (रूल) जारी किया और सुनवाई पूरी होने के बाद सोमवार को इनमें से दो मामलों में जमानत दे दी गई।

अब आगे कानूनी प्रक्रिया क्या होगी : फिलहाल चिन्मय कृष्ण दास के खिलाफ शेष मामलों की सुनवाई चटगांव के स्पीडी ट्रायल ट्रिब्यूनल में चल रही है। स्थानीय अदालत ने हाल ही में उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी थी। इस पर बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि हम बिना किसी देरी के इस मामले में जमानत के लिए हाईकोर्ट जाएंगे। हाईकोर्ट ने शेष दो मामलों में जमानत याचिका पर सुनवाई 16 अगस्त तक के लिए स्थगित कर दी है।

चिन्मय कृष्ण दास की क्या मांग रही है : चिन्मय कृष्ण दास लंबे समय से बांग्लादेश में धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की आवाज उठाते रहे हैं। उन्होंने अल्पसंख्यक सुरक्षा कानून बनाने, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार के मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट-ट्रैक ट्रिब्यूनल स्थापित करने और अल्पसंख्यक मामलों के लिए अलग मंत्रालय बनाने की लगातार मांग की है।

भारत पर नए टैरिफ लगाकर बुरे फंसे ट्रंप, अमेरिका के 25 राज्यों ने ठोक दिया मुकदमा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भारत पर नए टैरिफ लगाकर घर में ही घिर गए हैं। बंधुआ मजदूरी का हवाला देकर भारत सहित 60 देशों पर टैक्स लगाने के बाद अब अमेरिका के 25 राज्यों ने उन पर मुकदमा ठोक दिया है। बता दें कि इससे पहले अमेरिका ने अपने 60 ट्रेड पार्टनर्स पर 10 से 12.5 फीसदी तक अतिरिक्त टैरिफ लगाने की घोषणा की थी। इसे लेकर ही अमेरिका के 25 राज्यों के गठबंधन ने सोमवार को न्यूयॉर्क स्थित यूएस कोर्ट ऑफ इंटरनेशनल ट्रेड में मुकदमा दर्ज कराया है। अमेरिका के इन राज्यों का आरोप है कि ट्रंप प्रशासन टैरिफ थोपने के लिए कानून का गलत इस्तेमाल कर रहा है। उनके मुताबिक सुप्रीम कोर्ट टैरिफ को पहले ही निरस्त कर चुकी है। ऐसे में ट्रंप सरकार के पास इस नए टैरिफ लगाने का कोई आधार नहीं है।

'गैर-कानूनी तरीके से थोपा जा रहा टैरिफ' : राज्यों ने 1974 के ट्रेड एक्ट की धारा 301 के तहत लागू नए टैरिफ को लेकर सवाल उठाए हैं। राज्यों का तर्क है कि धारा 301 का इस्तेमाल किसी खास देश या कंपनी की नीतियों की जांच के लिए होता है, न कि सभी अमेरिकी आयात पर एक साथ टैरिफ लगाने के लिए। राज्यों ने यह आरोप भी लगाए हैं कि आमतौर पर 1 साल में पूरी होने वाली जांच प्रक्रिया को केवल 2-ढाई महीने में जल्दबाजी में पूरा दिखाकर बंधुआ मजदूरी रोकने का बहाना बनाया गया है। न्यूयॉर्क की अटॉर्नी जनरल लेटिशिया जेम्स और ओरेगन के अटॉर्नी जनरल डैन रेफील्ड ने कहा है कि ट्रंप प्रशासन सुप्रीम कोर्ट में हारने के बाद अब नया कानूनी बहाना बनाकर फिर से आम परिवारों और कारोबारों पर गैर-कानूनी तरीके से टैरिफ थोप रहा है। ट्रंप प्रशासन का दावा है कि ये टैरिफ उन देशों पर लगाए गए हैं जो देश बंधुआ मजदूरी से बने सामान के निर्यात को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहे हैं। हालांकि कड़े कदम उठाने के बाद देशों को छूट भी मिली थी। इनमें से एक भारत था। इस प्रस्ताव के तहत भारत पर पहले 12.5 फीसदी टैक्स लगाने की बात चल रही थी। हालांकि बाद में इसे घटाकर 10 फीसदी कर दिया गया। वहीं कुछ आवश्यक चीजों को टैरिफ के दायरे से बाहर रखा गया है। इनमें कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, खाद जैसी चीजें शामिल हैं। बता दें कि इससे पहले डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ को लेकर कई कानूनी लड़ाई हार चुके हैं। इस साल की शुरुआत में अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनॉमिक पावर्स एक्ट के तहत ट्रंप के टैरिफ लगाने के फैसले को असंवैधानिक बता दिया था। सुप्रीम कोर्ट के झटके के बाद ट्रंप ने 1974 के ट्रेड एक्ट की धारा 122 के तहत वैश्विक टैरिफ लगा दिए। हालांकि कोर्ट ने बाद में इसे भी गैर-कानूनी माना। अब ट्रंप प्रशासन ने धारा 301 का सहारा लिया है।

पूर्वी अफ्रीका में भूस्खलन से 14 मौतें, कई लापता; इथियोपिया में धार्मिक आयोजन के समय तबाही

अदीस अबाबा, एजेंसी। इथियोपिया के अमहारा क्षेत्र में सोमवार सुबह भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन में 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि सात लोग घायल हो गए। कई लोगों के अब भी मलबे में दबे होने की आशंका है और राहत-बचाव अभियान लगातार जारी है।

क्या धार्मिक अनुष्ठान के दौरान हुआ हादसा : यह हादसा त्सादकाने देब्रे मिटमाक सेंट मैरी मठ में हुआ, जहां सैकड़ों श्रद्धालु पवित्र जल से शुद्धिकरण के धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने पहुंचे थे। यह अनुष्ठान लंबे समय से बीमारियों से राहत और आध्यात्मिक उपचार की मान्यता से जुड़ा माना जाता है।

कई लोग अब भी मलबे में फंसे : डायोसीज के महाप्रबंधक मेगाबे हादिस नेका तिबेब अबाबू के अनुसार, हादसा सुबह करीब सात बजे हुआ। उन्होंने बताया कि मृतकों में से 11 का अंतिम संस्कार मठ परिसर में कर दिया गया है, जबकि अन्य के शव उनके गृह नगर भेजे गए हैं। कुछ शवों की पहचान करना भी मुश्किल हो रहा है। उन्होंने कहा कि कई लोगों के अब भी मलबे में दबे होने की आशंका है।

राहत-बचाव अभियान जारी : गंभीर रूप से घायल लोगों को नॉर्थ शेवा प्रशासनिक क्षेत्र की राजधानी देब्रे बिरहान के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्थानीय प्रशासन ने बताया कि आपदा प्रबंधन विभाग की विशेषज्ञ टीम मौके पर पहुंचकर राहत और बचाव अभियान में जुटी हुई है।

लगातार बढ़ रही हैं ऐसी प्राकृतिक आपदाएं : इथियोपिया में जून से सितंबर तक चलने वाले बारिश के मौसम के दौरान भूस्खलन और बाढ़ की घटनाएं आम हो गई हैं। जुलाई 2024 में दक्षिणी इथियोपिया में हुए भूस्खलन में कम से कम 257 लोगों की मौत हुई थी, जबकि इसी वर्ष की शुरुआत में गामो क्षेत्र में भी ऐसे ही हादसे में 100 से अधिक लोगों की जान गई थी। रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन और कमजोर बुनियादी ढांचे के कारण देश में ऐसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा लगातार बढ़ रहा है।

आतंकियों का काल बना 'अननोन', मारे 30 से ज्यादा लश्कर, पाकिस्तान में कौन कर रहा ऑपरेशन?

इस्लामाबाद, एजेंसी। लश्कर-ए-तैयबा के एक वरिष्ठ कमांडर ने पहली बार खुलेआम यह बात स्वीकार की है कि पिछले तीन से चार वर्षों में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के कई शहरों में संगठन के 30 से अधिक सदस्य मारे जा चुके हैं। उसने इन हत्याओं का ठीकरा भारत से जुड़े 'अननोन' पर फोड़ा है। लश्कर-ए-तैयबा और उसके सहयोगी संगठन जेकेयूएम के एक आतंकवादी ने पहली बार खुलेआम स्वीकार किया है कि पिछले तीन से चार सालों में पाकिस्तान और पीओके के कई प्रमुख शहरों में संगठन के 30 से ज्यादा सदस्य मारे गए हैं। उसने इन हत्याओं का ठीकरा भारत से जुड़े 'अज्ञात बंदूकधारियों' यानी 'अननोन गनमैन' पर फोड़ा है। यह बयान लश्कर के अंदरूनी हलकों में हड़कंप मचाने वाला माना जा रहा है,

क्योंकि अब तक संगठन इस तरह के नुकसान को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करने से बचता रहा है।

वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल : यह चौंकाने वाला खुलासा रिजवान हनीफ ने एक भाषण में किया है, जो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, रिजवान हनीफ लश्कर-ए-तैयबा के पीओके ग्रुप का सीनियर कमांडर और डिप्टी चीफ है। वह सीमा पार घुसपैठ के संचालन, नए आतंकियों की भर्ती और पीपुल्स एंटी-फासिस्ट फ्रंट जैसे प्रॉक्सी संगठनों के साथ समन्वय करने में सक्रिय भूमिका निभाता रहा है। उसके इस भाषण ने न सिर्फ लश्कर के अंदर, बल्कि पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियों के बीच भी चर्चा छेड़ दी है। अपने भाषण में रिजवान हनीफ ने दावा किया कि पिछले तीन-चार वर्षों के दौरान पेशावर, कराची, रावलपिंडी, रावलकोट और मुजफ्फराबाद समेत कई शहरों में लश्कर-ए-तैयबा के 30 से अधिक सदस्यों की हत्या कर दी गई। उसने कहा कि ये हमले किसी आम अपराधिक घटना की तरह नहीं, बल्कि संगठित तरीके से अंजाम दिए गए। हनीफ के अनुसार, इन हत्याओं के पीछे 'अज्ञात बंदूकधारी' सक्रिय थे, जिन्हें उसने भारतीय एजेंट बताया। हालांकि, उसने इस गंभीर आरोप के समर्थन में कोई ठोस सबूत, नाम या दस्तावेज पेश नहीं किया। हनीफ ने बार-बार यह दोहराया कि ये हत्याएं अचानक नहीं हुई, बल्कि लंबे समय से चली आ रही एक श्रृंखला का हिस्सा हैं। उसने संगठन के सदस्यों से सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि 'अननोन' अब लश्कर के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। उसके शब्दों में, पाकिस्तान और पीओके के अंदर सुरक्षित समझे जाने वाले इलाकों में भी लश्कर के कार्यकर्ता अब सुरक्षित नहीं रह गए हैं। भाषण के दौरान रिजवान हनीफ ने हिंदू धर्म के खिलाफ अपमानजनक और विषैली भाषा का भी इस्तेमाल किया।

पाकिस्तान से रिश्ता खत्म! बलूचिस्तान 11 अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाएगा

क्वेटा, एजेंसी। भारत को बांटने का शौक पालने वाला पाकिस्तान आज खुद टूट रहा है। पीओके में जोरदार विरोध प्रदर्शनों के बीच बलूचिस्तान ने अपने स्वतंत्रता दिवस की तारीख भी फिक्स कर दी है। बलूचिस्तान 11 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाएएगा। बलोच नेता इसके लिए दुनियाभर के देशों से समर्थन की मांग कर रहे हैं। रिपब्लिक ऑफ बलूचिस्तान कीतरफ से लोगों से अपील की गई है कि वे 11 अगस्त को बलोच एकता दिखाएं और स्वतंत्रता दिवस मनाएं।

पाकिस्तान के बाहर भी मनेगा जश्न : बलोचि लिबरेशन नेता मीर यार बलोच ने कहा कि 11 अगस्त को लोग स्वतंत्र बलूचिस्तान का झंडा अपने घरों मं फहराएं। इसके साथ ही आस-पास, बाजार, दुकानों और सार्वजनिक जगहों पर रिपब्लिक ऑफ बलूचिस्तान का झंडा लगाया जाए। बलोच नेता ने अपने

बायन में कहा कि हर साल अब 11 अगस्त को ही स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि विदेश में रहने वाले बलोच लोग भी इस दिन स्वतंत्रता दिवस का जश्न मनाएंगे। बलोच नेताओं ने कहा कि पाकिस्तान की नीतियों ने ना कवल इस क्षेत्र में बल्कि बाहर भी बहुत बुरा असर डाला है। चाहे कश्मीर के लिए जहर उगलना हो. बलूचिस्तान में सैन्य कार्रवाई हो, सोवियत-अफगान युद्ध में शामिल होना या फिर परमाणु टेस्टिंग। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की नीतियों की वजह से केवल खून बहता है।

दुनियाभर से समर्थन की मांग : रिपब्लिक ऑफ बलूचिस्तान ने अपने बयान में कहा है कि पाकिस्तान के साथ रहकर बलूचिस्तान कभी समृद्ध नहीं हो सकता। ऐसे में पूरी दुनिया को उनका समर्थन करना चाहिए जिससे कि इस क्षेत्र में शांति स्थापित की जा सके।

11 अगस्त को क्यों स्वतंत्रता दिवस : रिपब्लिक ऑफ बलूचिस्तान के मुताबिक पहली बार 11 अगस्त 1947 को ही बलूचिस्तान को स्वतंत्र घोषित किया गया था। अंतरराष्ट्रीय मीडिया ने इस घोषणा को तवज्जो भी दी थी।उस समय भारत और पाकिस्तान का बंटवारा भी नहीं हुआ था। दावा है कि ऑल इंडिया रेडियो और न्यूयॉर्क टाइम्स ने भी यह खबर चलाई थी। इसी आधार पर बलूचिस्तान 11 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाता रहा है और आगे भी मनाता रहेगा। भारत-पाक बंटवारे के बाद पाकिस्तान 14 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाने लगा।

दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश ने अपना नाम बदला:अब 'नौरू' नहीं 'नाओएरो' कहलाएगा

यारेन, एजेंसी। प्रशांत महासागर में बसे दुनिया के तीसरे सबसे छोटे देश नौरू ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अपना नाम बदल दिया है। अब यह देश आधिकारिक तौर पर 'रिपब्लिक ऑफ नाओएरो' कहलाएगा। संयुक्त राष्ट्र (ह) ने भी अपने रिकॉर्ड में नया नाम लागू कर दिया है। करीब 12 हजार आबादी वाले इस द्वीपीय देश का कहना है कि 'नाओएरो' उसका असली नाम है, जबकि 'नौरू' विदेशी लोगों की सुविधा के लिए प्रचलन में आया था। अब सरकार का मानना है कि समय आ गया है कि देश दुनिया के सामने अपनी मूल पहचान के साथ जाना जाए। नाओएरो इक्कीसवीं सदी में ऐसा आठवां देश बन गया है जिसने अपना नाम बदला है। इससे पहले तुर्किये ने 2022 में ऐसा किया था।

शादी में विवाद के बाद 10 साल तक गृहयुद्ध चला : 19वीं सदी के आखिर तक नाउरू एक छोटा-सा द्वीप था, जहां 12 स्थानीय जनजातियां रहती थीं। यहां कोई आधुनिक सरकार या सेना नहीं थी। लोगों का जीवन मछली पकड़ने, नारियल की खेती और समुद्र से मिलने वाले संसाधनों पर निर्भर था। 1870 के दशक में यूरोपीय व्यापारी नाउरू पहुंचने लगे। वे यहां नारियल और दूसरे सामान का व्यापार करते थे। बदले में उन्होंने स्थानीय लोगों को शराब और बंदूकें बेचना शुरू कर दिया। इससे द्वीप का सामाजिक संतुलन बिगड़ने लगा। 1878 में एक शादी समारोह के दौरान रीति-रिवाज को लेकर बहस हुई। बहस के बीच एक व्यक्ति ने पिस्तौल निकालकर गोली चला दी, जिससे एक कबीलाई प्रमुख के बेटे की मौत हो गई। नाउरू की पारंपरिक संस्कृति में ऐसी हत्या का बदला लेना सामाजिक जिम्मेदारी माना जाता था। यहीं से बदले का सिलसिला शुरू हुआ, जो धीरे-धीरे पूरे द्वीप के 12 कबीलों के बीच गृहयुद्ध में बदल गया। यह संघर्ष करीब 10 साल तक चला, जिसे नाउरू सिविल वॉर के नाम से जाना जाता है। इस दौरान बड़ी संख्या में लोग मारे गए, कई गांव उजड़ गए और लगभग हर परिवार किसी न किसी रूप में इस हिंसा से प्रभावित हुआ। हालात इतने खराब हो गए कि आखिरकार 1888 में जर्मनी ने हस्तक्षेप कर द्वीप पर नियंत्रण स्थापित किया, हथियार जब्त किए और इस लंबे खूनी संघर्ष को समाप्त कराया।

जर्मनी के बाद ऑस्ट्रेलिया ने नौरू पर कब्जा किया : 1914 में प्रथम विश्व युद्ध शुरू होते ही हालात बदल गए। ऑस्ट्रेलियाई सेना ने बिना ज्यादा प्रतिरोध के नाओएरो पर कब्जा कर लिया। युद्ध खत्म होने के बाद जर्मनी हार गया और उसे अपने कई विदेशी उपनिवेश छोड़ने पड़े। करीब पांच दशक तक विदेशी सरकार के कब्जे में रहने के बाद नाओएरो को 31 जनवरी 1968 को पूर्ण स्वतंत्रता मिली और यह एक संप्रभु गणराज्य बन गया।

माफी नहीं मांगते तो तबाह हो जाते 3 ठिकाने; यूक्रेन पर हमले की तैयारी में था ईरान, अब दी बड़ी चेतावनी

तेहरान, एजेंसी। कैस्पियन सागर में एक ईरानी कारोबारी जहाज पर हुए हालिया ड्रोन हमले ने तेहरान और कीव को आमने-सामने खड़ा कर दिया है। इस घटना के बाद ईरान ने दावा किया है कि वह यूक्रेन के भीतर तीन रणनीतिक ठिकानों पर जवाबी हमला करने की पूरी तैयारी कर चुका था, लेकिन ऐन वक्त पर यूक्रेनी सरकार द्वारा मांगी गई 'माफी' के बाद इस सैन्य ऑपरेशन को रोक दिया गया।

ईरान-यूक्रेन में क्या था विवाद : विवाद की शुरुआत 25 जुलाई को हुई, जब कैस्पियन सागर में ईरान के एक मालवाहक जहाज पर ड्रोन से हमला किया गया। इस हमले में एक व्यक्ति की जान चली गई थी। यूक्रेन का आधिकारिक तौर पर कहना है कि यह हमला जानबूझकर नहीं किया गया था और यह महज एक तकनीकी गलती थी। हालांकि, ईरान इस सफाई को स्वीकार करने के मूड में नहीं है। तेहरान का मानना है कि उसके पास ऐसे पुख्ता सबूत हैं जो बताते हैं कि यह कार्रवाई पूरी तरह नियोजित थी। यूक्रेन के तीन ठिकानों को निशाना बनाने था ईरान ईरान के सुप्रीम लीडर के वरिष्ठ सैन्य सलाहकार और IRGC के पूर्व कमांडर मेजर जनरल मोहसन रेजाई ने सरकारी टेलीविजन को दिए इंटरव्यू में खुलासा किया कि ईरानी सेना ने यूक्रेन के तीन ठिकानों को निशाना बनाने के लिए अपनी तैयारी पूरी कर ली थी। रेजाई के अनुसार, कीव की ओर से यह स्पष्टीकरण आने के बाद कि हमला एक चूक थी, जवाबी कार्रवाई को फिलहाल टाल दिया गया है। दूसरी ओर, ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बघाई ने सोमवार को कड़े शब्दों में चेतावनी दी कि तेहरान केवल बयानों से संतुष्ट नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ईरान अब यह देख रहा है कि यूक्रेन अपनी 'गलती' के दावे को साबित करने के लिए क्या ठोस कदम उठाता है।

बघाई ने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की के उन सार्वजनिक बयानों का भी जिक्र किया, जिनमें उन्होंने कैस्पियन सागर के पास रूसी सैन्य ठिकानों पर लंबी दूरी के हमलों की बात कही थी। ईरान इसे हमले के इरादे के सबूत के तौर पर देख रहा है।

आगे क्या होगा : ईरान के विदेश मंत्री सैय्यद अब्बास अराघची ने भी इस

मामले पर यूक्रेनी विदेश मंत्री आंद्री सिबिहा से बात की है। यूक्रेन ने भरोसा दिलाया है कि वह तनाव बढ़ाना नहीं चाहता, लेकिन ईरान ने साफ कर दिया है कि वह अपने नुकसान की भरपाई और भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए जरूरी कार्रवाई करेगा। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यूक्रेन ने इस मामले में ठोस राजनयिक समाधान नहीं निकाला, तो यह विवाद एक नए युद्ध के मोर्चे में तब्दील हो सकता है।

एपस्टीन का द्वीप खरीदने वाला ताकझांक से परेशान : वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी यौन अपराधी जेफ्री एपस्टीन के कुख्यात निजी द्वीप लिटिल सेंट जेम्स और ग्रेट सेंट जेम्स अब एक नई वजह से चर्चा में हैं। बिजनेस इनसाइडर की रिपोर्ट के अनुसार, द्वीप खरीदने वाले अरबपति निवेशक स्टीफन डेकऑफ के लिए ये प्रॉपर्टी अब सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स और कंटेंट बनाने वालों की वजह से बड़ी परेशानी बन गई है। डेकऑफ ने 2023 में दोनों द्वीप लगभग 6 करोड़ डॉलर (571 करोड़ रुपये) में खरीदे थे। उनको यहां एक लग्जरी रिसॉर्ट बनाना था, लेकिन चार साल बाद भी ऐसा न हो सका। इस बीच कई यूट्यूबर, इन्फ्लुएंसर व कंटेंट क्रिएटर बिना अनुमति द्वीप पर पहुंचकर वीडियो बना रहे व ताकझांक कर रहे हैं। उनका दावा है कि वे एपस्टीन से जुड़े रहस्यों की सच्चाई सामने लाना चाहते हैं। एपस्टीन पर नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण के गंभीर आरोप थे। 2019 में उसकी जेल में मौत हो गई थी, लेकिन उससे जुड़ी जानकारियों को लेकर आज भी लोगों में काफी दिलचस्पी है।

स्वामी,मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

सूरत भाजपा में 'शिस्त' का शोर, विधायक दफ्तर में ही भिड़े नेता?

TP कमेटी चेयरमैन और महिला पार्षद के पति में कहासुनी के बाद हाथापाई, मारपीट-फ्रैक्चर के दावों से मचा हड़कंप

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत भाजपा में अंदरूनी कलह अब खुलकर सामने आ गई है। उत्तर विधानसभा क्षेत्र के विधायक कांति बल के कार्यालय में TP कमेटी के चेयरमैन महेंद्र देसाई और महिला पार्षद जयश्री वोरा के पति मनहर वोरा के बीच पहले कहासुनी और बाद में हाथापाई होने की बात सामने आई है। मनहर वोरा ने मारपीट का आरोप लगाया है, जबकि महेंद्र देसाई ने इन आरोपों से इनकार किया है। इस घटना के बाद भाजपा के अनुशासन और विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो गए हैं।

सूरत भाजपा में अंदरूनी विवाद अब सार्वजनिक हो गया है। विधायक कार्यालय में TP कमेटी के चेयरमैन और महिला पार्षद के पति के बीच हुई घटना को लेकर अलग-अलग दावे सामने आ रहे हैं। कोई इसे हाथापाई बता रहा है तो कोई मारपीट और फ्रैक्चर तक के दावे कर रहा है।

अगर वास्तव में गंभीर मारपीट हुई थी, तो मेडिकल-लीगल प्रक्रिया के लिए सिविल अस्पताल में उपचार कराने के बजाय निजी अस्पताल में इलाज क्यों कराया गया, यह सवाल भी उठ रहा है। भाजपा के ही नेताओं द्वारा एक-दूसरे पर गंभीर आरोप लगाए जाने से पार्टी के अनुशासन और विश्वसनीयता पर सवालिया निशान लग गया है। अब इस मामले की सच्चाई सामने लाने की जिम्मेदारी पार्टी नेतृत्व पर आ गई है। हालांकि, शहर भाजपा अध्यक्ष फिलहाल विदेश में होने के कारण इस मामले में नेतृत्व कौन करेगा, इसे लेकर भी चर्चा शुरू हो गई है।

सूत्रों के अनुसार, सोमवार को विधायक कांति बल के कार्यालय में आयोजित बैठक के दौरान झक्क कमेटी के चेयरमैन महेंद्र देसाई और महिला पार्षद जयश्री वोरा के पति मनहर वोरा के बीच तीखी बहस हुई। इसके बाद माहौल गर्म हो गया और दोनों के बीच हाथापाई होने की बात सामने आई है।

महिला पार्षद और उनके पति का दावा है कि उनके साथ मारपीट की गई, जिसके कारण दोनों को चोटें आईं और उन्हें उपचार कराना पड़ा।

दूसरी ओर, TP कमेटी के चेयरमैन महेंद्र देसाई ने मारपीट के आरोपों से इनकार करते हुए कहा कि केवल कहासुनी और हाथापाई हुई थी। विधायक कांति बल ने भी हाथापाई होने की बात कही है।

घटना के समय मौजूद कुछ लोगों के अनुसार, TP कमेटी के चेयरमैन के अलावा एक अन्य पार्षद के साथ भी महिला पार्षद के पति की कहासुनी हुई थी। इस दौरान थप्पड़ मारे जाने की चर्चा भी सामने आई है। हालांकि, आरोपों का मुख्य केंद्र TP कमेटी के चेयरमैन होने के कारण घटना को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं।

विवाद के बाद महिला पार्षद और उनके पति ने झक्क कमेटी के चेयरमैन पर अवैध निर्माणों के मामले में भेदभाव और भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए हैं। भाजपा के ही निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा सार्वजनिक रूप से एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाए जाने से पार्टी की आंतरिक स्थिति चर्चा का विषय बन गई है।

पूरे मामले में सबसे ज्यादा चर्चा उपचार को लेकर हो रही है। यदि वास्तव में गंभीर मारपीट हुई थी, तो मेडिकल-लीगल प्रक्रिया के लिए सिविल अस्पताल में उपचार क्यों नहीं कराया गया और निजी अस्पताल में ही इलाज क्यों कराया गया, यह सवाल उठ रहा है।

इसी तरह फ्रैक्चर के दावे को लेकर भी अलग-अलग चर्चाएं सामने आ रही हैं। अब इस पूरे मामले की वास्तविकता क्या है और इसके लिए जिम्मेदारी किसकी है, इसे स्पष्ट करने के लिए पार्टी नेतृत्व और संभावित जांच पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं।

नकली घी बनाने वाली 'जय योगेश्वर डेयरी' पकड़ी गई

वनस्पति घी, सोयाबीन तेल और हल्दी मिलाकर 'शुद्ध देसी घी' के नाम पर बेचने का खेल, संचालक गिरफ्तार

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत शहर में खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वालों के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई तेज कर दी है। सूरत के वेड रोड स्थित एक डेयरी में वनस्पति घी और तेल में हल्दी मिलाकर नकली घी तैयार कर उसे शुद्ध घी के नाम पर बेचने के मामले का चौक बाजार पुलिस और जोन-3 एलसीबी स्क्वॉड ने पर्दाफाश किया है। महानगरपालिका की फूड टेस्टिंग रिपोर्ट में घी का नमूना असुरक्षित पाए जाने के बाद पुलिस ने डेयरी संचालक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है।

जोन-3 एलसीबी और चौक बाजार पुलिस की टीम इलाके में पेट्रोलिंग कर रही थी। इसी दौरान सूचना मिली कि वेड रोड स्थित केशव पार्क सोसायटी में 'जय योगेश्वर डेयरी' में नकली घी बनाने का काम चल रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस ने पंचों और सूरत महानगरपालिका के फूड सेफ्टी ऑफिसर की टीम को साथ लेकर डेयरी पर छापा मारा। जांच के दौरान दुकान के पीछे बने कमरे से स्टील के ड्रम, घी मथने की मशीन, वजन कांटा, सीलिंग मशीन, हल्दी समेत अन्य सामग्री बरामद हुई।

पुलिस पूछताछ में आरोपी ने कथित तौर पर मिलावट की पूरी प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। उसके अनुसार, वनस्पति घी और पामोलिन/सोयाबीन तेल को एक बर्तन में मिलाकर चूल्हे

पर गर्म किया जाता था।

घी जैसा पीला रंग देने के लिए इसमें 'रामदेव' हल्दी पाउडर मिलाया जाता था। इसके बाद तैयार मिश्रण को 15 किलो के टिन के डिब्बों में भरकर मशीन से सील किया जाता था।

इसके बाद इसे FSSAI लाइसेंस के नाम पर 'देशी शुद्ध घी' बताकर खुदरा और थोक में बेचा जाता था।

छापेमारी के दौरान महानगरपालिका के फूड सेफ्टी अधिकारियों ने घी के नमूने लिए और उन्हें जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा। रिपोर्ट में घी को मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और मिलावटी पाए जाने के बाद चौक बाजार पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई गई।

पुलिस ने मौके से 34.05 किलोग्राम नकली घी, कच्चा माल, मशीनरी और मोबाइल फोन समेत कुल 43,535 रुपये का सामान जब्त किया है।

इस मामले में पुलिस ने जय योगेश्वर डेयरी के संचालक राजेशकुमार जगदीशभाई पटेल (उम्र 42 वर्ष) को गिरफ्तार किया है। वह वेड रोड स्थित गोपीनाथ अपार्टमेंट में रहता है और मूल रूप से जसालपुर, तहसील चाणस्मा, जिला पाटन का रहने वाला है।

चौक बाजार पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मामले की आगे की जांच PSI वी.टी. डोडिया द्वारा की जा रही है।

सूरत में गैंगवॉर का खूनी खेल:सतीश मराठा का सिर फाड़ा, उंगलियां काटीं

महिला मित्र के सामने 4-5 हमलावरों ने धारदार हथियारों से किया हमला

खून से लथपथ हालत में मौके पर मौत, तलवार समेत हथियार बरामद

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत के भेस्तान इलाके में बहुचर्चित सूर्या मराठा हत्याकांड में बरी हुए और 'राहुल अपार्टमेंट गैंग' के मुख्य सदस्य सतीश सुरेशभाई धाड़गे उर्फ सतीश मराठा की 4 से 5 अज्ञात हमलावरों ने धारदार हथियारों से बेहद बेरहमी से हत्या कर दी। इस घटना से सूरत में हड़कंप मच गया है। हत्या के बाद घटनास्थल से सामने आए दृश्य बेहद भयावह और दिल दहला देने वाले थे।

हमलावरों ने सतीश मराठा पर इतनी बेरहमी से हमला किया कि उसके चेहरे और सीने पर धारदार हथियारों से कई वार किए गए। हमलावरों ने उसका सिर फाड़ दिया और दोनों हाथों की उंगलियां भी काट दीं।

भेस्तान के भीम आवास में हुई सनसनीखेज वारदात पुरानी दुश्मनी और गैंगवार के एंगल से क्राइम ब्रांच की जांच

गंभीर रूप से घायल और खून से लथपथ सतीश घटनास्थल पर ही तड़पता रहा और उसकी मौत हो गई। हमलावर मौके पर एक तलवार समेत दो धारदार हथियार छोड़कर फरार हो गए। एसीपी नीरव गोहिल के मुताबिक, मृतक सतीश मराठा भेस्तान में भीम आवास के पास अपनी कार में एक महिला

मित्र के साथ बैठा था। कार पार्क करने के करीब आधे घंटे बाद अचानक 4 से 5 हमलावर हथियारों के साथ वहां पहुंचे। उन्होंने सतीश को कार से बाहर खींच लिया और महिला मित्र के सामने ही उसकी हत्या कर दी।

महिला मित्र ने इसके बाद सतीश के परिजनों को फोन कर घटना की जानकारी दी। बाद में पुलिस को सूचना दी गई, जिसके बाद एंबुलेंस और पुलिस टीम मौके पर पहुंची।

4 से 5 संदिग्धों के नाम सामने आए, गैंगवार के एंगल से जांच पुलिस ने घटनास्थल से खून से सनी एक तलवार समेत दो धारदार हथियार बरामद किए हैं। प्रारंभिक जांच में 4 से 5 संदिग्धों के नाम सामने आए हैं, लेकिन वे हत्या में सीधे तौर पर शामिल थे या नहीं, इसकी बारीकी से जांच की जा रही है। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि हत्या पुरानी दुश्मनी, वर्चस्व की लड़ाई या गैंगवार के चलते की गई है। क्राइम ब्रांच और भेस्तान पुलिस ने संयुक्त रूप से जांच शुरू कर दी है।

पुलिस ने घटना के समय सतीश के साथ मौजूद महिला मित्र से पूछताछ शुरू कर दी है। पुलिस यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि हमलावर कौन थे, वे किस दिशा से आए थे और सतीश के साथ उनकी क्या बातचीत हुई थी।

इसके अलावा भेस्तान के भीम आवास और आसपास की सड़कों पर लगे CCTV कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है। इससे हमलावरों के आने और फरार होने के रास्ते का पता लगाने की कोशिश की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर इस बर्बर हत्याकांड के पीछे की मुख्य वजह का खुलासा किया जाएगा।

मृतक सतीश मराठा सूरत में सक्रिय 'राहुल अपार्टमेंट गैंग' का सदस्य था। राहुल के बाद गैंग में उसका नाम दूसरे नंबर पर बताया जाता था। सतीश पर कई गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप रहे थे। वर्ष 2024 में वह कोर्ट परिसर से इंस्टाग्राम रील/वीडियो बनाए जाने को लेकर भी काफी चर्चा में आया था। इस वीडियो में वह पुलिस के साथ कोर्ट परिसर में जाता हुआ दिखाई दे रहा था, जबकि बाहर उसके कुछ लोग खड़े नजर आ रहे थे।

गुजरात में एनालॉग पनीर, चीज़ और बटर पर प्रतिबंध

उत्पादन, बिक्री या परिवहन नहीं किया जा सकेगा उल्लंघन करने वालों पर 5 लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

गुजरात में एनालॉग पनीर, चीज़ और बटर के उत्पादन, बिक्री और परिवहन पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है। राज्य में अलग-अलग स्थानों से लिए गए सैंपलों की जांच में लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किए जाने की बात सामने आने के बाद सरकार ने तत्काल प्रभाव से यह प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है। गुजरात के अलावा महाराष्ट्र में भी आज से एनालॉग पनीर पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

राज्य के खाद्य एवं औषधि विभाग द्वारा अलग-अलग क्षेत्रों से लिए गए सैंपलों की प्रयोगशाला जांच के दौरान नियमों का उल्लंघन किए जाने की बात सामने आई। लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सरकार ने एनालॉग पनीर, चीज़ और बटर के उत्पादन, भंडारण और परिवहन पर प्रतिबंध लगा दिया है।

फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड्स एक्ट, 2006 की धारा-50 के अनुसार, यदि ग्राहक द्वारा मांगी गई गुणवत्ता के अनुरूप खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं कराई जाती है या नियमों का उल्लंघन करने वाली खाद्य सामग्री बेची जाती है और उससे ग्राहक को नुकसान पहुंचता है, तो 5 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

इसके अलावा, अधिनियम की अन्य धाराओं के तहत भी अलग-अलग प्रकार के उल्लंघनों के लिए जुर्माने और दंड का प्रावधान किया गया है।

LIC एजेंट ने NRI दंपती के साथ 1.94 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी की

फर्जी खाते खोलकर ठगी, पॉलिसियों पर बिना जानकारी के लोन लिया पोस्ट विभाग की योजनाओं में भी किया फर्जीवाड़ा

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

नवसारी शहर में करोड़ों रुपये के महालक्ष्मी इन्वेस्टमेंट घोटाले का पर्दाफाश हुआ है। LIC और इंडिया पोस्ट के एजेंट सुरेंद्रकुमार जगदीशलाल गांधी के खिलाफ 1.94 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी और विश्वासघात की गंभीर शिकायत दर्ज की गई है। यह शिकायत अमेरिका में रहने वाले एक NRI दंपती ने नवसारी टाउन पुलिस स्टेशन में दर्ज कराई है।

शिकायतकर्ता धर्मेशकुमार उर्फ धनसुखलाल वलसाडिया, मूल रूप से नवसारी के जूनाथाणा के रहने वाले हैं और पिछले 30 वर्षों से अपने परिवार के साथ अमेरिका में रह रहे हैं। वर्ष 1996 से वे अपनी पैतृक संपत्तियों की बिक्री से प्राप्त रकम और बचत के पैसे सुरेंद्र गांधी के माध्यम से LIC तथा पोस्ट ऑफिस की विभिन्न योजनाओं में निवेश करते थे। आरोपी ने दंपती का विश्वास जीतकर उनकी मूल पॉलिसियां और पासबुक अपने पास रख ली थीं।

वर्ष 2026 में धर्मेशकुमार ने नवसारी में घर खरीदने के लिए अपनी निवेश राशि निकालने का फैसला किया। जुलाई 2026 में जब उन्होंने सुरेंद्र गांधी से संपर्क करने का प्रयास किया तो उसका फोन बंद मिला। उसकी ऑफिस और घर दोनों जगह बंद मिले। इससे दंपती को संदेह हुआ और उन्होंने मामले की जांच शुरू की।

जांच के दौरान LIC के मुख्य कार्यालय से चौंकाने वाली जानकारी सामने आई। दंपती के नाम पर चल रही कुल 56 LIC पॉलिसियों में से 53 पॉलिसियों पर उनकी जानकारी के बिना लोन लिया गया था और बाद में इन पॉलिसियों को सरेंडर कर दिया गया।

इसके लिए आरोपी ने पॉलिसीधारकों के फर्जी हस्ताक्षर वाले स्टांप पेपर पर शपथपत्र तैयार किए थे। साथ ही, मूल पॉलिसी खो जाने के संबंध में फर्जी आवेदन भी तैयार किए गए थे।

निवेश की रकम अपने कब्जे में लेने के लिए आरोपी सुरेंद्र गांधी ने सूरत पीपल्स को-ऑपरेटिव बैंक की नवसारी शाखा और बैंक ऑफ बड़ौदा की दूधिया तालाब शाखा में दंपती के फर्जी दस्तावेजों और जाली हस्ताक्षरों के जरिए बैंक खाते खुलवाए।

इसके अलावा, उसने धर्मेशकुमार के बैंक ऑफ महाराष्ट्र के खाते में अपना नाम दूसरे खाताधारक के रूप में भी जुड़वा लिया।

LIC पॉलिसियों के माध्यम से कुल 1,30,01,124 रुपये की राशि हासिल कर ली गई। इसके अलावा पोस्ट विभाग की विभिन्न योजनाओं में भी 64.50 लाख रुपये की धोखाधड़ी की गई।